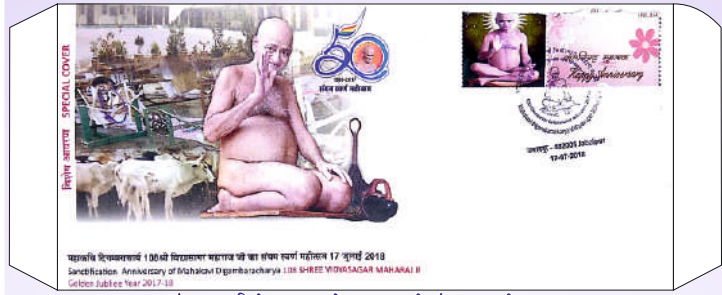


इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जवाहरगंज जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रुपये में जारी किया गया।



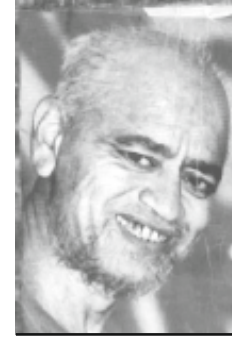
संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र	तिथिकर कल्याणक
		जून 2022		
16	गुरुवार	द्वितीया/तृतीया	पूर्वाषाढ़	16 जून: भगवान आदिनाथ जी गर्भ कल्याणक
17	शुक्रवार	चतुर्थी	उत्तराषाढ़	19 जून: भगवान वासुपूज्य जी गर्भ कल्याणक
18	शनिवार	पंचमी	श्रवण	21 जून: भगवान विमलनाथ जी मोक्ष कल्याणक
19	रविवार	षष्ठी	धनिष्ठा	23 जून: भगवान नमिनाथ जी जन्म तप कल्याणक
20	सोमवार	सप्तमी	पूर्वाभाद्रपद	05 जुलाई: भगवान महावीर स्वामी जी गर्भ कल्याणक
21	मंगलवार	अष्टमी	उत्तराभाद्रपद	06 जुलाई: भगवान नमिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
22	बुधवार	नवमी	रेवती दि./रा.	15 जुलाई: भगवान मुनिसुव्रतनाथ जी गर्भ कल्याणक
23	गुरुवार	दशमी	रेवती	
24	शुक्रवार	एकादशी	अश्विनी	
25	शनिवार	द्वादशी	भरणी	27 जून: रोहिणी व्रत
26	रविवार	त्रयोदशी	कृत्तिका	04 जुलाई: ऋषि पंचमी
27	सोमवार	चतुर्दशी	रोहिणी	06 जुलाई: गणोकार पैंतीसी व्रत प्रारंभ
28	मंगलवार	अमावस	मृगशिरा	06 जुलाई: अष्टाहिका व्रत प्रारंभ
29	बुधवार	अमावस	आर्द्रा	10 जुलाई: रवि व्रत प्रारंभ
30	गुरुवार	प्रतिपदा	पुनर्वसु	12 जुलाई: चातुर्मास कलश स्थापना, चातुर्मास प्रारंभ
		जुलाई 2022		12 जुलाई: कर्म निर्जरा व्रत
1	शुक्रवार	द्वितीया	पुष्य	13 जुलाई: अष्टाहिका व्रत पूर्ण
2	शनिवार	तृतीया	आश्लेषा दि/रा	14 जुलाई: वीर शासन जयंती
3	रविवार	चतुर्थी	आश्लेषा	15 जुलाई: रत्नावली, एकावली, द्विकावली
4	सोमवार	पंचमी	मघा	
5	मंगलवार	षष्ठी	पूर्वाफाल्गुनी	17 जून: 09/56 बजे से 18-07/39 बजे तक।
6	बुधवार	सप्तमी	उत्राफाल्गुनी	21 जून: 05/43 बजे से 29/03 बजे तक।
7	गुरुवार	अष्टमी	हस्त	23 जून: 05/43 बजे से 24-08/04 बजे तक।
8	शुक्रवार	नवमी	चित्रा	27 जून: 05/44 बजे से 29/44 बजे तक।
9	शनिवार	दशमी	स्वाती	30 जून: 05/45 बजे से 29/45 बजे तक।
10	रविवार	एकादशी	विशाखा	06 जुलाई: 11/44 बजे से 29/47 बजे तक।
11	सोमवार	द्वादशी/त्रयोदशी	अनुराधा ज्येष्ठा	09 जुलाई: 05/48 बजे से 11/25 बजे तक।
12	मंगलवार	चतुर्दशी	मूल	11 जुलाई: 05/49 बजे से 07/50 बजे तक।
13	बुधवार	पूर्णिमा	पूर्वाषाढ़	15 जुलाई: 05/51 बजे से 17/31 बजे तक।
14	गुरुवार	प्रतिपदा	उत्तराषाढ़	
15	शुक्रवार	द्वितीया	श्रवण	

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: जून: 16, 23 जुलाई-1, 6, 7, 10, 14
मशीनरी प्रारंभ: जून: 18, 23, 30 जुलाई-1, 7
वाहन खरीदने: जून: 24, 30 जुलाई-1, 7, 9



संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 279 • जून 2022

• वीर नि.संवत् 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

- मंगलाचरण की आवश्यकता और महत्व 08
- आचार्य श्री विद्यासागर जी का वैराग्य पथ 10
- कालमेघ (कडु चिरायता) 15
- भक्ति और तपश्चरण से पहुँचे बड़े बाबा बड़े मंदिर में 17
- सर्वोदयी संत आचार्य विद्यासागर 20
- बौद्ध धर्म और अहिंसा: एक विश्लेषण 26
- औषधीय उपयोग- शतावरी 33
- निश्चय प्रत्याख्यान और नियमसार 44
- नवपदार्थ और आचार्य त्रय का चिंतन 50
- वरिष्ठ नागरिक: रिटायरमेंट के बाद भी अपने व्यक्तित्व में निखार लायें 52
- श्रुत पंचमी- श्रुत अराधना पर्व 55
- बावची 58
- महिलाओं का पी.सी.ओ.डी रोग व नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

- हम धर्म नहीं छोड़ेंगे 62

कविता

- जिंदगी जल रही हैं 09
- विद्यागुरु की माया 14
- धर्म चाहिये 19
- कुहासा 45
- माँ 51
- अपनी व्यथा 53
- गुरुवर विद्यासागर वंदना 57

कहानी

- नकली बेटा 46

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 16
चलो देखें यात्रा : 25 • आगम दर्शन : 31 • माथा पच्ची : 34 • पुराण प्रेरणा : 35 • कैरियर गाइड : 36
दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये : 42 • दिशा बोध : 43
वरिष्ठ नागरिक : 52 • हमारे गौरव : 54 • हास्य तरंग-शरीर विकास के कुछ खेल : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री
विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर-89895 05108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़-94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर-9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर-95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस-9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली-9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली-94128 89449
ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर-8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर-97938 21108
अभिनदन सांधेलीय, पाटन-9425863244
डॉ. पंकज जैन, भोपाल-9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, सादूमल-9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर - 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर-9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

✽ आंतरिक सज्जा ✽
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

- लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए
- कथा-साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
- पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगंबर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर-10 से प्रकाशित एवं मादी प्रिंटर्स (76, बी-1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की
स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर
सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क
-आजीवन : 2100/- (15 वर्ष)
-संरक्षक : 5001/- (सदैव)
-परम सम्माननीय : 11000/- (सदैव)
-परम संरक्षक : 15001/- (सदैव)

अपने शहर के
• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया -संस्कार सागर
खाता क्र. 63000704338 (IFSC: SBIN0030463)
• भारतीय स्टेट बैंक -ब्र. जिनेश मलैया
खाता क्र. 30682289751 (IFSC: SBIN0011763)
• आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC: ICIC0000041)



में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर
हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

कार्यालय -संस्कार सागर
श्री दिगंबर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर -10
फोन नं. : 0731-2571851, 4003506
मो. : 89895-05108, 6232967108
website : www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

• सम्पादक महोदय, संसदीय
राजभाषा की अध्यक्षता करते
हुये केन्द्रीय मंत्री अमित शाह ने
आग्रह किया कि अंग्रेजी के
विकल्प के रूप में हिन्दी को
अपनाया जाये किन्तु इस सच्चे मन से किये हुये
आग्रह को कुछ राजनीतिक स्वार्थी लोगों ने
विरोध करना प्रारंभ कर दिया और अपने दुराग्रह
का परिचय दिया जबकि अमित शाह ने यह भी
कहा था कि भारतीय भाषाओं की कीमत पर
हिन्दी का विकास और विस्तार नहीं होगा
अपितु अंग्रेजी के अधिपत्य से निपटने के लिये
भारतीय भाषाओं का सांझा करते हुये देव
नागरी लिपि के आधार पर संयुक्त मोर्चे का
निर्माण करना होगा तथा हमें अपनी
संकीर्णताओं को छोड़कर एक नया मंत्र बनाना
होगा जिससे हिन्दी भाषा की श्रेष्ठता अंतराष्ट्रीय
स्तर पर अपनी पहचान बनायें।

पाती
पाठकों
की....

और पाकिस्तान के संबंध अच्छे
बनाने की बात कहना पेंचीदा ही
लगता है। इसे सुलझाने के लिये
खुले मन और ईमानदारी से दोनों
देशों को चिंतन करना होगा तभी
समस्या का हल होगा।

राजेश जैन, अहमदाबाद

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर पत्रिका ने
24वें वर्ष के अपना पहला गरिमामय कदम रखा
है मेरे विचार से संस्कार सागर रजत वर्ष भी धूम
धाम से मनाया जायेगा हम जैसे पाठकों को नई
सौगात मिलेगी। मालूम नहीं सम्पादक महोदय
के मन में संस्कार सागर के रजत वर्ष मनाने की
क्या योजना है। परन्तु मेरा तो यह सुझाव है कि
एक विशेषांक प्रकाशित किया जाये जो संपूर्ण
जैन पत्रकारिता के इतिहास से अपने प्रिय
पाठकों से परिचय करा देगा तथा ऐश्वर्यवंत जैन
पत्रकारों का गौरव प्रस्तुत किया जा सकता है।

आस्था जैन, जबलपुर

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों
पाकिस्तान में एक बड़ी हलचल हुई इमरान खान
सत्ता से बेदखल हुये और शाहबाज शरीफ
पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने पर यह प्रश्न पैदा
हुआ कि यह नई हुकूमत कितने दिन टिकेगी
क्योंकि सहयोगी पार्टियों के नेताओं के नखरे
उठाने में शाहबाज शरीफ कैसे सफल होंगे
क्योंकि वे भारत से अच्छे संबंध बनाने के
पक्षधर हैं पाकिस्तान में वही राज्य करता है
अथवा उसकी ही सरकार चली है जो भारत का
विरोध करता है। अपने एक बयान में शाहबाज
शरीफ ने कहा कि हम भारत से अच्छे संबंध
बनाने के पक्ष में हैं परन्तु कश्मीर की कीमत पर
नहीं। पर यह भी सच है कि भारत कश्मीर को
अपना अभिन्न अंग सन् 1947 के पहले से ही
घोषित करता आ रहा है। ऐसी स्थिति में भारत

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के कई के
अंक में हीरामणी शीर्षक से कहानी को पढ़ा मेरा
मन गौरव से भर गया चिंतामणी के त्याग की
भावना पढ़कर ऐसा लगा कि एक धर्म पत्नी ने
जिनवाणी की रक्षा के लिये भी महान योगदान
दिया है जबकि मैं यह जानता हूँ कि महिलाओं
को गहनों से बहुत प्यार होता है वे अपने गहनों के
पीछे कुछ भी करने को तैयार हो जाती हैं। परन्तु
धन्य हैं वे चिंतामणी जिन्होंने धवला जैसे महान
ग्रंथ के संपादन में अपना उल्लेखनीय सहयोग
दिया और अपने पति हीरालाल सिद्धांत शास्त्री
की सरस्वती आराधना के पथ में सहगामिनी बनी।
कहानी मर्म स्पर्शी और त्याग का उल्लेख करने
वाली है भाषा शैली सरल और सुबोध है ऐसी
कहानी नारी समाज के सतत प्रेरणाशील बनेगी।

कश्मीरा जैन, मुम्बई

भक्ति तरंग सोऽहं सोऽहं बोल



प्राणी ! सोऽहं सोऽहं ध्याय हो ॥ टेक ॥

वाती दीप परस दीपक है,

बूंद जु उदधि कहाय हो ।

तैरने परमात्म ध्यावै सो,

परमात्म है जाय हो प्राणी ॥1॥

और सकल कारज है योथो,

तोहि महा दुखदाय हो ।

द्यानत यही ध्यानहित कीजे,

दूहे त्रिभुवनराय हो ॥ प्राणी ॥

हे प्राणी ! आत्मा का जो सिद्ध / शुद्ध रूप है मैं वह सिद्ध / शुद्धरूप हूँ, वह मैं हूँ- इसी तथ्य का निरन्तर ध्यान करो। दीपक के स्पर्श से / संसर्ग में बाती भी दीपक कहलाने लगती है। जैसे एक-एक बूंद समुद्र की घटक है, वह एक बूंद भी समुद्र का एक अंश है-समुद्र है। समुद्र के साथ रहने से पानी की एक बूंद भी समुद्र कहलाती है। वैसे ही परमात्मा का ध्यान करने वाले प्राणी ध्यान करते-करते परमात्म स्वरूप हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त सभी कार्य निरर्थक हैं, दुःखों के देने वाले हैं दुखों का सृजन करने वाले हैं। द्यानतराय कहते हैं कि तुम अपने आत्म स्वरूप का ध्यान करो, यही हितकारी है, इससे ही तुम स्वयं तीन लोक के स्वामी हो जाओगे।



श्रमण संस्कृति रक्षक शास्त्र भंडार/पुस्तकालय

श्रमण संस्कृति वैदिक संस्कृति की समानान्तर धारा है श्रमण संस्कृति का प्रवाह जन जीवन को प्रेम करुणा सर्वमैत्री की सद्भावना से जोड़कर ज्ञान वैराग्य का महान अवदान प्रदान करता रहा है। अध्यात्म, दर्शन, समाज, विज्ञान, धर्म-सिद्धांत के बहुमूल्य आदर्श श्रमण संस्कृति में समाहित हैं। ज्ञान, ध्यान, तप साधन के सूत्र श्रमण संस्कृति ने विश्व को प्रदान किये हैं।

मानवीय व्यवहार का आदर्शरूप भी श्रमण संस्कृति में दृष्टि गोचर होता है।

किसी भी संस्कृति का साहित्य प्राण वायु सिद्ध होता है धर्म दर्शन समाज विज्ञान का प्रमाण साहित्य से ही प्राप्त होता है अतः शताधिक जैन आचार्यों ने सहस्रों ग्रंथों का सृजन करके श्रमण संस्कृति पर महान उपकार किया है। पुराण काव्य, सिद्धांत, आचार, पदार्थ विज्ञान, कर्म इतिहास, न्याय-दर्शन, धर्म संहिता जैसे विषयों पर सृजित साहित्य आज भी कई शास्त्र भंडारों में उपलब्ध है। परन्तु इन शास्त्र भंडारों के प्रति समाज की उदासीनता देखी जा रही है।

शास्त्र नहीं तो संस्कृति नहीं और संस्कृति के अभाव में तो धर्म निष्प्राण देह के समान ही होता है। विचारणीय यह है कि जितना हमारा उत्साह मंदिर बनने, मूर्ति स्थापित कराने में है उतना उत्साह शास्त्र विराजमान करने में क्यों नहीं है?

शास्त्र पढ़ता कौन है, इस कुतर्क का जबाब बहुत दिया जा सकता है कि शोध प्रवृत्ति और स्वाध्याय परंपरा तथा आत्मबोध यथार्थ धर्म का ज्ञान बिना शास्त्र के संभव नहीं हो सकता है। धर्म देशना, धर्म प्रभावना भी शास्त्र के बिना कैसे संभव होगी देवशास्त्र गुरु की उपासना करने वाले अथवा देव शास्त्र गुरु को समान दर्जा देने वाले शास्त्र की उपेक्षा करके जैन होने का दावा कैसे कर सकते हैं?

आज भी श्रमण संस्कृति की रक्षा का संकल्प लेने वालों को शास्त्र भंडार और पुस्तकालय स्थापित करने का अभियान चलाना ही होगा।

मंगलाचरण की आवश्यकता और महत्व

✽ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✽

मंगलाचरण करने से जहां नास्तिकता का परिहार होता है। पुण्य की प्राप्ति होती है शिष्टाचार का पालन होता है और निर्विघ्न शास्त्र की समाप्ति होती है वहां पर मंगलाचरण की आवश्यकता इसलिये होती है क्योंकि जहां देवता नमस्कार आदि कार्य होते हैं वहाँ यदि विघ्न की संभावना भी होती है तो मंगलाचरण करने से दूर होते हैं किन्तु इस कथन पर भी आचार्य जयसेन जी ने स्पष्ट व्याख्या की है और उन्होंने यह शंका उठाई कि शास्त्र स्वयं मंगलरूप है कि नहीं यदि शास्त्र स्वयं मंगलरूप है तो मंगलाचरण की आवश्यकता क्या रह जाती है और यदि शास्त्र अमंगल रूप है तो ऐसे शास्त्र से क्या प्रयोजन। इस प्रश्न का उत्तर देते हुये शास्त्र से क्या प्रयोजन। इस प्रश्न का उत्तर देते हुये आचार्य कहते हैं कि भक्ति के लिये मंगल का भी मंगल किया जाता है कहा भी है दीपक से सूरज की जल से समुद्र की और वचनों से सरस्वती की पूजन की जाती है इसी प्रकार से मंगल से मंगल का भी मंगल किया जाता है अर्थात् मंगलरूप शास्त्र का भी मंगलाचरण किया जाता है। इसके अतिरिक्त इष्ट देवता को नमस्कार करने से प्रतिउपकार किया जाता है। अर्थात् देवताकृत उपकार को स्वीकार किया जाता है।-

श्रेयोमार्गस्य संसिद्धिः प्रसादात्परमेष्ठिनः।

इत्याहुस्तदुणस्तोत्रं शास्त्रादौ मुनिपुंगवाः॥

अभिमतफलसिद्धेरभ्युपायः सुबोधः।

स च भवति सुशास्त्रान्तपस्य चोत्पत्तिराप्तात्॥

इति भवति स पूज्यस्तत्प्रसादात्प्रबुद्धिः।

न हि कृतमुपकारं साध्वो विस्मरन्ति॥

परमेष्ठी की कृपा से मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है इसीलिये शास्त्र के प्रारंभ में उन परमेष्ठियों का स्तवन करते हैं।

इच्छित फल की सिद्धि का उपाय सम्यग्ज्ञान है वह सम्यग्ज्ञान सच्चे शास्त्रों से प्राप्त होता है। शास्त्रों की उत्पत्ति आप्त से होती है इसीलिये उनके प्रसाद से ही ज्ञान की प्राप्ति हुई इसीलिये वे पूज्य हैं क्योंकि किये हुये उपकार को साधुजन भूलते नहीं हैं।

मंगलाचरण का महत्व :- मंगलाचरण में निर्विघ्नता का घनिष्ठ संबंध है मंगलाचरण से निर्विघ्नता आती है क्योंकि मंगलाचरण करने से अथवा जिनेन्द्र को नमस्कार करने से पुण्य की प्राप्ति होती है और पुण्य से निर्विघ्नता की प्राप्ति होती है इस प्रकार से अनेक न्याय के ग्रंथों में आचार्यों ने अपने तर्क से सिद्ध किया है।

मंगलाचरण के छह अधिकार:- आचार्य जयसेन जी ने पंचास्तिकाय ग्रंथ की अपनी टीका में छह अधिकारों का वर्णन स्पष्ट किया है। वे छह अधिकार इस प्रकार हैं- 1. मंगल 2.

मंगलकर्त्ता 3. मंगल करने योग्य 4. मंगल का उपाय 5. मंगल के भेद 6 मंगल का फल।

इन अधिकारों को बताने के लिये एक गाथा भी उद्धृत की है वह इस प्रकार है-

मंगलणिमित्तहेऊ परिमाणा णाम तह य कत्तारं।

वागरिय छप्पि पच्छा वक्खवाणउ सत्थमाइरिओ॥

आचार्य जयसेन जी ने मंगल भेदों को दो रूप में विभाजित किया है- 1. निबद्ध मंगल

2. अनिबद्ध मंगल।

निबद्ध मंगल- जो ग्रंथों के आदि मध्य अंत में इष्ट देवता को नमस्कार करने के लिये श्लोक आदि की रचना की जाती है उसे निबद्ध मंगल कहते हैं और जो लिपिबद्ध नहीं किया जाता है तथा शास्त्र लिखने या वांचने के पूर्व मन, वचन, काय से जो नमस्कार किया जाता है उसे अनिबद्ध मंगल कहते हैं। तथा मुख्य और अमुख्य के भेद से भी आचार्य श्री ने दो भेद मंगल के किये हैं मुख्य मंगल शास्त्र के प्रारंभ मध्य और अंत में जो जिनेन्द्र देव का गुण स्तवन है वह मुख्य मंगल है। और पीली सरसों, पूर्ण कलश, वन्दन माला, छत्र, श्वेत वर्ण, दर्पण, बाल कन्या अमुख्य मंगल है। इस प्रकार आचार्य जयसेन जी ने मंगल की विस्तृत व्याख्या करके मंगल के हर पक्ष को प्रस्तुत किया है।

कविता

जिंदगी जल रही है

जिंदगी जल रही है

रास्ता तलाश रही है।

राजनैतिक स्वार्थ में

करुणा का बास नहीं है।

रूस यूक्रेन का युद्ध, रो रहा है देखकर बुद्ध

तेल के व्यापार ने बनाया भाई को भाई के विरुद्ध

गंगा सी प्रवाहित भारत में करुणा

हरकाल में दया रहती है तरुणा

भले ही मिट जाये सम्पदा सारी

परन्तु भारत करुणा का रहता अनुसरणा

दमन और शोषण ने तो रूस को तोड़ा था

प्रेम और भाई चारे ने हिंसा का पथ मोड़ा था

कहा था आइसिंटीन ने परमाणु कुछ नहीं कर सकता है

अगर दिल दिमाग में शांति व संतोष को जोड़ा था।



आचार्य श्री विद्यासागर जी का वैराग्य पथ

✽ ब्र. संजय भैया, कटंगी (म.प्र.) ✽

युग बीतते हैं, सृष्टियाँ बदलती हैं, दृष्टियों में भी परिवर्तन आता है। कई युगदृष्टा जन्म लेते हैं। अनेकों की सिर्फ स्मृतियाँ ही शेष रहती हैं लेकिन कुछ व्यक्ति अपनी अमर गाथाओं को चिर स्थाई बना देते हैं। उन्हीं महापुरुषों का जीवन स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाता है, जो असंख्य जनमानस के जीवन को घने तिमिर से निकालकर उज्ज्वल प्रकाश से प्रकाशित कर देते हैं। ऐसे निरीह, निर्लिप्त, निरपेक्ष, अनियत बिहारी, महामनीषी, प्रज्ञा संपन्न एवं स्वावलंबी जीवन जीने वाले युग पुरुषों की श्रेणी में नाम आता है- **गुरुवर दिगम्बर जैनाचार्य श्री विद्यासागर जी महा मुनिराज** का जिन्होंने स्वेच्छा से अपने जीवन को पूर्ण वीतरागमय बनाया। त्याग और तपस्या से स्वयं को श्रृंगारित किया। स्वयं के रूप को संयम के ढाँचे में ढाला।

जो रूप से अरूप की ओर बढ़ रहे हैं उनके रूप का क्या वर्णन करें। जो शब्द से निःशब्द की ओर गतिमान हैं, उन्हें किन शब्दों से निबद्ध करें? जो सीमाओं से परे असीम होने निकल पड़े हैं, उन्हें किस भाषा से सीमित करें? जिनके चरण, बंध से अबंध की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, उन्हें किस परिभाषा के बंधन में ढालें? भाषाएँ-परिभाषाएँ राग के साँचे में ढलती हैं, और जिनकी यात्रा राग से वीतराग की ओर हो चुकी है, ऐसे परम वीतरागी-पथिक को राग के साँचे में ढालकर किसी भाषा के बंधन में कैसे डाला जा सकता है। वे परिभाषाओं के समस्त साँचों से ऊपर उठ चुके हैं। अब परिभाषाएँ ही उनके साँचे में ढलती हैं, अब भाषाएँ ही उनका अनुगमन करती हैं, अब शैलियाँ ही उनसे कला सीखती हैं। अब व्याख्याएँ ही उनसे अनुप्राणित होती हैं। अब पदाबलियाँ ही उनसे धन्यता पाती हैं।

जिनकी वीतरागी देह का प्रत्येक स्पंदन स्वयं छलकती हुई महाकाव्य की निरझरणी है ऐसे महासाधक के वैराग्यपथ को व्याप्ति करने में श्रेष्ठ से श्रेष्ठ महाकवि भी पराजित हो जायेंगे। वैराग्य के संबंध में राजवार्तिक में कहा है-

विरागस्य भावः कर्म वा वैराग्यम्।

विराग का भाव या कर्म वैराग्य है अथवा विषयों से विरक्त होना वैराग्य है।

द्रव्य संग्रह में लिखा है।

संसार देह भोगेसु विरक्त भावो य वैराग्यं।

संसार, शरीर तथा भोगों से जो विरक्ति का भाव है सो वैराग्य है।

उपर्युक्त आगमोक्त परिभाषाओं के संदर्भ में आचार्य प्रवर के वैराग्य को रेखांकित करने वाले प्रसंगों को कहकर मैं सुख-शांति का अनुभव करूँगा।

संतत्व से सिद्धत्व तक के अविराम यात्री, गतिशील साधक, आचार्य श्री विद्यासागर जी

महाराज दिगम्बरत्व रूपी आकाश में विचरण करने वाले एक आध्यात्मिक सूर्य हैं। ऐसे गुरुवर का सम्पूर्ण जीवन ही वैराग्य से भरा है। बचपन से ही आपकी रूचि धर्म में थी। प्रतिदिन मंदिर जाना, स्वाध्याय करना, मुनिराजों के दर्शन, वैयावृत्ति आदि करना, ध्यान लगाना आदि आपकी दैनिक क्रियाओं में शामिल था।

एक बार घर में तरबूज आया। श्रीमति जी ने बच्चों को आवाज लगाई। सारे बच्चे उपस्थित किन्तु विद्या कहीं दिखाई नहीं दिया। विद्या की प्रतीक्षा के बाद जब शांता-स्वर्णा उन्हें आस-पास देखने गई और खोजते-खोजते बाबड़ी के पास पहुँची तो वे दोनों वहाँ का दृश्य देखकर दंग रह गई उनके भाई बाबड़ी के अंदर जल में ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे हुये मिले।

विद्याधर जी ने चल चित्र भी देखे। जब कभी आपको लगता यह फिल्म देखना चाहिये तो अपने मित्रों के साथ जाकर देखते। सिनेमा देखकर भी आपने कुछ अनुचित ग्रहण नहीं किया। मनोरंजन की जगह आत्मरंजन अर्थात् भोगों की भंगुरता का ही बोध ग्रहण किया। चलचित्र देखकर संसार की नश्वरता का भान होता था उन्हें।

किसने जाना था कि सबके बीच रहने वाला बिल्कुल अपना सा यह छौना दूर-सुदूर, नितांत पराया होने जा रहा है। पराया होकर इतनी दूर पहुँचेगा कि द्रुतगामी धावक भी उसे पकड़ने में असमर्थ रहेंगे। इतना निर्मोही, इतना निस्प्रही हो जायेगा कि एक भी अश्रु पुकार उसे छू नहीं पायेगी।

जन्मदायनी अम्बा भी तो नहीं जान पाई थी अपने पुत्र की मूक साधना को। अनजानी ही रहीं वे भी, दुग्धपान में वैराग्य की घुट्टी घोल-घोलकर पिलाने के उपरान्त भी कब जान पाया था उन्होंने कि वे भावी निर्ग्रन्थ सम्राट का लालन पालन कर रही हैं। स्वयं ही विराग पान कराया और स्वयं ही भूल गई थी कि उनका यह लाड़ला उनके विराग पान को निरर्थक नहीं जाने देगा। मां के दूध को अमृत बना-बना कर बिखरेगा सारे विश्व में।

विद्या का वैराग्य जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा था परिवार से उनकी रूचि वैसे-वैसे घटती जा रही थी। श्रीमति को विद्याधर की यह बात असहाय थी। उसकी यह तटस्थता, यह चुप्पी माँ का हृदय विदीर्ण करती थी। अपना ही जाया माँ से पराया होता जा रहा है। माँ का दर्द, माँ की पीड़ा, माँ का दुख, माँ के हृदय के जख्मों को भूलकर किसके दर्द, किसके दुःख, किसकी पीड़ा हरने जा रहा है। अपनों को पराया करके किस पर अपनत्व बरसाने जा रहा है? पर वे अपने उस अंतर्मुखी बेटे के से कुछ कह न पाती। माँ की ममता सुबकती रहती, नेह तड़फता रहता। वात्सल्य सिसकता रहता। पर एक दिन ममता की नदी में बाढ़ आ गई सारे बांध तोड़कर एक दिन पूछ बैठी अपने बेटे से एक बात कहूँ बेटा, विद्या ने कहा- अक्का ऐसा क्यों कह रही हैं आप? आपको तो हजार प्रश्न पूछने का अधिकार है। वे अधिकार तूने रहने ही कहाँ दिये हैं? अक्का क्या मुझसे कोई गलती हो गई, क्या परेशानी है मुझसे भला मेरी परेशानी से तुझे क्या लेना देना। ऐसा कहते हुये

श्रीमति की आँखों से अविरल अश्रुधारा बह निकली। माँ तेरी आँखों में आंसु ? नहीं अक्का नहीं मैं तेरी आँखों में आसु नहीं देख सकता। विद्या ने आगे कहा-बोलो माँ क्या चाहती हो मुझसे ? तब श्रीमति जी अपने आपको सम्हालते हुये मुश्किल से बोली - देख तू ज्यादा घूमा फिरा मत कर। घर जल्दी आ जाया कर। विद्या ने कहा- मेरे देर से घर आने पर आपको कई परेशानी होती है क्या ? परेशानी वाली तो कोई बात ही नहीं है, नहीं-नहीं मुझे तुझ पर तो पूरा भरोसा है। तो फिर निश्चित रहो अक्का आपका यह बेटा कभी भी कुछ भी गलत नहीं करेगा ? जो करेगा सबके लिये अच्छा ही करेगा। और अक्का जिस दिन आपका यह विश्वास उठ जाये उस दिन एक इशारा बस कर देना आपका बेटा घर की देहरी से बाहर तक नहीं जायेगा।

और कितनी दृढ़ता से वचन निभाया विद्याधर ने कि तब से अब तक कभी भी निज घर की देहरी नहीं लांघी।

बेटा उड़कर आसमान छू लेगा माँ धरती पर बिलखती रह जायेगी, कंपित हाथों से अश्रु भीगा आंचल हाथ में थामे। कोख का जाया ही पराया हो जायेगा। और हुआ भी वही एक दिन वह प्यारा माँ का लाल सबकी आँखों का तारा बनने निकल पड़ा वैराग्य की राहों पर।

आज का युवा यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही विषयों के प्रति आकर्षित होने लगता है। लेकिन विद्याधर ने युवा होने से पहले ही अपने जीवन को वैराग्य पथ की ओर मोड़ लिया और मुक्ति वधु से नाता जोड़ लिया।

एक बार विद्या और मारुति किसी विषय पर चर्चा कर रहे थे। चर्चा करते-करते अचानक विद्या किसी गहन चिंतन में खो गये। तब मारुति ने पूछा विद्याधर कहाँ खो गये। विद्या ने मारुति से कहा- क्या लू व्याह रचायेगा ? क्यों ? सभी रचाते हैं। तो मैं भी रचाऊँगा व्याह। विद्या, क्या तू व्याह नहीं रचायेगा। तब विद्या ने गम्भीर होकर कहा-नहीं मैं व्याह नहीं रचाऊँगा। मैं तो शिव रमणी से ही पाणिग्रहण करूँगा क्योंकि सच्चा आत्मिक सुख तो उसी में है।

प्रतिदिन मित्र मारुति और विद्या की इसी प्रकार वैराग्य-वर्धित वार्ताएँ होती थी। जिस तरूणाई में व्यक्ति इंद्रियों के वशीभूत होकर अपनी देह को सुख प्रदान करने वाली भोग सामग्रियों को अपनाता है, उस उम्र में प्रवेश करते ही विद्या ने ग्रह त्याग का कठोर संकल्प ले लिया। घर में रहकर लालटेन के मंद प्रकाश में देर रात तक मूलाचार आदि महान ग्रंथों का स्वाध्याय करने वाला वह किशोर आज स्वयं एक जीवंत मूलाचार बन चुका है।

विद्या का वैराग्य परवान चढ़ने लगा, घर उसे घर नहीं कारावास सा लगने लगा। आत्मारूपी परिदा सुख का स्थान मोक्ष महल में जाने के लिये उतावला हो उठा। जहाँ चाह वहाँ राह निकल पड़े, एक दिन घर से किसी को बिना बताये बिना कहे- आचार्य श्री देशभूषण जी के चरणों में जा पहुँचा। रास्ते में दो दिन के उपवास हो गये, परंतु वैरागी को उसकी चिंता कब थी उसे तो लक्ष्य प्राप्ति की लगन थी। आचार्य श्री देशभूषण जी ने उन्हें आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत दे दिया। संघ की वैयावृत्ति के

साथ-साथ प्रारंभ हो गई आपकी साधना। आचार्य संघ विहार करता हुआ सन् 1967 में श्रवणबेलगोल में महामस्तकाभिषेक के लिये आया। और इसी पावन पुनीत अतिशयकारी, भगवान बाहुबली स्वामी जी के श्री चरणों में विद्याधर जी ने सात प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये।

अभिषेक के पश्चात संघ स्तवनिधी पहुंचा वहाँ पर आपके बड़े भाई महावीर भैया आपसे मिलने आये। महावीर ने आपको शुभ वस्त्रों से आवृत ब्रह्मचारी के वेश में देखा तो उनके मुख से निकला-विद्या। और आँखें छलकने लगीं। आप का हाथ अपने हाथ में लेकर बोले-विद्या चलो अपने घर लौट चलो। तब विद्या ने कहा अपने घर ही तो लौट रहा हूँ भैया। विद्या ? हाँ भैया पर घर में कब तक रहा जा सकता है। पर घर ? सुनकर रो पड़ा महावीर का हृदय। इतनी जल्दी हम सब तेरे लिये परायें हो गये। पराये हो गये नहीं। परायें थे मुझे यह समझने में वक्त लगा। और अब जब समझ ही गया हूँ तो निज घर में ही रहने दो ना भैया। महावीर पूछते हैं- विद्या क्या तुझे हमारी जरा भी याद नहीं आती। विद्याधर जी ने कहा- मैंने राग पद का त्याग कर वैराग्य पथ पर चलने का दृढ़ संकल्प लिया है। अब आप तो क्या दुनिया की कोई भी शक्ति मुझे मेरी आत्म भक्ति को प्रकट करने से नहीं रोक सकती। और आपका यह विद्या अब कभी आपके साथ वापस नहीं जायेगा।

मैं अपने घर की ओर लौट रहा हूँ भैया, और आप भी अपने घर की ओर लौटें।

जब विद्याधर को पता चला आचार्य संघ का वर्षायोग इसी क्षेत्र में होने वाला है तो विद्या ने सोचा सद्लगा समीप ही है घर के लोग आते रहेंगे, मोह बढ़ेगा आपने सोचा मैं अपनी वैराग्य साधना में राग का किंचित मात्र भी प्रवेश नहीं होने दूँगा। और छोड़ दिया स्तवनिधी। प्रस्थान कर दिया राजस्थान की ओर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पास। जब विद्याधर जी प्रथम बार आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के पास पहुँचे तो आचार्य ज्ञानसागर जी ने कहा-कौन हो तुम। तो आपने कहा-विद्याधर। गुरु ने पुनः कहा किसलिये आये हो। आपने कहा-विद्यार्जन के लिये। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी कहा-विद्याधर नाम है विद्या अर्जन कर उड़ जाओगे विद्याधरों की तरह। आपके अन्तः करण में गुरु के यह वाक्य अनुगुंजित होने लगा। और आपने गुरु को विश्वास दिलाते हुये कहा आज से आजीवन वाहन का त्याग, जब चलूँगा, जहाँ चलूँगा आपकी आज्ञा से आपके पीछे-पीछे पैदल चलूँगा। गुरुवर आवाक् से विद्याधर को देखते रह गये छोटी सी बात पर इतना बड़ा त्याग। त्याग को देखकर गुरु ने बना लिया विद्याधर को अपना शिष्य। ब्रह्मचारी अवस्था से ही उनकी साधना दूज के चांद की तरह वृद्धि को प्राप्त होती गई। दो माह पश्चात् ही लवण का आजीवन त्याग कर दिया। लवणत्य के एक माह बाद ही मधुर रस का भी जीवन पर्यंत के लिये त्याग कर दिया। मुनि अवस्था में फलों का त्याग, मेवों का त्याग, आजीवन चटाई के प्रयोग का त्याग, जीव पर्यंत के लिये एक चौंके का वृत्तिपरिसंख्यान, आहार में हरी सब्जी का त्याग।

ब्रह्मचारी विद्याधर को बचपन से ही निर्ग्रन्थ पद की अभिलाषा थी। मुनि मुद्रा उन्हें बहुत

भाती। फल स्वरूप उन्होंने गुरु के समक्ष निर्ग्रन्थ पद प्राप्ति की भावना रखी।

श्री ज्ञान गुरु ने विद्याधर को मुनि होने का शुभाशीष प्रदान किया। एक बहुत ही भव्य समारोह में विद्याधर जी की मुनि दीक्षा प्रारंभ हुई घने चिक्कण घुंघराले केशों को उनकी मृदुल अंगुलियाँ ऐसे उखाड़-उखाड़ फेंक रही थीं, जैसे कोई कृषक तृण को उखाड़ फेकता है। मस्तिष्क पर रक्त बूँदे छलकने लगीं, सुकोमल अंगुलियाँ भी केश घर्षण से रक्त रंजित हो गईं। पर भेद विज्ञान में निष्णात तरुण साधक की शांति-प्रशम मुद्रा में उनका अंतस् आनंद निर्झरित हो रहा था। राजस्थान की भीषण गर्मी, ज्येष्ठ की चिलचिलाती धूप देह को झुलसाती प्रचण्ड लपटों के मध्य, ज्यों ही विद्याधर जी ने वस्त्राभूषणों का परित्याग किया, त्यों ही एक क्षण को सब कुछ थम गया हो, सूर्य की गति, सरिता का प्रवाह, पवन का बेग, किन्तु तीव्र गति से गतिशील हो गया मुनि श्री विद्यासागर जी का वैराग्य पथ जो पिछले 50 वर्षों से अवरिल अविकल बढ़ रहा है अपनी मंजिल की ओर।

आचार्य श्री के व्यक्तित्व को कुछ पन्नों में समेटना समुद्र के जल को चुल्लू में समेटने जैसा है। जिनकी संयम की ऊंचाई के समक्ष आकाश स्वयं नतमाय है। जिनकी साधना की गहराई के सम्मुख सागर स्वयं करबद्ध खड़ा है, जिनकी कठोर तपश्चर्या के सामने तपस्या स्वयं गर्व से शीश झुकाती है, जिनके व्यक्तित्व की तुलना में इस धरित्री की समस्त उपमायें बौनी हैं, जिनके निर्दोष चारित्र के व्याख्यान में उद्भट से उद्भट विद्वान पराजित हो गये, जिनके गुणानुवाद हेतु विश्व के सम्पूर्ण शब्द अपनी असमर्थता पर लज्जित हैं। ऐसे महागुरु की महासाधना को सादर चरण वंदन।

कविता

विद्यागुरु की माया

कवि की लेखनी से
शांति का पैगाम निकलता है।
कवि की हुंकार से युद्ध का माहौल बदलता है।
कवि गर चाहे तो तलवारे जमीं पर लेट जाती हैं।
कवि की एक कविता से हिंसा का कुहासा टलता है।
साधु और कवि यह तो सोने में सुहागा है।
समाज को एक करने के लिये यही माला का धागा है।
संत के चिंतन में शांति का यज्ञ समायो है।
संत कवियों ने ही तो समृद्धि का मंत्र बताया है।
रोम रोम से जिनके बसता दया क्षमा का साया।
कल्पतरु सम संत सदा ही देते धर्म की छाया।
शब्द शब्द से विद्यासागर अध्यात्म का सार भरा।
कवि निराले शब्द रसीले, विद्या गुरु की माया।



कालमेघ (कड़ु चिरायता)

* डॉ. आशा जैन, इंदौर *

सभी प्रकार के ज्वरों में चिरायता अतिगुणकारी है। यह ज्वर को धीरे-धीरे नष्ट करता है। इससे ज्वर चाहे धातुगत हो, हड्डी तोड़ बुखार हो, टायफाइड या मलेरिया सभी ज्वरों में लाभप्रद हैं। भूख न लगना, कब्ज होना, सभी समस्याओं में पाचन किया को सही करता है। इसके सेवन से ज्वर पलटकर नहीं आता है।

1. एक गिलास जल में 3 ग्राम चिरायता, 1 ग्राम कुटकी, 3 ग्राम धनिया चूर्ण डालकर अच्छी तरह से उबाल लें। ठंडा होने पर सादा या मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें। यदि यह रोगी को गर्मी कर रहा हो तो उसमें खस या आंवला चूर्ण भी मिला लें।

2. यदि ज्वर बार-बार आ रहा है या पुराना हो गया है तो चिरायता 100 ग्राम, कुटकी 30 ग्राम, नागर मोथा 50 ग्राम, पित्त पापड़ा 50 ग्राम, गिलोय 50 ग्राम, सोंठ 50 ग्राम, आंवला 50 ग्राम, काली मिर्च 30 ग्राम मिलाकर जोकुट (मोटा चूर्ण) बनाकर रखें, नित्य 5 से 10 ग्राम चूर्ण 200 ग्राम जल में उबालकर शक्कर या मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें। उपरोक्त दवाओं का वारीक चूर्ण कर चासनी से दें।

3. कृमि रोग (पेट में कीड़ हो जाने पर) चिरायता के साथ हरड़ चूर्ण सुबह शाम दें।

4. पेट दर्द पर चिरायता का क्वाथ में सेंधानमक एवं हींग डालकर पीने से लाभ होता है।

5. प्रसूता स्त्रियों के दूध में विकृति आ जाने से शिशु को हानि होती है, जिससे शिशु को सूखा रोग था अन्य कई बीमारी हो जाती हैं दूध पचता नहीं है। चिरायता 100 ग्राम गिलोय 100 ग्राम, शतावरी 200 ग्राम, सोंठ 100 ग्राम लेकर चूर्ण करें। 10 से 15 दिन लें। गिलास पानी में उबालकर शक्कर मिलाकर (चाय जैसा) रोगी को पिलायें, यह प्रयोग 1 माह तक करें।

6. सभी प्रकार के चर्म रोगों पर चिरायता, नीम, त्रिफला, आमाहल्दी समभाग लेकर 1 गिलास जल में 10 ग्राम चूर्ण उबालकर काढ़ा बनाकर सेवन करने से लाभ होता है।

7. दस्त लगने पर या दस्त में खून आने पर चिरायता चूर्ण 10 ग्राम रात्रि में 1 गिलास पानी में भिगो दें। सुबह उसे मसलकर छानकर श्वेत चंदन घिसकर उसमें मिलाकर रोगी को पिलायें मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें। इसी तरह सुबह भिगोकर शाम को पिलायें। रोगी को हल्का सुपाच्य भोजन, जैसे खिचड़ी, मूंग की दाल, गिल्की, परवल, लौकी, पालक आदि दें।

8. शराब आदि के सेवन से यकृत में खराबी आ गई है तो भी उक्त औषधि सेवन से लाभ होता है। परहेज आवश्यक है। प्रयोग लगातार एक दो मास तक करें।



श्रेष्ठ स्वास्थ्य योग

स्वास्थ्य वर्धक क्रियायोग

शक्ति चालिनी- पूरी श्वास खाली करें, गर्दन को आगे झुकाने व मूलबंध अर्थात् गुदाद्वार का आकुंचन करें व फैलाएँ। ध्यान रहे ठुड्डी कंठ से लगी रहे। श्वास नहीं रुकने पर गर्दन सीधी कर श्वास लेवें।

लाभ: इससे हमारा उत्सर्जन संस्थान शक्तिशाली होता है पंचतत्व पृथ्वी पर अपना नियंत्रण स्थापित होने लगता है।

वज्रोली- पूर्ण श्वास खाली करें, सहजता से जितनी देर रोक सकें रोके। बार-बार अपनी वज्रनाड़ी (जनेन्द्रिय) का संकोचन विमोचन करें यही वज्र नाड़ी है। इस क्रिया को श्वास रुकने तक करें जब श्वास नहीं रुकने पाये क्रिया को गर्दन सीधा रखते हुये समाप्त करें। ध्यान रहे क्रिया करते समय गर्दन झुकी हुई रहे व श्वास नहीं लेना है।

लाभ: इससे हमारा प्रजनन संस्थान मजबूत होता है।

अग्निसार क्रिया : पूर्ण श्वास खाली कर लें। गर्दन को झुकाकर गुदाद्वार को ऊपर की ओर खींचकर रखें। नाभि से पेट को तेजी से अन्दर बाहर चलायें। श्वास नहीं रुकने पर सामान्य अवस्था में आ जायें।

लाभ: इससे आंतों व मलद्वार को शक्ति प्राप्त होकर अग्नि तत्व पर अपना नियंत्रण होता है।

भास्त्रिका प्राणायाम: इसमें सीने श्वास भरकर धोकनी के समान लयबद्ध तरीके से श्वास को बाहर फेंके जिस प्रकार रेलगाड़ी की गति बढ़ती है। धीरे धीरे अपनी अपनी श्वास को बाहर फेकना है। थकान आने पर दाहिने स्वर से श्वास भरें, श्वास रोककर गर्दन झुका लें व मूलबंध लगा लें, अपना संपूर्ण ध्यान हृदय के ठीक पीछे स्थित अनाहम चक्र पर लगायें। श्वास नहीं रुकने पर धीरे-धीरे बायें स्वर से श्वास को बाहर निकाल दें।

लाभ: इसका अभ्यास हृदय रोग में चमत्कारिक लाभ पहुँचाता है, इससे वायु तत्व पर नियंत्रण होता है।

भक्ति और तपश्चरण से पहुँचे बड़े बाबा बड़े मंदिर में

* डॉ. मुकेश जैन विमल, इंदौर *

चतुर्थ काल में मुनियों का जीवन प्रायः कर जंगल में ही निकलता था और वह भी वर्षा में पेड़ के नीचे, गर्मी में पहाड़ पर और ठण्डी के समय में खुले आकाश के नीचे रहकर शारीरिक कष्टों पर ध्यान न देकर आत्म साधना में ही लीन रहकर अपनी कर्म निर्जरा में लगे रहते थे। लेकिन इतनी कठिन साधना वे मुनिराज कैसे करते थे तो ग्रंथों को पढ़ने से मालूम पड़ता है कि जिन मुनिराजों के पास उत्कृष्ट संहनन होता है वही मुनिराज ही इस प्रकार की साधना कर सकते हैं लेकिन अभी पंचमकाल में इस प्रकार के प्रारंभ के तीन उत्कृष्ट संहनन पाये ही नहीं जाते हैं। लेकिन हीन सहनन के साथ आज मुनिराज कोई साधना नहीं कर सकते ऐसा भी नहीं है।

हम यहाँ पर आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज का सन् 2005 में बीना बारहा के चातुर्मास के बारे में यहाँ लिख रहे हैं जिसको पढ़कर आपको आश्चर्य होगा कि आज वर्तमान समय में भी हीन सहनन के साथ-साथ इतने अधिक परीषहों को जीतकर भी साधना की जा सकती है।

बात उस समय की है जब आचार्य श्री जी और हम सब लगभग 45 मुनिराज संघ ही कुण्डलपुर में सन् 2005 में ग्रीष्मकालीन वाचना चल रही थी। उस समय क्षेत्र में अत्यन्त गर्मी और चारों तरफ पहाड़ों की गर्म लू चलती रहती थी, आहार करने के बाद भी गला सूखता रहता था। और रात्रि में गर्म हवा के कारण नींद आना भी बहुत कठिन था। ऐसी तेज गर्मी के बाद जब चातुर्मास का समय आया था तो कमेटी वालों को पूरा विश्वास था कि आचार्य श्री जी ने 10 साल से इस क्षेत्र पर चातुर्मास नहीं किया है और अभी 4-6 महीने में बड़े बाबा जी की मूर्ति को नये मंदिर में भी ले जाना है।

इसलिये इस बार चातुर्मास तो अवश्य ही इसी क्षेत्र पर होगा। लेकिन आचार्य भगवन के मन की बात कोई नहीं जान सकता है। चातुर्मास की स्थापना के कुछ दिन ही शेष बचे थे कि आचार्य श्री जी ने कुण्डलपुर क्षेत्र से विहार कर दिया और कुछ दिनों में विहार करते हुये बीना बारहा क्षेत्र पर पहुँच गये।

यद्यपि आचार्य श्री जी बीना बारहा क्षेत्र पर अनेक बार गये और वहाँ पर रुके भी हैं लेकिन चातुर्मास के लिये पहली बार इस क्षेत्र पर पहुँचे चूँकि इस चातुर्मास में मुनि संघ बहुत अधिक था और क्षेत्र पर रुकने का स्थान बहुत कम था। हम चार-चार- और पांच-पांच मुनि एक छोटे कमरे में रहते थे। शायद पाटा लगाने के बाद श्रावकों को बैठने के लिये भी कमरे में स्थान शेष नहीं रहता था। लेकिन आचार्य भगवन इस चातुर्मास में जहाँ सारा संघ रूका हुआ था वहाँ न रुककर शान्तिनाथ भगवान के मंदिर में चले गये। उस समय शान्तिनाथ भगवान के मंदिर में चारों तरफ दालान थी और 20 फुट ऊपर दीवारें खड़ी थी और 7-8 फुट का स्थान दीवाल और छत के

बीच में खाली था जिसमें से बहुत ज्यादा हवा और पानी की बौछार आने की संभावना पूरी-पूरी थी। लेकिन आचार्य श्री जी इसी खुली दालान में 2005 का पूरा चातुर्मास एक ही स्थान पर रहकर निकाला।

सावन और भादों के महीने में तेज वर्षा और हवा के कारण कभी मौसम बहुत ठंडा भी जाता था तो कभी वर्षा बन्द हो जाने के कारण बहुत गर्मी और मच्छरों का प्रकोप बहुत अधिक बढ़ जाता था लेकिन आचार्य भगवन इन कष्टों को बिल्कुल अकेले रहकर समतापूर्वक सहन करते रहे। उनके पास बैठने को पाटे के अलावा न कोई चिट्ठाई, न कोई खिड़की दरवाजे, न कोई ब्रह्मचारी भईया और न ही कोई मुनिराज उस स्थान पर रात में रहते थे वैसे तो कोई न कोई मुनिराज रात्रि में आचार्य श्री जी के कक्ष में विश्राम अवश्य करते हैं लेकिन इस बार इतने प्रतिकूलता स्थान पर संघ के किसी भी मुनिराज की हिम्मत नही हुई उस खुली दालान में रात्रि में आचार्य श्री जी के पास विश्राम करने की, लेकिन आचार्य श्री जी इतने कष्टों के साथ क्यों साधना कर रहे हैं ?

यह बात मुझे जब मालूम पड़ी तब आचार्य श्री जी इस चातुर्मास के बाद पुनः कुण्डलपुर पहुँच गये। आज मैं उस रहस्य को लिखने जा रहा हूँ कि बड़े बाबा की बड़ी मूर्ति नये बड़े मंदिर में जाने के लिये आचार्य भगवन ने किस प्रकार भक्ति और साधना की थी।

उस बीना बारहा चातुर्मास में आचार्य भगवन इनते कष्टों को सहन करते हुये उत्कृष्ट साधना करते रहे हुये बात हम पहले ही लिख चुके हैं। लेकिन आचार्य श्री जी ने भगवान की स्तुति और भक्ति पाठ वगैरह इस चातुर्मास से बहुत अधिक करने लगे, इस चातुर्मास के पहले तक आचार्य श्री जी स्वयंभू स्रोत (जिसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति पढ़ी जाती है) चौबीस घंटे में एक ही बार सुबह-सुबह ही पढ़ते थे (जिसको पढ़ने में आचार्य श्री जी को लगभग 40 से 45 मिनट लगते हैं) वह स्तुति इस चातुर्मास में अब सुबह, दोपहर, शाम तीन बार पढ़ने लगे और नंदीश्वर भक्ति पहले एक बार पढ़ते थे अब उसको भी तीन बार पढ़ने लगे। बीनाबारहा से विहार करके कुण्डलपुर पहुँचे तो दिसम्बर-जनवरी के महीने में अपने कक्ष में रात्रि में विश्राम नहीं करके कक्ष के बाहर जो दालान है उसी खुली दालान में इतनी अधिक ठण्ड में विश्राम करते थे और शाम को 6.30 बजे सामायिक में बैठने के बाद रात्रि में 11.00 बजे तक सामायिक में बैठे रहना और पुनः रात्रि में 2.00 बजे से उठकर 7.00 बजे तक सामायिक, स्तुति आदि करके उठते थे और ऐसी कठिन साधना करते-करते उसी जनवरी के महीने में दिनांक 15.01.2006 के दिन आचार्य भगवन ने बड़े बाबा को बड़े मंदिर में ले जाने के लिये बहुत अधिक जोश और होश को बढ़ा देने वाले प्रवचन किये, जिसका जनता किसी प्रकार का संशय नहीं करें। बड़े बाबा बड़े मंदिर में फूल की तरह चले जायेंगे और इस दिन के प्रवचन के बाद उसी दिन शाम को मुहूर्त में ही बड़े बाबा को पुराने मंदिर से निकाल कर नये मंदिर में ले जाने का कार्य शुरू हो गया और दिनांक 17.01.2006 को शाम के समय जब बड़े बाबा पुराने मंदिर से नये मंदिर जा रहे थे तो उसी

समय आचार्य भगवन की आँखों में आंसू आ गये थे लेकिन आज तक किसी को नहीं मालूम कि आंसू क्यों आये थे ?

क्योंकि इस कार्य को करने से पहले आचार्य श्री जी बहुत उत्कृष्ट साधना कर रहे थे और उस कार्य में सफलता मिलने पर तभी सच्ची भक्ति के कारण सत्य की जीत होने की प्रसन्नता में उसकी आँखों में आंसू आ गये थे क्योंकि उस कार्य को करने में विरोधी लोग तो विरोध कर ही रहे थे लेकिन कमेटी वालों को भी डर लग रहा था कि कुछ हो न जाये, यहाँ तक कि संघ के मुनिराज भी चिंतित थे कि बड़े बाबा इतने सालों से पुराने मंदिर में विराजमान है उनको उठाते समय मूर्ति का कुछ हो न जाये लेकिन आचार्य भगवन बिल्कुल निश्चित थे क्यों कि उन्हें अपनी बड़े बाबा के प्रति उत्कृष्ट भक्ति और निर्दोष साधना पर पूरा विश्वास था इसलिये उन्होंने प्रवचन में कह दिया था कि बड़े बाबा तो फूल की तरह बड़े मंदिर में चले जायेंगे और वास्तव में ऐसा ही हुआ धन्य है आचार्य भगवन की निर्दोष चर्या और उत्कृष्ट चारित्र का पालन तथा कठिन तपश्चरण और प्रभु भक्ति का ऐसा फल कि बिल्कुल असम्भव कार्य भी बहुत अच्छी तरह से हो गया।

हम सब संयम व्रती तथा सामान्य श्रावक भी इस संस्मरण को पढ़कर मन में संकल्प करें तथा शिक्षा ले कि निर्दोष और प्रतिकूलता तथा कष्टों को सहन कर जो साधना की जाती है और अच्छे भावों के साथ भगवान की भक्ति करते हैं तो असम्भव काम भी सहजता से हो जाते हैं और कर्मों की निर्जरा भी बहुत होती है। इसी भावना के साथ आचार्य श्री जी के चरणों में उनके गुणों की प्राप्ति हेतु कोटिशः नमोस्तु॥

कविता

धर्म चाहिये

मानवता को चूस रहे है नफरत के खटमल
हिंसा की जौके सत्ता विस्तार की लटें
शोषण की दीमक मानवता के
वटवृक्ष की चूँस रही जड़ें
मानवता तड़फ रही तोपों की मालों पर
शांति के कबूतर बैठकर
पत्थर दिल के अनजाने भटके
दरिदों को संदेश दे रहे युद्ध नहीं बुद्ध चाहिये
अब तो विश्व को अहिंसा का भरा धर्म चाहिये

सर्वोदयी संत आचार्य विद्यासागर

✽ पुष्पेन्द्र कुमार जैन (अध्यापक), मंडावरा ✽

जैन दर्शन में चौबीस तीर्थंकर हुये हैं वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी के बाद श्रुतधर आचार्य, सारस्वत आचार्य, स्थितिप्रज्ञ आचार्य की परंपरा में हजारों दिगंबर जैन आचार्य हुये हैं जो साहित्यिक, काव्य सिद्धांत, मनोविज्ञान जैसे अनेक विधाओं के विषय विशेषज्ञ हुये हैं, इसी विशेषज्ञ आचार्यों की परंपरा में आचार्य ज्ञानसागर जी हुये हैं उनके ही शिष्य युगदृष्टा अध्यात्म सरोवर के राजहंस, युग प्रवर्तक, दार्शनिक, साहित्यकार, संतों के संत, श्रमण संस्कृति के महान उन्नायक, आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर का नाम विश्व प्रसिद्ध हो चुका है कलिकाल की अनेक विसंगतियों के बीच आचार्य विद्यासागर महाराज भारत को विश्व गुरु के रूप में पुनः स्थापित करने के लिये संकल्पबद्ध हैं ऐसे गुरु आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन चरित्र अनेक साधकों के लिये अनुकरणीय बन चुका है।

भारत की तपोभूमि दक्षिण दिशा के कोने पर कर्नाटक प्रांत के वेलगांव जिले के चिकौडी तहसील के सदलगा ग्राम की सुनाम धन्य भूमि पर 10 अक्टूबर 1946 गुरुवर की रात्रि को मल्लप्पा अष्टगे एवं श्रीमति अष्टगे ने द्वितीय पुत्ररत्न विद्याधर को प्राप्त किया और इस रत्न को सम्पूर्ण देश के लिये प्रदान कर दिया। यह उनका उपकार मात्र परिवार तक ही सीमित न रहकर राष्ट्र व्यापी हो गया है। आज इसी का प्रतिफल है कि मल्लप्पा व श्रीमति जी के पुत्र रत्न एवं महावीर अष्टगे के भ्राता विद्याधर ने अपने भाई अनंतनाथ, शांतिनाथ को मुनि योगसागर, समयसागर के रूप में समाज को प्रदान किया है, अपने पुत्र से प्रभावित होकर मल्लप्पा जी मुनि मल्लिसागर बने एवं माता श्रीमति जी आर्थिका समयमति बन गई, यह एक बड़ा महत्वपूर्ण संयोग रहा कि पुत्र की राह पर माता-पिता दोनों चल पड़े। आज तक देखने में यह आता है कि पिता के पदचिन्हों पर पुत्र चला करते हैं किंतु आचार्य विद्यासागर जी के पदचिन्हों पर उनका पूरा परिवार चल पड़ा। सन् 1966 में आचार्य देशभूषण जी की दिव्य पादछाया में युवा विद्याधर ने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। कदम बढ़ते गये और स्वाध्याय की तडफन ने एक नया मोड़ लिया, आचार्य देशभूषण जी की आज्ञा और सहमति से स्वाध्याय और जैन विद्या अर्जन की प्रेरणा ने आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज से ब्रह्मचारी विद्याधर का मिलन करा दिया। गुरु भक्ति सेवा और समर्पण से प्रभावित आचार्य ज्ञानसागर जी ने अपनी वृद्ध अवस्था में भी सम्पूर्ण ज्ञानधन विद्यासागर जी को समर्पित कर दिया साथ ही 30 जून 1968 आषाढ़ शुक्ल पंचमी संवत् 2025 को अपने प्रिय शिष्य विद्याधर को मुनि विद्यासागर बना दिया। कन्नड़ भाषा में नौवी कक्षा व मराठी भाषा से उत्तीर्ण मुनि विद्यासागर श्रेष्ठ साहित्यकार, दार्शनिक संत बने गये। 22 नवम्बर 1972 को आचार्य ज्ञानसागर जी ने अपना आचार्य पद मुनि विद्यासागर जी को सौंपकर स्वयं विद्यासागर जी के शिष्य बन गये। इतिहास के पृष्ठ पर लिखी गई यह घटना अद्वितीय मानी गई है कि कोई गुरु अपने शिष्य बन जायें ऐसा उदाहरण कोई दूसरा नहीं मिलता है।

आचार्य श्री द्वारा लिखित साहित्य साधना में जुटे आचार्य श्रेष्ठ ने शांति सागर स्तुति से श्रीगणेश करके आचार्य श्री ने रचनायें की हैं, सागर स्तुति, आचार्य शिवसागर स्तुति, आचार्य ज्ञानसागर स्तुति की रचना करने के उपरांत उन्होंने श्रमण शतक, शारदा स्तुति, निरंजन शतक, भावना शतक, परीषहजय शतक, सुनीति शतक, दोहादोहन शतक, सूर्योदय शतक, पूर्णोदय शतक, सर्वोदय शतक, जिनस्तुति शतक के अलावा प्राकृत भाषा में विज्जाणुवेक्खा प्राकृत, अनेकों कवितायें भी लिखी हैं जिनमें प्रमुख कन्नड़, बंगला, अंग्रेजी हैं, आचार्य श्री की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता है उन्होंने समाज व जैन धर्मानुलम्बियों को ऐसे-ऐसे ग्रंथ लिखे हैं जिन्हें पढ़कर अध्यात्म का ज्ञान प्राप्त होता है। आचार्य भगवन ने शताधिक प्रकाशित, अनुवादित ग्रंथ कुंदकुंद का कुंदन, निजामृतपान, अष्टपाहुड, नियमसार, वारसाणुवेक्खा, पंचास्तिकाय, इष्टोपदेश, प्रवचनसार, समाधिसुधा शतक आदि लिखे हैं। आचार्य श्री ने नवधा भक्तियों के संबंध में बड़े ही ढंग से बतलाया है आचार्य पूज्यपाद कृत सिद्ध भक्ति, चैत्यभक्ति, चैत्यभक्ति, पंचमहागुरु भक्ति, शांति भक्ति, योगिभक्ति, आचार्य भक्ति, चरित्र भक्ति, निर्वाण भक्ति, नंदीश्वर भक्ति, आचार्य श्री ने अनेक ग्रंथ लिखे हैं समंतभद्र की भद्रता, रयण मंजूसा, आसमीमांसा, द्रव्य संग्रह, आदि। आचार्य श्री कर्नाटक प्रांत में स्थित श्रवणबेलगोला में विराजमान भगवान बाहुबलि की मूर्ति की कल्पना को दर्शाते हुये आचार्य श्री ने गोमटेश अष्टक लिखा है। आचार्य श्री ने योगसागर, आस परीक्षा, जैनगीता, कल्याण मंदिर स्रोत, एकीभाव स्रोत, जिनेन्द्र स्तुति, गुणोध्य, स्वरूप संबोधन, इष्टोपदेश, द्रव्य संग्रह, जिनसहस्रधिक आदि रचनायें आचार्य श्री ने लिखी हैं जिन्हें पढ़कर लोग संयम के पथ पर चलकर आत्म कल्याण का मार्ग अपना रहे हैं। आचार्य श्री ने हिंदी भाषा में अनेक प्रेरणादायक साहित्य लिखा है जिसे पढ़कर आज मानव जीवन सफल कर रहा है उन्होंने मूकमाटी महाकाव्य, नर्मदा का नरम कंकर, डूबो मत लगाओ डुबकी, तोता क्यों रोता, चेतना के गहराव में आदि हैं।

सर्वाधिक मुनि दीक्षा प्रदाता आचार्य श्रेष्ठ:- प्रतिभाशाली, उच्चशिक्षा युक्त बाल ब्रह्मचारी शिष्य एवं शिष्याओं का विशाल समूह आचार्य श्री के संघस्थ हैं। चमत्कारी आंकड़ा इस प्रकार है आचार्य श्री ने कुल 443 श्रावकों को दीक्षा प्रदान की जिनमें 120 निर्ग्रन्थ मुनिराज हैं, 172 आर्थिकायें, 151 ग्यारह प्रतिमाधारी क्षुल्लक, क्षुल्लिकायें सम्मिलित हैं एवं 400 के लगभग बाल ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणी पूज्य आचार्य श्री से दीक्षा लेने के लिये कतार में लगे हुये हैं।

आचार्य श्री ने 49 वर्षायोग किये। आचार्य श्री ने अजमेर शहर में सन् 1968, 1969, 1974 में वर्षायोग किये हैं किशनगढ़ रेलवाल में सन् 1970, किशनगढ़ मदनगंज में सन् 1971, 1972 में नसीराबाद में 1973 का व्यावर (राजस्थान) उत्तरप्रदेश के फिरोजाबाद में 1975 में हुआ। सिद्धक्षेत्र कुंडलपुर में सन् 1976, 1977, 1889, 1992, 1995 सर्वाधिक वर्षावास किये, सिद्धक्षेत्र रेशंदीगिरि में 1978, 1981, 1982 का पावन वर्षायोग किया। थूवोन जी तीर्थक्षेत्र पर 1979, 1987 का वर्षायोग किया, मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र पर सन् 1980, 1990, 1991 तीन वर्षायोग किये, झारखंड राज्य स्थित ईसरी में सन् 1983 का

वर्षावास किया, संस्कारधानी मढ़ियां जी जबलपुर में सन् 1984, 1988 में वर्षायोग किया। दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र अहार जी में सन् 1985 का वर्षायोग किया, 1986 का पावन वर्षायोग पपौरा जी टीकमगढ़ में किया। महाराष्ट्र राज्य के प्रथम तीर्थक्षेत्र रामटेक में चार वर्षावास आचार्य श्री ने किये हैं क्रमशः 1993, 1994, 2008, 2013 इस तीर्थक्षेत्र को सौभाग्य मिला। महाराष्ट्र के महुआ पार्श्वनाथ में सन् 1996 का पावन वर्षायोग व्यतीत किया। सन् 1997, 2002 में नेमावर तीर्थक्षेत्र पर नर्मदा नदी के मनोरम तट पर वर्षायोग किया, सन् 1998 में भाग्योदय तीर्थ सागर में वर्षायोग किया, सन् 1999 में गोम्मटगिरि इंदोर में वर्षायोग किया। वर्ष 2000, 2003, 2006, 2009 में आचार्य श्री ने अमरकंटक की पर्वतमालाओं के बीच में वर्षायोग की कठिन साधना की है, आचार्य श्री ने वर्ष 2005, 2007, 2010, 2015 का चतुर्मास अतिशय क्षेत्र बीना बारह में किया, आचार्य श्री ने तिलवारा घाट जबलपुर दयोदय तीर्थस्थल पर सन् 2001, 2004 के पावन वर्षायोग किया। आचार्य श्री ने वर्ष 2011, 2012 का चातुर्मास छत्तीसगढ़ राज्य के चंद्रगिरि, अतिशय क्षेत्र डोंगरगढ़ में सम्पन्न किया, आचार्य भगवन ने वर्ष 2014 का चतुर्मास शीतलधाम विदिशा में सम्पन्न हुआ, आचार्य श्री का पावन वर्षायोग 2016 का मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के हबीबगंज स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री ने इन नगरों में मुनि दीक्षा देकर किया पवित्रः- सर्वप्रथम आचार्य श्री ने बुंदेलखंड की देहलीज मध्यप्रदेश के श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र सोनागिरि जी में भगवान चंदाप्रभु जी के चरण सानिध्य में दो बार दीक्षाएँ प्रदान की है जिनमें प्रथम दीक्षा 18 दिसम्बर 1975 में 4 क्षुल्लक दीक्षाएँ व 31 मार्च 1988 को 8 मुनि दीक्षाएँ प्रदान की कुंडलपुर के बड़ बाबा के दरबार में सन् 1977 में चारित्र सागर, दर्शन सागर को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की, 07 अगस्त 1989 में 09 आर्यिका दीक्षा प्रदान की, सन् 1992 में 17 आर्यिका दीक्षा दी, सन् 1995 में 03 क्षुल्लक दीक्षाएँ दी, वहीं 2006 में 58 आर्यिका दीक्षाएँ आचार्य श्री ने प्रदान की। भगवान पार्श्वनाथ की समोशरण स्थली नैनागिरि जी में 12 नवम्बर 1978 को 2 क्षुल्लक, 1980 में 08 क्षुल्लक दीक्षाएँ, 1981 में 2 मुनि दीक्षा, 1982 में 3 मुनि दीक्षा, 1987 में 23 दीक्षाएँ दी जिसमें 11 आर्यिका व 12 क्षुल्लक दीक्षाएँ आचार्य श्री ने दीं। बुंदेलखंड के लघु सम्मेशिखर जी द्रोणागिरि में 08 मार्च 1980 में 1 मुनिदीक्षा समयसागर जी महाराज को दी। सागर में 15 अप्रैल 1988 को 2 मुनि दीक्षा प्रदान की जिनमें नियमसागर, मुनि योगसागर जी महाराज को मुनि दीक्षा दी। जैनियों के तीर्थराज व 20 तीर्थकरों की मोक्ष स्थली सम्मेशिखर जी में 1983 में 10 ऐलक दीक्षाएँ प्रदान की, 25 सितंबर 1983 को ईसरी झारखंड में 05 मुनि दीक्षा प्रदान की अहार जी क्षेत्र पर 08 नवंबर 1985 को 01 मुनि दीक्षा 10 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की, मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर में 20 फरवरी 1990 को 07 आर्यिका दीक्षाएँ दी मढ़ियां जी जबलपुर में 25 जनवरी 1993 को 25 आर्यिका दीक्षा प्रदान की एवं 1997 में 10 मुनि दीक्षा व 14 आर्यिका दीक्षा प्रदान की, नेमावर तीर्थक्षेत्र पर 22 अप्रैल 1999 को 23 मुनि दीक्षा प्रदान की,

महाराष्ट्र के तीर्थक्षेत्र तारंगा जी में 20 अप्रैल को 06 क्षुल्लक दीक्षाएँ प्रदान की, मुक्तागिरि तीर्थक्षेत्र पर 16 मई 1991 को 07 क्षुल्लक व 08 मुनि दीक्षा दयोदय तीर्थक्षेत्र जबलपुर में 2004 में मुनिदीक्षा प्रदान की हैं। महाराष्ट्र प्रदेश के प्रथम तीर्थक्षेत्र रामटेक में 10 अगस्त 2013 को 25 मुनिदीक्षा हुई 16 अक्टूबर 2014 में 04 मुनि दीक्षा शीतलधम विदिशा व 31 अगस्त 2015 में आचार्य श्रेष्ठ ने तीर्थक्षेत्र बीनाबारहा जी में 03 मुनि दीक्षा प्रदान की। धन्य हो गये आज वह साधक जिन्होंने वर्तमान युग के महावीर आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर जी महाराज के करकमलों से दीक्षा ली है, संयम के पथ पर चल रहे हैं।

आचार्य श्रेष्ठ ने वाचना की परंपरा के लिये किया जीवंत- सन् 1980 में मोराजी सागर के विशाल प्रांगण से आचार्य श्रेष्ठ ने वाचना की परम्परा जीवंत फिर सन् 1981 में जबलपुर, 1982 में सागर, 1983 में झारखंड राज्य के ईसरी में 1984 में मढ़ियां जी जबलपुर, 1985 में खुरई, 1986 में पपौरा जी टीकमगढ़ 1987 में बुंदेलखंड अतिशय क्षेत्र क्षेत्रपाल जी मंदिर 1988 में क्षेत्रपाल जी मंदिर 1988 में क्षेत्रपाल जी लतितपुर व पिसनारी मढ़ियां जी जबलपुर में ग्रीष्म कालीन सर्वाधिक वाचनाएँ आचार्य श्रेष्ठ ने की।

तीर्थोद्धारक हैं आचार्य श्रेष्ठ- वर्तमान युग के दृष्ट आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज इस युग के श्रेष्ठ आचार्यों में से एक हैं पूज्य आचार्य श्री ने मात्र पुराने तीर्थों का जीर्णोद्धार नहीं कराया अपितु नवीन तीर्थों का भी संवर्धन किया है जिनमें प्रमुख हैं नर्मदा नदी के तट पर नवोदित तीर्थक्षेत्र अमरकंटक, दयोदय तीर्थक्षेत्र तिलवारा घाट जबलपुर बड़े बाबा कुंडलपुर जी दमोह, बीना बारहा, भाग्योदय तीर्थ स्थल सागर, चंद्रगिरि तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़ छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल, नेमावर, महाराष्ट्र व मध्यप्रदेश की सीमा का प्रथम तीर्थक्षेत्र रामटेक नागपुर, मुक्तागिरि, नैनागिरि, थूवौन जी, तपोवन, तारंगा जी, आदि अनेक नवोदित तीर्थक्षेत्र का निर्माण आचार्य श्रेष्ठ ने करवाया है।

स्थापत्य के नमूनों को नया रूप दिया आचार्य श्री ने- स्थापत्य व कला की दृष्टि से आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज ने पाषाण निर्मित जैन मंदिरों के निर्माण के लिये अपनी प्रेरणा दी जिसके फलस्वरूप अनेक नगरों में मध्यप्रदेश के टडा (केसली), सिलवानी, शीतलधाम विदिशा, पंचबालयति मंदिर इंदौर, पनागर (जबलपुर), ईशुरवारा, पजनारी (बंडा), बहोरीबंद, पटनागंज रहली, पिसनहारी मढ़िया जबलपुर आदि अनेक तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़ मढ़िया जबलपुर आदि अनेक तीर्थक्षेत्र अपनी सौंदर्यता को विखेर रहे हैं।

आचार्य श्री की प्रेरणा से संचालित विविध गतिविधियाँ- आचार्य श्री की प्रेरणा से विविध योजनाएँ संचालित की जा रही हैं जिसमें प्रमुख रूप दिया गया है बालिकाओं की शिक्षा के लिये देश के तीन स्थानों पर बनाई गयी हैं जो मध्यप्रदेश के जबलपुर, महाराष्ट्र के रामटेक, छत्तीसगढ़ के चंद्रगिरि तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़ में संचालित की जा रही हैं।

प्रतिभा स्थली छात्रावास- बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु नगरों व महानगरों में प्रतिभा स्थली बालिका विद्यालयों छात्रावास की स्थापना की गई है।

प्रशासनिक एकेडमी - मध्यप्रदेश के हाईकोर्ट व सर्वाधिक जैन समाज वाला शहर जबलपुर में आचार्य श्री के आशीर्वाद से प्रशासनिक सेवा की तैयारी करने के लिये जबलपुर में अखिल भारतीय प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान मढ़िया जी में 12 अप्रैल 1992 में स्थापित की गई जिसमें तैयारी करके विद्यार्थी प्रशासनिक सेवा में चयनित होकर अपना व संस्थान का नाम रोशन कर रहे हैं। इसी के साथ जैनधर्म की शिक्षा प्राप्त करने के लिये वर्णी जैन गुरुकुल की स्थापना की गई है जिसमें विद्यार्थी शोध कार्य भी कर रहे हैं व जैनधर्म की शिक्षा को ग्रहण करके धर्म की ध्वजा फहरा रहे हैं। आचार्य श्री के आशीर्वाद से मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में विद्यासागर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट की स्थापना की गई है जिसमें विद्यार्थी अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश शासन की एक अतुलनीय- मध्यप्रदेश शासन ने आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज का गौरव बढ़ाने के उद्देश्य से आचार्य विद्यासागर जलाशय योजना केसली में की है।

जीवदया व करुणा की प्रतिमूर्ति हमारी गौशालायें- आचार्य श्री मंगल आशीर्वाद से देश में करुणा व पशु संरक्षण, गौवंश की रक्षा के लिये लगभग 130 गौशालायें संचालित की जा रही है जिसमें हमें शुद्ध दूध मिल रहा है व गौ संरक्षण भी हो रहा।

हथकरघा स्वरोजगार योजना- हथकरघा योजना के माध्यम से युवाओं को स्वरोजगार मिल रहा है खादी वस्त्रों का प्रचार-प्रसार हो रहा है। वर्तमान समय में लगभग 132 हथकरघा केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है।

नवयुवकों का चिकित्सा संस्थान: आचार्य श्री की प्रेरणा से निर्धन व गरीबों की सेवा करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश के सागर में भाग्योदय तीर्थ पर ही भाग्योदय हॉस्पिटल की स्थापना की गई है।

आचार्य श्रेष्ठ के विशेष अभियान:- हिंदी भाषा उत्थान अभियान इंडिया नहीं भारत कहो। माँस निर्यात विरोध अभियान, व्यसन मुक्ति अभियान, संस्कार निर्माण अभियान, तीर्थ संरक्षण-संवर्धन अभियान।

पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विराट व्यक्तित्व में अध्यात्म, चिंतन, राष्ट्रीय, स्वाभिमान की चिंता, श्रमण संस्कृति उत्थान के लिये अनूठी सोच तथा रोजगार के क्षेत्र में युवकों को सतत मार्गदर्शन तथा गौरववान बनाते हुये पवित्र मानव जीवन की प्रेरणा के साथ निरंतर आत्म विकास की इवारत लिखते हुये अपने पचासवें संयम स्वर्ण महोत्सव को सार्थक कर रहे हैं। आचार्य ज्ञानसागर जी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अहर्निश प्रयासरत हैं। आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज वर्तमान युग के युग प्रवर्तक के रूप में आज संयम की पचासवीं वर्ष को शोभायमान कर रहे हैं। आचार्य श्री की महिमा का गुणगान जितना भी किया जाये उतना ही कम है उनकी महिमा का गुणगान नहीं किया जा सकता है।

चलो देखें यात्रा

ज्वालामालिनी

क्षेत्र का महत्त्व- क्षेत्र पर मन्दिरों की संख्या -07

क्षेत्र पर पहाड़- नहीं है।

ऐतिहासिकता- मंदिर 13वीं शताब्दी का है। जनश्रुति के अनुसार एक स्वामी जी ज्वालामालिनी एवं अन्य प्रतिमाओं को सुरक्षित स्थान पर ले जा रहे थे उन्हें यहां शेर एवं गाय एक ही स्थान पर खेलते एवं रहते दिखें। स्वामी जी ने इस स्थान को सिंहनगुड़ी कहते हैं। कन्नड़ में सिंह अर्थात् शेर एवं गुड़ी अर्थात् खेल। रविवार ज्वालामालिनी का विशेष दिन है। इस दिन विशेष पूजा होती है।

वार्षिक मेला- फाल्गुन वदी सप्तमी (मार्च)

समीपवर्ती तीर्थक्षेत्र- होम्बुज 70 किमी., बालेहोन्नुर वीर शैवालिंगावत मठ- 35 किमी., हिन्दू श्रंगेरी शारदा मंदिर - 50 किमी., ओगुम्बे सनसेट पाइंट- 45 किमी.।

निकटतम प्रमुख नगर- शिमोगा 55 किमी., एनआरपुर- 2 किमी.

प्रबंध व्यवस्था- संस्था श्री सिंहनगड़ी जैन मठ भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन पट्टाचार्य स्वामजी जी।

अध्यक्ष- स्वस्ति श्री भट्टारक लक्ष्मीसेन स्वामी जी, **मैनेजर-** श्री प्रभाकर (09480404108)

आवागमन के साधन- रेलवे स्टेशन- शिमोगा- 55 किमी.

बस स्टैण्ड- नरसिंह राजपुर- 2 किमी.

पहुँचने का मार्ग- शिमोगा श्रेम श्रंगेरी रूठ वाया शिमोगा हुम्बले बेल-एनआरपुर कोप्पा श्रेगेरी।

सरलतम मार्ग- शिमोगा-हूमचा-थिरथाहल्ली-कोप्पा-एनआरपुरम

क्षेत्र पर उपलब्ध- आवास-कमरे (अटैच बाथरूम) -25, हॉल-3 (यात्री क्षमता -400), क्षेत्र के सामने नया समुदाय भवन है, यात्रा ठहराने की क्षमता- 500।

भोजनशाला - नियमित निःशुल्क

विद्यालय- है

औषधालय- है

प्रवचनहॉल/पुस्तकालय- है

टेलीफोन- 08266-215094

नाम एवं पता- श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र सिंहनगड़ी ज्वालामालिनी पोस्ट एवं तहसील-नरसिंहपुर, जिला चिकमंगलूर कर्नाटक - 577134

बौद्ध धर्म और अहिंसा:- एक विश्लेषण

✽ अरविन्द प्रेमचन्द्र जैन, भोपाल/पूणे ✽

सम्पूर्ण जगत में हमें अगर शांति स्थापित करनी है या अमन चैन कायम करना हो तो उसमें हिंसा से दूर रहकर अहिंसा का पालन कर सकते हैं। अहिंसा का सामान्य अर्थ है हिंसा न करना। इसका व्यापक अर्थ है- किसी भी प्राणी को तन, मन, कर्म वचन और वाणी से कोई नुकसान न पहुंचाना। मन में किसी का अहित ना सोचना किसी को कटु वाणी के द्वारा भी नुकसान न पहुंचाना। कर्म से भी किसी भी प्राणी की हिंसा न करना।

शाब्दिक तौर पर किसी को मारने की इच्छा हिंसा कहलाती है। ऐसी हिंसा का न होना अहिंसा कहलाती है। अहिंसा के 3 रूप हैं जो उत्तरोत्तर श्रेष्ठ हैं किसी को अपने शरीर द्वारा कष्ट पहुंचाने की इच्छा न करना शारीरिक अहिंसा है, वाणी से कष्ट न करना वाचिक अहिंसा है। तथा किसी का मन से बुरा न चाहना मानसिक अहिंसा है, हमें मनसा, कर्मणा तथा वाचा तीनों रूप की हिंसा से बचना चाहिये। आज के समय में अहिंसा का मतलब शारीरिक हिंसा न करने से लिया जाता है। ऐसा इसलिये है क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप में दिखाई पड़ती है। अहिंसा को परमधर्म भी कहा जाता है इसमें मन के सभी बैर, भय और आशंकायें दूर हो जाती हैं। भगवान बुद्ध के समय समाज में जिस तरह की परिस्थितियां थी वे बहुत भयावह थी, बौद्ध धर्म के प्रादुर्भाव से पूर्व अर्थात् ऋग्वेदयुगीन भारत में हिंसा का स्वरूप जोरों से था, प्राचीन वैदिक युगीन पंडितों ने आडंबरवाद, पोंगापंडितवाद, यज्ञ, आदि ने निरीह जानवरों की हत्या आदि कई शर्मनाक बातों को स्थान दिया, प्राचीन वेदों में यह बताकर जानवरों की हत्या, नरबलि आदि दी जाती थी यह सब देवताओं को प्रसन्न रखने के लिये दी जाती है। इस तरह का शोषण प्राचीन समय में किया जाता था। इस बात से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह कोरी काल्पनिक, मिथ्या बात हमें प्रतीत होती है। हिंसा के नाम पर वैदिक ब्राह्मण यज्ञ का आयोजन करते समय जंगलों के कई तरह के पेड़ों को काट देते थे। पूर्ववैदिक युग की साधना यज्ञ-विधानात्मक थी, यह सुविदित है। यज्ञ का स्वरूप क्या है, अक्सर प्रचलित आधुनिक दृष्टि के अनुसार आदिम युग के धर्मों में यज्ञ बलिदान और जादुई अनुष्ठान का समवेत रूप था। देवता को मनुष्यवत मानकर उसे प्रसन्न करने के लिये बलिदान दिया जाता था और उसके अनुष्ठान में जादुई शक्ति मानी जाती थी। वैदिक-यज्ञ में बलि गोरम, अनाज से बने अन्न, सोम अथवा पशु की हो सकती थी और उसे अग्नि में डालकर देवता को अर्पित किया जाता था। इसी प्रकार ब्राह्मणों के द्वारा सम्पन्न किया जाने वाला अश्वमेध यज्ञ में अश्व को स्त्री के संभोग करवाया जाता था इसमें असहनीय

पीड़ा उस स्त्री को होती थी उस पीड़ा में कई बार तो स्त्रियाँ अकाल मृत्यु को प्राप्त हो जाती थी, उनके यज्ञ करने से जो धुआँ निकलता था उससे हजारों जीव-जन्तु मृत्यु को प्राप्त हो जाते थे, इस प्रकार प्राचीन समय में हिंसा के प्रति रूप मौजूद थे, बलहीन, आधारहीन मनुष्यों के ऊपर भी शास्त्रसम्मत बनाकर हिंसा की जाती थी जिसका साक्ष्य हमें ऋग्वेद के दशम मण्डल पुरुषसूक्त के सुक्त में मिलता है, इन सूक्तों की भाषा छांदश भाषा थी।

ब्राह्मण उसका मुख था, बाहें राजन्य बनीं।

उरू उसके वैश्य, पैरों में शूद्र जन्मा ॥12॥

इस प्रकार की ऋचाओं को स्थायित्व रूप प्रदान करके कमजोर और बेसहारा लोगों के ऊपर हिंसा को अवतरित किया गया। इसमें ब्राह्मण को ब्रह्म के मुख से, क्षत्रिय को उसके भुजाओं से, वैश्य को उसकी जंघाओं से, तथा इन सबकी सेवा करने के लिये शूद्र का जन्म पैरों से हुआ, ऐसा वेदों में वर्णन मिलता है। हिंसा को इस प्रकार वैदिक धर्म में धर्मसम्मत बना दिया गया, शूद्रों के साथ अत्याचार और हिंसा को भी स्थायित्व प्रदान किया गया। जिस प्रकार प्राचीन समय में कई प्रकार की हिंसा देवताओं को प्रसन्न करने के लिये दी जाती थी वर्तमान समय में हमें कई प्रकार के उदाहरण मिलते हैं, जैसे नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में और गुवाहाटी के कामख्या देवी मंदिर में हजारों बेगुनाह निरीह बेजुवान जानवरों की निर्मम एवं बर्बर तरीके से हत्या कर दी जाती है।

इसी प्रकार विश्व के अन्य धर्मों में भी जीव हत्या की जाती है वे सिर्फ अपनी जीभ के स्वाद के नित्य-प्रतिदिन पशुओं की हत्या करते हैं और वे इसे अपने धर्म ग्रंथों से जोड़ते हैं और तर्क देते हैं कि ऐसा हमारे धर्म में लिखा गया है।

बौद्ध धर्म में अहिंसा का स्वरूप: भगवान बुद्ध अपने प्रारम्भिक उपदेशों में यह स्पष्ट करते हैं कि व्यक्ति कोई भी कर्म चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो वह उस मनुष्य की तृष्णा का परिणाम होता है। बौद्ध धर्म बताया गया है हमारे मन में अच्छे संकल्प होने चाहिये, हमारे कर्म सम्यक् होने चाहिये, किसी दूसरे व्यक्ति को उनसे कोई कष्ट नहीं होना चाहिये। तथा इसी के साथ हमारी वाणी भी सम्यक होनी चाहिये उसे सुनकर दूसरे मनुष्य का कष्ट नहीं होना चाहिये। बौद्ध धर्म अनुसार बुरा सोचना या मन में किसी के लिये द्वेष रखना किये गये कर्म से घातक होता है। बुरा सोचना भी एक प्रकार की हिंसा का एक प्रतिरूप है। इस प्रकार मन का उदाहरण हमें धम्मपद में मिलता है।

मनोपुब्बगमा धम्मा, मनोसद्वा मनोमया।

मनसा च पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा

ततो न दुःखमन्वेति, चक्क व वहतो पद ॥1॥

**मनोपुब्बगमा धम्मा, मनोसट्ठा मनोमया
मनसा च पसन्नेन भासति वा करोति वा
तो च सुखमन्वेति, छाया व अनपायिनी ॥2॥**

इस प्रकार धम्मपद की गाथाओं से यह स्पष्ट होता है कि मनुष्य दूषित मन से जो कुछ भी बोलता है या करता है मनः कर्म, वचनकर्म तथा कायकर्म से भी कुछ गलत कार्य करता है उन अकुशल कर्मों से उत्पन्न दुःख उस मनुष्य का उसी तरह पीछा करता है, जैसे किसी बैलगाड़ी का पहिया गाड़ी में जुते हुये बैलों के पैरों का पीछा करता है।

इसी प्रकार कुशल कर्मों से उत्पन्न सुख उसका उसी प्रकार पीछा करता रहता है, जैसे निरंतर साथ रहने वाली मनुष्य की छाया उसका पीछा करती है। इस प्रकार बौद्ध धर्म का पवित्र ग्रंथ इस बात की शिक्षा से प्रारंभ होता है कि व्यक्ति अकुशल कार्यों को अपने मन में उत्पन्न होने पर ही सम्पन्न करता है।

इसी प्रकार बौद्ध धर्म में अहिंसा के प्रतिरूप को लेकर सम्पूर्ण बौद्ध धर्म में हिंसा को कहीं भी स्थान नहीं दिया गया है। त्रिपिटक में दीर्घनिकाय के ब्रह्मजल सुत्त में अहिंसा को स्पष्ट किया गया है।

इसमें भगवान बुद्ध ने श्रमण गौतम को दूसरे संप्रदायों के ब्राह्मणों से अलग रखा है। भगवान बुद्ध बताते हैं कि श्रमण गौतम किसी बीज या प्राणी के नाश से विरत रहते हैं। कच्चे अन्न ग्रहण से विरत रहते हैं तथा कच्चे मांस के ग्रहण से विरत रहते हैं इसी प्रकार भगवान कहते हैं कितने ब्राह्मण (ग्रहस्थों के द्वारा) श्रद्धापूर्वक दिये गये भोजन खाकर इस प्रकार के सभी बीजों और सभी प्राणी के नाश में लगे रहते हैं। जैसे मूल बीज (जिनका उगना मूलबीज से होता है स्कन्धबीज जिनका प्ररोह गांठ से होता है, (जैसे ईख) फलबीज और पांचवा अग्रबीज (ऊपर से उगता पौधा) इस प्रकार श्रमण गौतम बीज और प्राणी का नाश नहीं करते।

इसी प्रकार अहिंसा को लेकर भगवान बुद्ध ने जो बौद्ध धर्म का संविधान है उसमें अहिंसा को स्पष्ट किया जो इस प्रकार है।

विनय पिटक के अंतर्गत कई सारे नियमों का संकलन किया गया है जिनमें पाराजिक के अंतर्गत मनुष्य हत्या का नियम है। इस नियम के अंतर्गत जो भिक्षु मनुष्य को प्राण से मारे या स्व-हत्या के लिये हथियार खोज लाये, या चित्त संकल्प से अनेक प्रकार से मरने की जो तारीफ करें, या मरने के लिये प्रेरित करें तो वह भिक्षु पाराजिक का दोषी होता है, वह भिक्षु अन्य भिक्षुओं साथ सहवास करने के अयोग्य होता है।

दूसरे नियम से अंतर्गत संघादिसेस आता है इसमें आवास को लेकर नियम है कि हमें हमारे आवास ऐसे जगह वह इस प्रकार उनकी निर्मित करनी चाहिये जिसमें जीव हिंसा न हो।

अहिंसा को स्पष्ट करते हुये अगले नियम पाचित्तिय में भगवान बुद्ध स्पष्ट करते हैं जो भिक्षु जमीन खोदता है या खुदवाता है उस जमीन को खोदने पर उसमें कई जीवों की अकाल मृत्यु हो जाती है। (10)

तृण, वृक्ष आदि के गिराने में पाचित्तिय का दोष लगता है, क्योंकि उन पेड़-पौधों के नीचे गिरने उनमें रहने वाले जीव, पशु, पक्षियों का जीवन इस प्रकार नष्ट हो जाता है इसलिये जो भिक्षु इस प्रकार के कार्य करता है उसको पाचित्तिय का दोष लगता है।

आगे भगवान बुद्ध अपनी शिक्षाओं को भिक्षुओं के लिये नियमस्वरूप वर्णित करते हैं कि हरी घास पर खड़ा होना पाचित्तिय का दोषी होता है। क्योंकि उस हरी घास पर खड़े होने से उस घास में रहने वाले असंख्य जीव मर जाते हैं।

आगे भगवान बुद्ध कहते हैं कि जो कोई भिक्षु जानकर प्राणी सहित पानी से, तृण (घास) या मिट्टी को सींचे या सिंचवाये, उसे पाचित्तिय का दोष लगता है। क्योंकि ऐसा करने से उस जमीन में रहने वाले जीव उसमें दबकर मर जाते हैं।

जो कोई भिक्षु जानकर प्राणी एवं जीव को मारे, तो उसे पाचित्तिय है। इस प्रकार यह हिंसा को नियंत्रित करने के लिये भगवान बुद्ध द्वारा बनाया गया नियम था।

इस प्रकार पाचित्तिय के अंत में कोई बौद्ध भिक्षु जानकर प्राणी युक्त जल को पीये तो उसे पाचित्तिय है। इस प्रकार वह भिक्षु जाने अनजाने में हिंसा करता है इसलिये भगवान बुद्ध ने पाचित्तिय का नियम बनाया।

इस प्रकार आगे सेखीय में अहिंसा का प्रतिरूप देखने को मिलता है जो इस प्रकार है-

निरोग रहते खड़े-खड़े पिसाब पाखना नहीं करना चाहिये इससे हरियाली को नुकसान पहुंचता है तथा उसमें रहने वाले जीवों को अकाल मृत्यु का शिकार होना पड़ता है।

निरोग रहते हुये पानी में पिसाब-पाखाना नहीं त्यागना चाहिये इस प्रकार का आचरण करने पर वह भिक्षु सेखीय का दोषी होता है। इस प्रकार भगवान बुद्ध ने अहिंसा को लेकर भिक्षुओं और उपासकों के लिये नियम बनाये। जिससे समाज में एक नई क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ और समाज अपनी मुक्ति के लिये वर्षों से छट-पटा रहा था, और उस समाज को भगवान बुद्ध ने जीने का नया आधार प्रदान किया। इस प्रकार विनय-पिटक में महावग्ग में भी अहिंसा का पालान करने के नियमों का वर्णन मिलता है, जो इस प्रकार है-

सिंह, व्याघ्र, चीते के चर्म को अपने शरीर पर धारण करने का भगवान बुद्ध ने निषेध किया है जो इस प्रकार उस चर्म को धारण करने का अपराध करता है वह भिक्षु दुक्कट का दोषी होता है।

आगे वर्णन मिलता है कि मनुष्य का मांस नहीं खाना चाहिये (लोग अकाल के कारण हाथी, घोड़ा, साँप, कुत्ता, भालू, सिंह, बाघ, लकड़बग्घा का मांस खाते थे) किन्तु इस तरह के जीव जंतुओं के मांस का निषेध भगवान बुद्ध ने किया।

जानबूझकर अपने प्राणों के लिये किसी दूसरे व्यक्ति के प्राणों को लेना, यह कार्य भी भिक्षु नियम संहिता के विपरीत आचरण हैं।

भगवान बुद्ध ने हमेशा से ही मांस खाने की मनाही की थी किंतु कई लोग भी उन पर यह आक्षेप लगते हैं कि भगवान ने अपने अंतिम समय में चुंद लुहार के घर मांस खाया था किंतु यह बात पूरी तरह बौद्ध धर्म पर कालिख पोतने जैसी है, क्योंकि पहली बात भगवान बुद्ध ने हमेशा से ही जीव हत्या प्राणी हत्या का विरोध किया, तथा उसे अपने धर्म में कोई स्थान नहीं दिया।

बौद्ध धर्म में भिक्षावृत्ति के रूप में तीन घर का नियम है। अगर आपको पहले घर में मांस एवं तीसरे घर में भी मांस मिलता है, और आपको पता नहीं है तो खा सकते हैं किंतु जानबूझकर पता होने बाद मांस ग्रहण करते हैं तो आपको त्रिकोटिपरिशुद्धि का नियम लगेगा।

इसी प्रकार भगवान बुद्ध चुंद लुहार के घर जाते हैं तो चुन्द लुहार उन्हें सुकरमुद्व नामक वनस्पति खाने के लिये परोसता है, तो सुकर मद्व एक तरह की पानी में उगने वाली वनस्पति होती है, क्योंकि उस समय भगवान बुद्ध बृद्ध हो गये थे इसलिये उनको चुंद ने कोमल वनस्पति को बनाया, उसको ग्रहण करते ही भगवान ने कहा है चुंद। यह बहुत कड़वी है अतः इसे जमीन में गाढ़ दो, इस प्रकार सिद्ध होता है कि सुकरमद्व एक प्रकार एक जंगली वनस्पति थी। अगर यह सूअर का मांस होता तो पालि परंपरा में मांस शब्द के लिये मंस शब्द आया है तो स्पष्ट है की यहाँ सुकर मंस शब्द प्रयोग करने में अतिशयोक्ति न होती।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जिस प्रकार से हिंसा को वैदिक धर्म ग्रंथों में स्थान दिया गया। उसी प्रकार बौद्ध धर्म में भगवान बुद्ध ने अहिंसा की शिक्षा को सम्पूर्ण बताया। सम्पूर्ण बौद्ध साहित्य में अहिंसा का हमें वर्णन मिलता है इसलिये वर्तमान समय में अन्य धर्मों के ग्रंथों को ध्यान में रखते हुये बौद्ध धर्म ग्रंथों की शिक्षा को समाज में फैलाने की जरूरत है तभी आज का मनुष्य सही मायने में प्रगति करेगा। बौद्ध धर्म सभी कष्टों का निवारण दाता है।



तत्त्वार्थ सूत्र की दार्शनिक टीका -श्लोकवार्तिक

तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक- टीका ग्रंथों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्त्वार्थ श्लोक वार्तिक है। यह ग्रंथ आचार्य गृद्धपिच्छ के सुप्रसिद्ध तत्त्वार्थ सूत्र पर कुमारिल के मीमांसा श्लोक वार्तिक और धर्मकीर्ति के प्रमाणवार्तिक की तरह पद्यात्मक शैली में लिखा गया है। साथ ही पद्यवार्तिकों पर उन्होंने स्वयं भाष्य अथवा गद्य में व्याख्यान भी लिखा है। यह जैनदर्शन के प्रमाणभूत ग्रंथों में प्रथमकोटि का ग्रंथ है। विद्यानन्द ने इसकी रचना करके कुमारिल, धर्मकीर्ति जैसे प्रसिद्ध तार्किकों के जैनदर्शन पर किये गये आक्षेपों का उत्तर दिया है। इस ग्रंथ की समता करने वाला जैनदर्शन में तो क्या अन्य किसी भी दर्शन में एक भी ग्रंथ नहीं है।

इस ग्रंथ में आगम के मूल आप्त की सिद्धि कर पराभिमत आप्त का खण्डन किया गया है। विषय का वर्गीकरण तत्त्वार्थ सूत्र के समान ही दस अध्यायों में है। चार्वाक आत्मा का अस्तित्व न मानकर भूत चतुष्टय का अस्तित्व स्वीकार करता है। अतः विद्यानन्द ने चार्वाक का खण्डन कर आत्मतत्त्व की सिद्धि की है। यतः सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र की उत्पत्ति का स्थान आत्मा ही है। आत्मा के सद्भाव में ही मोक्ष और मोक्ष के करणीभूत तत्त्वों की सिद्धि सम्भव है।

प्रथम अध्याय में मोक्षमार्ग के निरूपण के साथ-साथ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान अवधिज्ञान मनः पर्ययज्ञान और केवलज्ञान का विस्तारपूर्वक निरूपण किया गया है।

बताया है-

ज्ञानमेव स्थिरीभूतं समाधिरिति चेन्मतम्।

तस्य प्रधानधर्मत्वे निप्रतिस्तत्क्षयाधदि॥

तदा सोपि कुतो ज्ञानादुक्तदोषानुपंगतः।

समाध्यन्तरतश्चेत्तुल्यपर्यनुयोगतः॥

स्पष्ट है कि आचार्य विद्यानन्द ने तत्त्वार्थसूत्र के प्रमेयों का अत्यन्त सूक्ष्म और विस्तृत वर्णन इस ग्रंथ में किया है। प्रथम सूत्र के वार्तिकों में मोक्षोपाय के सम्बंध में अत्यन्त गवेषणा के साथ विचार किया है। जीव का अन्तिम ध्येय मोक्ष है। बन्धनबद्ध आत्मा को मुक्ति के अतिरिक्त और क्या चाहिये? अतः मुक्ति के साधनभूत रत्नत्रयमार्ग का सुन्दर और गहन विवेचन किया है। अनन्तर सम्यग्दर्शन का स्वरूप भेद, अधिगमोपाय, तत्त्वों का स्वरूप और भेद, एवं सत्-संख्या-क्षेत्रादि तत्त्वज्ञान के साधनों पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। पश्चात् सम्यग्ज्ञान का स्वरूप, सम्यग्ज्ञान के भेद, मतिज्ञान के विषय क्षेत्र, स्वामी आदि का निर्देश किया है इस संदर्भ में सर्वज्ञसिद्धि का भी प्रकरण आया है, जिसमें मीमांसक द्वारा उठाई गयी

शंकाओं का समाधान भी किया है।

श्रुतज्ञान ब्राह्म अर्थों को किस प्रकार विषय करता है इस आशंका का उत्तर देते हुये आचार्य विद्यानंद ने लिखा है -

श्रुतेनार्थ परिच्छिन्ना वर्तमानो न बाह्यते।

अक्षजैनैव तत्तस्य बाह्यार्थालंबना स्थितिः ॥

सामान्यमेव श्रुतं प्रकाशयति विशेषमेव परस्परनिरपेक्षमुपयमेवेति वाशंकामपा करोति।

अनेकान्तात्मकं वस्तु संप्रकाशयति श्रुतं।

सदबोधत्वाद्ययाक्षेत्थबोध इत्युपपत्तिमत् ॥

नयेन व्यभिचारश्चेत्र तस्य गुणभावतः।

स्वगोचरार्थधर्माण्यधर्मार्थप्रकाशनात् ॥

श्रुतस्तयावस्तुवेदित्वे परप्रत्यायनं कुतः।

संवृतेश्चेद् वृभैवेषा परमार्थस्य निश्चितेः ॥

ननु स्वतः एवं परमार्थव्यवस्थितः कुतश्चिदविद्याप्रक्षयान्न पुनः श्रुतविकल्पात्। तदुक्तं शास्त्रेषु प्रक्रियाभेदेरविद्यैवोपवर्त्यते। अनागमविकल्पा हि स्वयं विद्योपवर्तत इति तदयुक्त परेष्ठतत्त्वस्याप्रत्यठाविषयत्वात्तद्विपरीत्याने कान्तात्मनो वस्तुनः सर्वदा परस्याप्यवभासनात् लिंगस्य त्वस्याङ्गीकारणीयत्वात् ॥

अर्थात् श्रुतज्ञान द्वारा अर्थ की परिच्छिति कर प्रवृत्ति करने वाला पुरुष अर्थक्रिया करने में उसी प्रकार बाधा नहीं प्राप्त करता है, जिस प्रकार इन्द्रिजन्य मतिज्ञान द्वारा अर्थ को अवग्रह कर प्रवृत्ति करने वाला पुरुष बाधा को प्राप्त नहीं करता है। विशेष का प्रकाशन करता है या निरपेक्ष दोनों का प्रकाशन करता है ? इस शंका का सामान्यविशेषात्मक अनेकान्तरूप वस्तु को श्रुतज्ञान अवगत करता है। जिस प्रकार इन्द्रियों से उत्पन्न हुआ सांख्यवहारिक प्रत्यक्षज्ञान अनेकान्तात्मक अर्थ का प्रकाशन करता है, उसी प्रकार श्रुतज्ञान सामान्यविशेषात्मक वस्तु को प्रकाशित करने में समर्थ रहता है। अतः अनेकान्तात्मकं वस्तु श्रुतं प्रकाशयति सरबोधत्वात् यह अनुमान समीचीन है।

इसका नय के साथ भी दोष नहीं है, क्योंकि नयज्ञान मुख्यरूप से एक धर्म को जानता है, पर गौरुरूप से वस्तु के अन्य धर्मों का भी वह ज्ञाता है। अतः श्रुतज्ञान का नयज्ञान के साथ दोष नहीं आता।

यति श्रुतज्ञान को वस्तुभूत पदार्थ का ज्ञायक नहीं माना जाये तो प्रतिवादी या शिष्यों को स्वकीय तत्त्वों का ज्ञान किसी प्रकार कराया जा सकेगा। अतएव श्रुतज्ञान द्वारा ज्ञात वस्तु प्रमाणभूत है। इस प्रकार विद्यानंद ने तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक में प्रमेयों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

औषधीय उपयोग- शतावरी

✽ डॉ. आशा जैन, इंदौर ✽

1. शतावर एक बलवीर्य वर्द्धक एवं सौन्दर्य वर्द्धक औषधि है। यह उत्तम रसायन है। शतावरी चूर्ण नित्य 5-5 ग्राम सुबह शाम दूध के साथ सेवन करें।
2. ताली शतावरी 30 ग्राम सिल पर चटनी के समान पीसकर 200 ग्राम मिश्री मिश्रित दूध के साथ मिलायें। केशव 1 मिलीग्राम, जायफल 50 मिलीग्राम, जावित्री 10 मिलीग्राम, छोटी इलायची 10 मिलीग्राम मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से सभी प्रकार के रक्त विकाय चर्मरोग फोड़े फुन्सियाँ, मुहासे, एक्जिमा, दादा, खाज, खुजली, पेशाब में जलन, सनवार्म, पेट में छाले, मुख में छाले, पेशाब में जलन, सीने में जलन, एसीडिटी आदि में बहुत लाभ होता है। यह पेय बलवीर्य एवं सौन्दर्य वर्द्धक है। किसान भाई जब शतावरी उगाते हैं तो उन्हें ताजी शतावरी प्राप्त होती है। यह पेय घर के सभी सदस्यों को अवश्य पीना चाहिये इसके प्रयोग से रक्त को दूषित करने वाले सभी विष समापत होकर मूत्र मार्ग द्वारा बाहर निकल जाते हैं। रक्त शुद्ध हो जाता है। मलेरिया, टायफाइड, निमोनिया, टीबी आदि के मरीज भी इसे ले सकते हैं। रोग ठीक होने के पश्चात भी यह पेय 3-4 माह लगातार लेने से लाभ होता है।
3. बन्धत्व में भी यह पेय लाभदायक है। इससे गर्भाशय एवं बीजाशय की विकृति दूर होकर गर्भधारण होता है।
4. अनिद्रा, हिस्टीरिया, चेचक (मसूरिका) में भी यह पेय लाभप्रद है।
5. स्तन्य दुग्ध वर्द्धक है।
6. गर्भवती स्त्रियों को लाभप्रद है।
7. प्रदर रोग (श्वेत प्रदर, रक्त प्रदर) में लाभप्रद है।
चाय के स्थान पर नित्य इसका सेवन लाभप्रद है। यदि ताजी शतावरी की जगह शतावरी चूर्ण का उपयोग कर सकते हैं। सूखी शतावरी के चूर्ण के रात्रि में पानी में निगोकर कर उपरोक्त काढ़ा बनाकर भी उपयोग कर सकते हैं।
8. शतावरी एवं अश्वगंधा (असंगंध) बराबर लेकर चाहिये चम्मच सुबह शाम दूध के साथ सेवन करें। पित्त विकार नाशक, स्तन्य वर्द्धक।
9. बलवर्द्धक लड्डू- उड़द दाल 500 ग्राम सूखा पीसे या रात्रि में भिगों दे सुबह मिक्सी में पीसकर घी डालकर भूने। अच्छी तरह से सिक जाने पर शतावरी 50 ग्राम अश्वगंधा 50 ग्राम कौच बीज 500 ग्राम, सफेद मूसली 50 ग्राम, इलायची 20 ग्राम, केशर 50 मिलीग्राम, सबका कपड़धान चूर्णकर शक्कर का बूरा मिलाकर लड्डू बनायें। गोंद को घी में तलकर कूला बनाकर मिलाने से स्वाद एवं गुण दोनों ही बढ़ जाते हैं। ये लड्डू उड़द की दाल की जगह आटे की भी बनायें जा सकते हैं। उड़द की दाल वलवर्द्धक है ठंड के दिनों में 1-1 लड्डू सुबह खाली पेट खाकर गर्म दूध पियें। सभी के लिये लाभप्रद है।

करियर



वीडियो सम्पादन में रोजगार के अवसर

आज के समय में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और मनोरंजन जगत का विस्तार बहुत तेजी से हो रहा है, ऐसे समय में वीडियो एडिटिंग करियर में एक अच्छा विकल्प बन रहा है। एक वीडियो एडिटर के रूप आप अच्छी इनकम प्राप्त कर सकते हैं, इसमें आपको मोशन पिक्चर, केबल या ब्रॉडकास्ट विजुअल मीडिया इंडस्ट्री के लिये साउंडट्रैक, फिल्म और वीडियो का संपादन का कार्य करना होता है, इसमें कई वीडियो की क्लिप को जोड़कर एक बड़ा वीडियो को बनाया जाता है।

कार्य: किसी भी फिल्म को बनाने में उसमें प्रयोग हुई रॉ फुटेज शूट के संपादन को एक अच्छे वीडियो एडिटर द्वारा कराया जाता है, आधुनिक वीडियो डिजिटल कैमरे के पहले फिल्म फुटेज को असली स्ट्रिप्स पर शूट किया जाता था, उस समय स्ट्रिप्स को हाथ से काटना पड़ता था और कई दृश्यों को एक साथ जोड़ना पड़ता था। एक वीडियो एडिटर को घंटों तक निर्देशक या निर्माता के साथ बैठकर रॉ फुटेज को देखना होता है, इसके बाद यह निर्धारित करना होता है किस दृश्य को रखना और किस दृश्य को हटाना है।

योग्यता: 12वीं के बाद सर्टिफिकेट, स्नातक, डिप्लोमा और पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा

कोर्स: भारत के लगभग सभी प्रतिष्ठित फिल्म संस्थानों में वीडिया या फिल्म एडिटिंग का कोर्स करवाया जाता है, यह कोर्स सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा स्तर के होते हैं, इन कोर्स में फिल्म एडिटिंग में नॉ-लीनियर एडिटिंग, प्रोफेशनल एडिटिंग, कैमरा बेसिक्स, ग्राफिक्स और स्पेशल इफेक्ट जानकारी देना होता है। वीडियो एडिटिंग के अंडरग्रेजुएट कोर्स में प्रवेश के लिये छात्र को बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण होना अनिवार्य है, पीजी डिप्लोमा कोर्स में प्रवेश के लिये उस संकाय में स्नातक होना अनिवार्य है, वीडियो एडिटर के असिस्टेंट के लिये केवल स्नातक होना चाहिये।

प्रमुख संस्थान: एफ.टी.आई.आई, पूणे

सत्यजीत रे इंस्टीट्यूट, कोलकाता

एशियन एकेडमी, नोएडा

रोजगार के अवसर: भारत में प्रत्येक वर्ष 1000 से भी अधिक फिल्मों का निर्माण होता है, इस संख्या को देखते हुये भारत को अधिक फिल्म बनाने वाले देशों की श्रेणी में रखा जाता है, किसी भी फिल्म के निर्माण में उसकी एडिटिंग एक महत्वपूर्ण भूमिका रखती है, इसलिये कुशल वीडियो एडिटर की मांग बढ़ती जा रही है, आप एक वीडियो एडिटर के रूप में फ्यूचर या नॉन फ्यूचर फिल्मों, डॉक्यूमेंटी, विज्ञापनों और टीवी कार्यक्रमों में रोजगार प्राप्त कर सकते हैं, फिल्म निर्माण के क्षेत्र में आप असिस्टेंट एडिटर से एडिटर के पद तक प्रोन्नति प्राप्त कर सकते हैं, इसके अतिरिक्त आप किसी फिल्म स्कूल टेक्निकल स्कूल या यूनिवर्सिटी में पढ़ाने का कार्य कर सकते हैं।

वेतन: फ्रेशर के रूप में इस क्षेत्र में 7000-10000 रुपये तक प्राप्त कर सकते हैं दो से तीन साल के पश्चात आप 15,000 से 25,000 तक प्राप्त कर सकते हैं।

दुनिया भर की बातें



■ 1 अप्रैल

- भाजपा ने पहली बार असम, त्रिपुरा और नागालैण्ड में एक-एक सीट जीतने के बाद राज्यसभा में 100 सदस्य होने की उपलब्धि हासिल की है।

- यूक्रेन ने रूस में घुसकर उसके तेल डिपो पर हमला किया।

- मार्च में जीएसटी कलेक्शन 1.42 लाख करोड़ यह रिकार्ड तोड़।

■ 2 अप्रैल

- श्रीलंका में राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे ने आपातकाल लगा दिया।

- मध्यप्रदेश का निर्यात 60 हजार करोड़ रुपये के पार कर गया।

- आर्यन खान ड्रग्स केस में नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) के अहम गवाह प्रभाकर सैल 37 की हार्टअटैक से मौत होगई।

■ 3 अप्रैल

- इस्लामाबाद: प्रधानमंत्री इमरान खान की सिफारिश पर राष्ट्रपति ने नेशनल असंबेली को भंग किया।

- अफगानिस्तान में सत्तारूढ़ तालिबान ने अफीम की खेत पर प्रतिबंध लगाने की

घोषणा की।

- राजधानी कीव के नजदीक बूचा और कुछ अन्य कस्बों-गांवों में नागरिकों के शव मिलने से यूक्रेन में रूसी सेना के कृत्य की भर्त्सना शुरू हुई।

■ 4 अप्रैल

- शोपियां में आतंकियों ने कश्मीरी पंडित को तीन गोली मारी, घायल।

- दो साल लम्बे अंतराल के बाद डिजिटल मोड में चल रहे सुप्रीम कोर्ट में फिर से फिजिकल सुनवाई शुरू हुई।

- छह नये राज्यसभा सदस्य नागालैंड से पहली महिला कोन्यक नागालैंड से राज्यसभा पहुँचने वाली पहली महिला हैं।

■ 5 अप्रैल

- लंदन बीबीसी: कैब्रिज यूनिवर्सिटी की लाइब्रेरी से 22 साल पहले चोरी हुई विज्ञान अनुसंधानकर्ता चार्ल्स डार्विन की नोट बुक्स यूनिवर्सिटी को वापस मिली।

- देश में आने वाले दिनों में चार्टर्ड अकाउंटेंट ओर कंपनी सेक्रेटरी के लिये भी विधेयक पर संसद की मुहर लग गई।

- सुप्रीम कोर्ट ने अविश्वास प्रस्ताव पर नेशनल असंबेली की कार्यवाही की रिकार्डिंग मांगी।

■ 6 अप्रैल

- सीबीआई ने महाराष्ट्र के पूर्व गृहमंत्री अनिल देशमुख को 100 करोड़ रुपये वसूली मामले में हिरासत में लिया।

- मुंबई: देश में कोरोना वायरस का नया वैरियंट एक्सई ने दस्तक दे दी है।

- कांग्रेस के नेता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री भरत

सिंह सोलंकी ने याचिका लगाकर पत्नी रेश्मा पटेल से तलाक की गुहार लगाई।

■ 7 अप्रैल

- पाकिस्तान के सुप्रीम कोर्ट ने सर्वसम्मति से डिप्टी स्पीकार द्वारा नेशनल असंबेलेली (संसद) करने की कार्यवाही को खारिज करते हुये संसद को फिर से बहाल कर दिया।

- अमरनाथ यात्रा से पहले जम्मू का माहौल खराब करने की आतंकियों की बड़ी साजिश सुरक्षा बलों ने नाकाम कर दी।

- अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के प्रस्ताव पर संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (यूएन एचआरसी) से रूस को निलंबित कर दिया।

■ 8 अप्रैल

- राज्य सरकारों द्वारा न्यायपालिका को बदनाम करने के प्रयासों पर सुप्रीम कोर्ट के चीफ (जस्टिस) (सीजेआई) एनवी रमना ने चिंता जाहिर की।

- मुंबई के 26/11 हमले में सरगना सईद को पाकिस्तान की आतंकरोधी अदालत ने 32 साल की सजा सुनाई है।

- पीएम नरेन्द्र मोदी के साथ म.प्र. से राज्यसभा सांसद सुमेर सिंह सोलंकी और उनके परिवार की संसद भवन में हुई मुलाकात के बाद सबकी नजरें उन पर टिक गई।

■ 9 अप्रैल

- मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि भू माफिया से मुक्त कराई गई 2243.80 एकड़ जमीन पर जल्द ही गरीबों को बसाया जायेगा।

- हाफिज सईद का बेटा तल्हा आतंकी घोषित किया गया।

- जम्मू कश्मीर के श्रीनगर में भारत विरोधी नारेबाजी मामले में पुलिस ने 13 लोगों को गिरफ्तार किया है।

■ 10 अप्रैल

- इटारसी (नर्मदा पुरम) प्रदेश में ब्रिटिश काल के सुखतवा पुल 127 टन वजनी टूटने के भार से ढह गया।

- पाकिस्तान में इमरान खान की सरकार गिर गई।

- कनाडा से एमबीए कर रहे गाजियाबाद के छात्र कार्तिक वासुदेव की आठ गोलियां मारकर हत्या कर दी गई।

■ 11 अप्रैल

- आंध्र: जगनमंत्रिमंडल का पुनर्गठन 25 ने ली शपथ।

- पीएमएलएन नेता और पूर्व पीएम नवाज शरीफ के भाई शहबाज शरीर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बन गये।

- उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद की इंदिरापुरम की झुगियों में आग लग गई आग पास में स्थित एक गौशाला तक पहुँच गई जिसके कारण 49 गायों की मौत हो गई।

■ 12 अप्रैल

- शिवपुरी में तीन धमाके घर में आतिशबाजी के लिये रखी बारूद फटी 5 की मौत।

- देवघर के त्रिकुट पर्वत पर रोपवे ट्रालियों में फंसे 50 में से 46 लोगों को बचा लिया गया हादसे में 4 लोगों की मौत हो गई।

- विमानवाह युद्धपोत आईएनएस विक्रान्त के लिये कथित तौर पर जुटाए 57 करोड़ रुपये के गवन मामले में केस दर्ज होने

के बाद भाजपा नेता किरीट सौमैया और उनके बेटे नील का पता नहीं है।

■ 13 अप्रैल

- प्रवर्तन निर्देशालय (ईडी) ने चीन की मोबाईल उत्पादक कंपनी शाओमी के ग्लोबल वाइस प्रेसिडेंट मनु कुमार जैन को पूछताछ के लिये बुलाया गया।

- कर्नाटक के वरिष्ठ मंत्री आर. ईश्वरप्पा पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाने वाले 37 वर्षीय ठेकेदार की मौत के मामले में आत्महत्या के लिये उकसाने का मामला दर्ज।

- रूसी सेना ने मारीपोल के बंदरगाह पर कब्जा कर लिया।

■ 14 अप्रैल

- नर्मदापुरम हरदा स्टेट हाइवे डोलरिया तहसील स्थित गाम रतवाडा के पास ऑटो पर केले से भरा ट्रक पलट गया, जिससे ऑटो में सवार मां बेटी और बेटे की मौत हो गई।

- कालासागर में लंगर डाले रूसी विध्वंसक पोत मस्कवा अचानक धूँ-धूँ कर जल उठा।

- शोपियां में चार घंटे में लश्कर के चार आतंकी ढेर।

■ 15 अप्रैल

- रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध के बीच भारत को रूस से एस-400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम की नई खेप मिली।

- यरूशलम: अल अक्सा मस्जिद में इजरायली पुलिस से झड़प में 117 फिलीस्तीनी लोग जखमी हो गये।

- तमिलनाडु के मदुरई स्थित मीनाक्षी सुदेश्वर मंदिर का चिथिराई थेरोट्टस (रथ उत्सव) आयोजित किया गया।

■ 16 अप्रैल

- नये मुख्यमंत्री के लिये हुये चुनाव में पीएमएल नवाज की पार्टी के हमजा शहबाज नये मुख्यमंत्री चुने गये हैं।

- पश्चिम बंगाल में आसनसोल लोकसभा सीट से तृणमूल के शत्रुघ्न सिन्हा ने भाजपा की अग्रिमित्रा पॉल को 3 लाख वोट से हराया।

- केरल के पलक्कड़ जिले में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के श्री निवासन की हत्या कर दी गई।

■ 17 अप्रैल

- राजधानी दिल्ली के जहांगीरपुर में हनुमान जन्मोत्सव पर पथराव के बाद भड़की हिंसा पर काबू पा लिया।

- सुप्रीम कोर्ट अपने फैसले में कह चुका है कि जबरदस्ती ऊँची आवाज यानी तेज शोर सुनने को मजबूर करना मौलिक अधिकार का हनन है।

- राष्ट्र विरोध गति विधियों में संलिप्त होने के मामले में (एनआइए) और (एसआईए) की संयुक्त टीम ने फहदशाह के कार्यालय और घर में छापेमारी की।

■ 18 अप्रैल

- मुम्बई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्लू) ने विमानवाहक पोत विक्रान्त को बचाने के लिये इकट्ठा किये गये चंदे को लेकर भाजपा नेता किरीट सौमैया से पूछताछ की।

- श्रीलंका के राष्ट्रपति ने 17 मंत्रियों की नई कैबिनेट का किया गठन।

- लेफ्टिनेंट जनरल मनोज पांडे देश के अगले थल सेना प्रमुख होंगे।

■ 19 अप्रैल

- काबुल: पश्चिमी इलाके में आतंकियों ने स्कूलों पर हमला किया एक के बाद एक तीन धमाकों में 20 बच्चों की मौत हो गई।

- इस्लामाबाद: पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के मंत्रिमंडल के 34 सदस्यों ने शपथ ली।

- आर्थिक संकट के बीच श्रीलंका में प्रधानमंत्री महिंद्रा राजपक्षे ने देश के संविधान में संशोधन करने का प्रस्ताव रखा।

■ 20 अप्रैल

- देश के कई राज्यों के बाद राजधानी दिल्ली के जहांगीरपुरी में भी शोभायात्रा पर हमला करने वाले उपद्रवियों के खिलाफ बुलडोजर चला।

- उत्तरप्रदेश सरकार के धर्मस्थलों के अंदर ही लाउडस्पीकर बजाने के आदेश के बाद श्रीकृष्ण जन्मस्थान प्रबंधन ने मंदिर के शिखर पर लगा लाउडस्पीकर बन्द कर दिया।

- मुंबई के मझगांव डाक शिपयार्ड में भारतीय नौ सेना की स्कार्पिन श्रेणी की पनडुब्बी वगशीर का जलावतरण किया गया।

■ 21 अप्रैल

- गुजरात के कच्छ का गांधीधाम के पास स्थित कंटेनर फ्रंट स्टेशन (सीएफएस) में रखे कंटेनर्स से 300 किग्रा. हेरोइन बरामद हुई हैं। इसकी कीमत 2100 करोड़ रुपये आंकी गई है।

- तेलंगाना के निजामाबाद में इलेक्ट्रिक स्कूटर की बैटरी फटने से एक 80 साल के व्यक्ति की मौत हो गई।

- असम पुलिस ने गुजरात के निर्दलीय विधायक जिग्नेश मेवानी को गुजरात के

बनासकांठा जिले के पालनपुर से देर रात गिरफ्तार कर लिया।

■ 22 अप्रैल

- इंडोनेशिया ने अपने देश में ही इसकी किल्लत के चलते निर्यात पर प्रतिबंध लगा लिया।

- मुठभेड़ में सी आई एस एफ के ए.एस आई शंकर प्रसाद पटेल शहीद हो गये और नौ जवान घायल हो गये।

- नीति आयोग के उपाध्यक्ष राजीव कुमार ने इस्तीफा दे दिया।

■ 23 अप्रैल

- आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में के.शिव कुमार (40) स्कूटर की बैटरी को कमरे में चार्जिंग के लिये लगाया था उसमें विस्फोट होने से उनकी मौत हो गई।

- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीआई) ने कक्षा 11 और 12 के इतिहास और राजनीति विज्ञान के पाठ्यक्रम से गुटनिरपेक्ष आंदोलन शीतयुद्ध का दौर इस्लामी साम्राज्यों के उदय मुगल दरबारों के इतिहास के अध्याय हटा दिये हैं।

- जम्मू कश्मीर: कुलगाम में मुठभेड़ मारा गया पाकिस्तानी आतंकी।

■ 24 अप्रैल

- पाकिस्तान की सीमा से 25 किलोमीटर दूर से प्रधानमंत्री देश को संबोधित कर रहे।

- म.प्र. में अब प्री-नर्सरी, नर्सरी, केजी कक्षाएँ संचालित करने के लिये मान्यता लेनी जरूरी होगी।

- श्रीनगर: सुरक्षाबलों ने दक्षिण कश्मीर के पुलवामा जिले के पाहू में द रिजिस्टेंस फ्रंट के तीन आतंकियों को मार गिराया।

■ 25 अप्रैल

- भारतीय तट रक्षक बल ने गुजरात तट के पास अरब सागर में तड़के पाकिस्तानी नौका से 280 करोड़ रुपये की 56 किलो हेराईन जब्त की।

- देशभर में अवैध कॉलोनियां बढ़ने पर सुप्रीम कोर्ट ने चिंता जताई।

- फ्रांस में हुये राष्ट्रपति चुनाव में मौजूदा राष्ट्रपति इमानुएल मैक्रों जीत गये।

■ 26 अप्रैल

- मवेशियों को सड़क या सार्वजनिक स्थान पर खुला छोड़ा तो एक हजार जुर्माना म.प्र. नगर पालिका विधि संसोधन अध्यादेश के प्रारूप को कैबिनेट की मंजूरी दी।

- प्रशांत किशोर ने भी कांग्रेस में शामिल होने के सानिया गांधी के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

- यूक्रेन के साथ युद्ध के बीच रूस ने परमाणु युद्ध की चेतावनी दी।

■ 27 अप्रैल

- ने पी.ता. म्यांमार की पूर्व नेता आंगसान सू की कोर्ट ने भ्रष्टाचार का दोषी ठहराया उन्हें 5 साल की सजा सुनाई।

- तंजावुर: तमिलनाडु स्थित तंजावुर जिले के कालिमेडु ने संत अप्पर तिरुनावुकरसार मंदिर की रथयात्रा के दौरान हाईटेशन लाइन की चपेट में आने से 11 लोगों की मौत हो गई 15 घायल हैं।

- पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के प्रमुख बिलावल ने विदेश मंत्री पद की शपथ ली।

■ 28 अप्रैल

- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सर संघचालक मोहन भागवत ने कहा है कि हिंसा से

किसी को फायदा नहीं होता।

- सोदबी की नीलामी में दुनिया का सबसे बड़ा ब्लू डायमंड 437 करोड़ रुपये में बिका।

- भोपाल: कांग्रेस के केन्द्रीय नेतृत्व ने पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ का नेता प्रतिपक्ष पद से इस्तीफा स्वीकार कर लिया है।

■ 29 अप्रैल

- 10वीं में छतरपुर जिले की नैन्सी दुबे ओर सतना की सुचिता पाण्डे ने 496 अंक लाकर प्रदेश में संयुक्त रूप से प्रथम स्थान हासिल किया।

- मध्य प्रदेश में गर्मी के तेवर तीखे हो गये प्रदेश में सबसे अधिक 46.2 डिग्री सेल्सियस तापमान नौगांव में दर्ज किया गया।

- नई दिल्ली- बिजली का उत्पादन करने वाली कंपनियों तक तेजी के साथ कोयला पहुँचाने के लिये भारतीय रेल्वे ने कई पेसेन्जर ट्रेनों का संचालन रद्द करने का फैसला किया।

■ 30 अप्रैल

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट में अंग्रेजी में कार्यवाही और आदेशों से आम जनता को समझने में होने वाली दिक्कतों को हल करने और व्यवस्था को सरल बनाने के लिये स्थानीय भाषा को प्रोत्साहन देने की पैरवी की।

- मद्रास हाईकोर्ट ने पेड़ पौधों समेत प्राकृतिक संसाधनों के महत्व को रेखांकित करते हुये प्रकृति को जीवित व्यक्ति का दर्जा दिया।

- पाकिस्तान नेशनल असंबेलेली स्पीकर ने हमजा को पंजाब के मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई।

इसे भी जानिये

स्वतंत्रता में पत्रिकाओं की भूमिका

क्र.	पुस्तके / पत्र	लेखक / सम्पादक
01.	मराठा	बाल गंगाधर तिलक
02.	यंग इंडिया (पत्र)	महात्मा गांधी
03.	दादा कामरेड	यशपाल
04.	इस्ट गुफ्लर (पत्र)	दादा भाई नौरोजी
05.	लीडर (पत्र)	मदन मोहन मालवीय
06.	सोम प्रकाश	ईश्वरचन्द्र विद्यासागर
07.	सत्यार्थ प्रकाश	दयानन्द सरस्वती
08.	संपादकौमुदी (पत्र)	राजा राममोहन राय
09.	हिन्दू स्वराज	महात्मा गांधी
10.	हिन्दुस्तान (पत्र)	मदन मोहन मालवीय
11.	हम दर्द (पत्र)	मुहम्मद अली
12.	हरिजन (पत्र)	महात्मा गांधी
13.	न्यू इंडिया	श्रीमति एनी बीसेन्ट
14.	नेशन (पत्र)	गोपाल कृष्ण गोखले
15.	सोजे वतन	मुन्शी प्रेमचन्द्र
16.	बंगाली (पत्र)	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी
17.	कॉमन नील (पत्र)	श्रीमती बीसेन्ट
18.	हिन्दू पेट्रियॉट	हरिश्चन्द्र मुखर्जी
19.	नील दरपण नाटकम्	दीनबन्धु मित्रा
20.	भारती	द्विजेन्द्रनाथ टैगोर
21.	सुधारक	अगरकार
22.	बाम्बे हॉनिकल	फिरोजशाह मेहता
23.	भारत में अंग्रेजी राज्य	सुन्दर लाल
24.	होम एण्ड द वर्ल्ड	रवीन्द्र नाथ टैगोर
25.	हिट्स फॉर सेल्फ कल्चर	लाला हरदयाल
26.	माई एक्सपेरीमेन्ट विद टुथ	महात्मा गांधी
27.	गुबारे खाति	मौलाना अबुल कलाम आजाद
28.	युगान्तर (पत्र)	भूपेन्द्र दत्त
29.	द बार ऑफ इण्डियन इण्डिपेंडेस	वी.डी. सावरकर



दिशा बोध

निरुपयोगी धन



1. जिस आदमी ने अपने घर में ढेर की ढेर सम्पत्ति जमा कर रखी है, पर उसे सदुपयोग में नहीं लाता, उसमें और मुर्दे में कोई अन्तर नहीं है; क्योंकि उससे कोई लाभ नहीं उठाता।
2. वह कंजूस आदमी, जो समझता है कि धन ही संसार में सब कुछ है और इसलिए बिना किसी को कुछ दिये ही उसे जमा करता है, वह अगले जन्म में राक्षस होता है।
3. जो लोग धन के लिए सदा ही हाय-हाय करते रहते हैं, पर यशोपार्जन करने की परवाह नहीं करते; उनका अस्तित्व पृथ्वी के लिए केवल भार-स्वरूप है।
4. जो मनुष्य अपने पड़ोसियों के प्रेम को प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करता, वह मरने के पश्चात् अपने पीछे कौन-सी वस्तु छोड़ जाने की आशा रखता है?
5. जो लोग न तो दूसरों को देते हैं और न स्वयं ही अपने धन का उपयोग करते हैं, वे यदि करोड़पति भी हो, तब भी वास्तव में उनके पास कुछ भी नहीं है।
6. संसार में ऐसे भी कुछ आदमी हैं जो धन को न तो स्वयं भोगते हैं और न उदारतापूर्वक योग्य पुरुषों को प्रदान करते हैं; वे अपनी सम्पत्ति के लिए रोग-स्वरूप हैं।
7. जो अधिक आवश्यकता वाले को दान देकर उसकी आवश्यकता को पूर्ण नहीं करता; उसकी सम्पत्ति उस लावण्यमयी ललना के समान है, जो अपने यौवन को एकान्त निर्जन स्थान में व्यर्थ गँवा देती है।
8. जिसे लोग प्यार नहीं करते उस आदमी की सम्पत्ति गाँव के बीचोंबीच किसी विष-वृक्ष के फलने के समान है।
9. धर्माधर्म का विचार न रखकर और अपने को भूखों मारकर जो धन जमा किया जाता है, वह केवल दूसरों के ही काम आता है।
10. उस धनवान् मनुष्य की क्षीणस्थिति, जिसने दान दे कर अपने खजाने को खाली कर डाला है और कुछ नहीं, केवल जल बरसाने वाले बादलों के खाली हो जाने के समान है। वह स्थिति अधिक समय तक नहीं रहेगी।

निश्चय प्रत्याख्यान और नियमसार

✽ एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज ✽

प्रत्याख्यान का तात्पर्य त्याग है भविष्य के विषय भोगों का त्याग करना प्रत्याख्यान कहलाता है प्रत्याख्यान मुनि की चर्चा का चतुर्थ आवश्यक है आचार्य कुन्दकुन्द देव ने इसकी चर्चा नियमसार पवित्र ग्रंथ में छठवें अधिकार में की है। बारह गाथाओं के माध्यम से प्रत्याख्यान स्वरूप का विशद विवेचन किया गया है इस विवेचन में व्यवहार नय की अपेक्षा से प्रत्याख्यान का स्वरूप बताते हुये कहा गया है कि मुनि दिन में भोजन करके योग्य काल पर्यंत अन्न पान खाद्य और लेह्य भोजन का त्याग कर देते हैं यह व्यवहार प्रत्याख्यान का स्वरूप है तथा निश्चयनय से शुभ और अशुभ समस्त वचन व्यवहार का त्याग करके शुद्ध ज्ञान की भावना करते हुये नवीन शुभ अशुभ कर्मों का संवर करने का नाम निश्चय प्रत्याख्यान है अथवा कर्मों का संवर करने का काम वह निश्चय प्रत्याख्यान है आत्मा को छोड़कर के सभी पर पदार्थों का जब जीव त्याग करता है तो उस समय आत्मज्ञान ही निश्चय प्रत्याख्यान कहलाता है। केवलज्ञान, केवलदर्शन, केवलसुख और केवलवीर्य स्वरूप आत्म तत्त्व का अनन्तचतुष्टय के निज स्वभाव का चिंतन करते हुये जब साधक यह विचार करने लगता है कि निजभाव का त्याग नहीं किया जा सकता है। परभाव या पदार्थ का ग्रहण नहीं किया जा सकता है ज्ञानी जीव ही सच्चे प्रत्याख्यान को प्राप्त करता है।

प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बंध से रहित आत्म तत्त्व का चिंतन करना ही प्रत्याख्यान की ओर सशक्त कदम बढ़ाना है प्रत्याख्यान विभाव परिणाम के त्याग विधि रूप होता है। उन विभाव परिणामों का विसर्जन करता ही प्रत्याख्यान की सहज भूमिका है ममत्व को छोड़कर निर्ममत्व होते हुये आत्मा ही मेरा अवलम्बन है ऐसा चिंतन करते हुये शरीर और शरीर संबंधियों का त्याग कर देने का नाम श्रेष्ठ प्रत्याख्यान है।

जब जीव यह चिंतन करता है कि मेरे ज्ञान में आत्मा है मेरे दर्शन में आत्मा है मेरे चारित्र में आत्मा है मेरे प्रत्याख्यान में आत्मा है और मेरे संवर योग में भी आत्मा है अर्थात् मेरा आत्मा ही सब कुछ, आत्मा के सिवा अन्य किसी से संबंध स्थापित करना मोह के सिवा कुछ नहीं है, क्योंकि जीव अकेला ही मरता है, अकेला ही जीवन जीता है और अकेला ही सिद्धत्व को प्राप्त करता है। एक अकेली ही आत्मा ज्ञान दर्शन, लक्षण से शाश्वत स्वरूप होता है। तथा आत्मा को छोड़कर के शेष समस्त पदार्थ जो भी बाहरी रूप है वे सब संयोग लक्षण है और संयोग से ही जीव को अनेक प्रकार के दुख की प्राप्ति होती है।

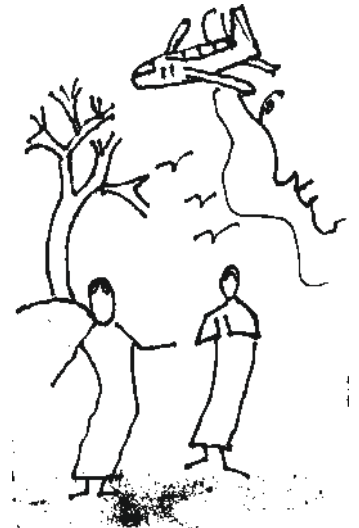
जब यह जीव तीन प्रकार से (मन, वचन, काय) से सभी दुश्चरित्र को छोड़ता है तभी वह सामायिक को प्राप्त होता है और विकल्पों से मुक्त होकर निर्विकल्प दशा को प्राप्त हो जाता है आश को त्यागकर जब यह जीव चिंतन करता है कि मेरा किसी भी प्रकार से किसी भी जीव से कोई बैर नहीं है मेरा सब प्राणियों में समताभाव है उसी समय होने वाली भावों की शुद्धि समाधि में परिणत हो जाती है। कषाय रूपी हाथी को जिसने वश में कर लिया है ऐसा सूरवीर व्यवसायी संसार के दुःखों से भयभीत होकर निश्चय प्रत्याख्यान को प्राप्त करता है यह निश्चय प्रत्याख्यान सुखमय होता है।

इस प्रकार भेदज्ञान का अभ्यास करते हुये जीव और कर्म को पृथक-पृथक अनुभव करते हुये मोक्षमार्ग का साधक अभेद रत्नत्रय की अनुभूति करने के लिये परम संयम को धारण करते हुये निश्चय प्रत्याख्यान को प्राप्त करता है समस्त साधना को आत्म केन्द्रित कर लेना ही सचमुच में प्रत्याख्यान है ऐसा प्रत्याख्यान ही जीव को निर्विकल्प बनाते हुये ही सार्थक बना देता है अतः पर वस्तुओं का त्याग करना तब संभव होता है जब ज्ञानी आत्म स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

कविता

कुहासा

रत्नत्रय सूर्य को ढकने वाला छाया विघ्न कुहासा है।
आज हुआ विश्वास विषैला, आशा रहित निराशा है।
रक्त समुन्दर पीने पर भी बिना नीर कब प्यास बुझी है।
बिन जल मानव जीवन सूना जीवन हुआ तमाशा है।
दोजख दुख है, सुख है जन्नत जीवन में दोनों हैं साथ।
मानव जीवन बदला है तो बदली ये परिभाषा हैं।
स्वार्थ समर का योद्धा देखो स्वयं अहं से हारा है।
चेहरे की रौनक चली गई सब छाई फकत हताशा है।



कहानी

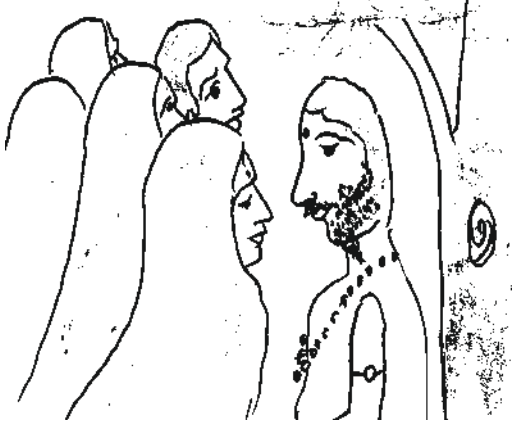
नकली बेटा

लेखक: ऐलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

प्रभात की बेला में जब सूरज अंगड़ाई लेकर आगे बढ़ रहा था तब ऐसा लग रहा था कि जैसे वह काले मेघ की रजाई को हटाकर ठंड के वातावरण से दुनिया को झांक के देख रहा

हो जैसे कोई बालक रजाई में छुपे-छुपे ही अपना मुंह उधाड़कर देखता रहता है ठंड के आगोश में जब पूरा गांव कांप रहा था तभी अचानक कोटवार रामप्रकाश सिलाव की गलियों में आवाज लगाते हुये घूम रहा था कि केशोपुर में कन्हैया बैठा है। रामप्रकाश की बात सुनकर लोगों में अचानक स्फूर्ति आ गई और सब केशोपुर की तरफ दौड़ पड़े।

रामप्रकाश आगे-आगे चल रहा था उसके पीछे गांव के सभी महिला पुरुष बच्चे भागते चले जा रहे थे जमींदार कामेश्वर अपनी पत्नी रामसखी और सियारानी की साथ मोटर साइकिल से केशोपुर जा रहे थे रामप्रकाश कहता चला जा रहा था कन्हैया परीक्षा देने निकला था और चण्डी गया था। आज तो जमींदार साहब की किस्मत पलट



गई मांगा पानी था और अमृत मिल गया। भगवान ने भी उन पर कृपा कर दी। देखो ऐसा बहुत कम होता है कि जब चार साल पहले गुमा हुआ बेटा घर लौटकर आ जायें वो भी साधु

के रूप में रामप्रकाश की बातों के साथ हाँ में हाँ मिलाते गांव के लोग कन्हैया को देखने चले जा रहे थे गांव का ही बहोरी कहने लगा देखा जमींदार साहब का एक ही लड़का था। लड़के की चाहत में जमींदार साहब ने दो-दो शादी करा दी परन्तु सात लड़कियां होने के बाद कन्हैया का जन्म हुआ था पर किस्मत देखो कि वह भी गुम गया। खूब पढ़ाई की मेट्रिक तक पढ़ गया। आखिरी परीक्षा देने गया था पर लौट के नहीं आया। बहोरी की बात सुनकर भरोसे वाला भैया इसी को तो मुकद्दर कहते हैं कि जमींदार साहब की किस्मत कितनी अच्छी है कि उनका लाड़ला बेटा लौटकर भी आ गया चार साल हो गये हों फिर भी कोई लौटकर आ जाये तो बहुत गजब की बात हो गई। तो कह सकते हैं कि जमींदार

साहब पर भगवान सीधा हो गया है।

जमींदार कामेश्वर केशोपुर के जंगल में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि आम के वृक्ष के नीचे एक शान्त व्यक्ति बैठा हुआ है जिसकी आँखें सिर्फ अपनी नाक को देख रहीं थीं, दाढ़ी के बाल काले घने थे माथे पर सिंदूर का टीका लगा हुआ था और सिर पर बाल बिखरे हुये थे, गले में रूद्राक्ष की माला डली हुई है। जैसे ही कामेश्वर ने देखा और उस साधु नुमा युवा को अपना बेटा मान बैठा और उसे अपने गले लगाकर फफक-फफक कर रोने लगा। सियारानी भी उस युवा से लिपटकर रोने लगी परन्तु रामसखी एक तरफ दूर खड़ी रही और वह देखती रही सारे लोग कह रहे थे कि यही कन्हैया है और रामसखी की तरफ आँखें गड़ाये हुये थे। कुछ लोग खुसर फुसर कर रहे थे कि ये कैसी माँ है 4 साल पहले गुमे हुये बेटे के मिलने पर भी खुशी नहीं हो रही है गांव की महिलायें भी रामसखी को पकड़ कर कथित कन्हैया के पास ले जाने का प्रयास कर रही थी परन्तु रामसखी आगे बढ़ने में असमर्थता जता रही थी। उसने सियारानी के कान में कहा हमें तो नहीं लगता है कि ये कन्हैया है तब सियारानी ने बड़ी गंभीरता से कहा रामसखी तू नहीं समझती चार साल से जिसका तुमने चेहरा नहीं देखा हो उसे पहचानने में देर तो लगेगी पर मैं तो सच कहती हूँ ये तो कन्हैया ही है। तब सियारानी की बात सुनकर कहा-तुम मुझसे बड़ी हो इसलिये मैं कुछ नहीं कह सकती हूँ परन्तु मुझे ये भरोसा नहीं हो रहा है कि ये कन्हैया है। तब सियारानी

ने रामसखी का हाथ खींचकर उसे तथा कथित कन्हैया के पास खड़ा कर दिया और कान में से बोली तु अपनी डेढ़ अकल मत लगा मैं तो कहती हूँ यही कन्हैया है। अब बस जमींदार साहब से कहो कि कन्हैया को घर ले चलें। किसी भी प्रकार की देर करना अब अच्छा नहीं है बेटा मिल गया यही सुकर मनाओ।

कामेश्वर ने अपने बेटे कन्हैया से कहा बेटा अभी ये साधु बनने की उमर नहीं है और यदि तुम्हें साधु बनना ही था तो थोड़ा हमसे भी तो पूछ लेते, ऐसे भाग करके साधु बनना अच्छी बात नहीं है घर चलो छोड़ो ये सन्यास पहले अच्छे इंसान बनो फिर साधु बनना कामेश्वर की बात सुनकर तथा कथित कन्हैया कहने लगा कि ध्रुव और प्रहलाद भी तो भगवान के दर्शन पाने जंगल में गये थे मैं भी भगवान के दर्शन करना चाहता हूँ तब कामेश्वर ने कहा-बेटा भगवान भगवान जंगलों में नहीं, मंदिरों में नहीं होता है भगवान तो प्रत्येक शरीर में होता है तुम्हारी आत्मा में भगवान बनने की शक्ति है तभी बीच में पंडित जुगल किशोर मिश्र ने समझाया बेटा आश्रम चार प्रकार के होते हैं ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम, सन्यास आश्रम। सन्यास लेने की उम्र 80 साल के बाद होती है और आप अभी बीस साल से ज्यादा के नहीं हो। अभी तो आपका गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करना ही धर्म शास्त्रों के अनुसार सही है इसलिये बेटे अपने पिता की बात मानकर पहले घर चलो फिर बाद में दूसरी बात करेंगे इतनी बड़ी जमींदारी और अपूत संपत्ति संभालने वाला भी तो कोई चाहिये बेचारे बूढ़े

जर्मींदार साहब आखिर कब तक अकेले जूझते रहेंगे। तुम्हें उनका सहयोग करना चाहिये सबकी बातें सुन रहा धनू पहलवान कहने लगा। सब दूर हटो मैं कन्हैया को घर लेके चलता हूँ और एक झटके में उस पहलवान ने कथित कन्हैया को अपने कंधो पर बिटा लिया और सीवन के रास्ते पर चलने लगा।

जर्मींदार कामेश्वर के घर में कथित कन्हैया बहुत अच्छे से रहने लगा उसके व्यवहार से सब प्रभावित हुये और सियारानी तो उस पर इतनी फिदा हो गयी कि उसकी हर चीज का ध्यान रखने लगी देखते ही देखते कन्हैया बहुत बड़ा होगया और कन्हैया की शादी राधा से हो गई। वर्षों बीत गये राधा और कन्हैया अपने परिवार की बहुत फिकर करने लगे। कन्हैया असली रूप में आने लगा आये दिन कन्हैया का असली रूप जब सामने आया। जब कन्हैया का नाम ही लोग बदल करके कहने लगे और वह लोगों से कहने लगा कि मैं दया का आनन्द हूँ। पर तब लोग उसकी बात को मजाक में लेते रहते। कन्हैया ने कामेश्वर की बेटियों की बेदखल करने के लिये इंतजाम करना शुरू कर दिया और रामसखी को परेशान करने लगा। रामसखी को प्रभु गोस्वामी का घर में आना जाना अच्छा नहीं लगता था रामसखी कहा करती थी कि कौन हैं और आये दिन मेरे घर क्यों आते हैं तब दयानंद ने कहा ये मेरे पिता तुल्य हैं बहुत अच्छे इंसान हैं मुझे इनसे बहुत अधिक प्यार है रामसखी ने कहा किसी से भी प्यार करो पर ध्यान रखो बराबरी वालों से प्यार करो बराबरी वालों से दुश्मनी की जाती है। बेटा

इस नीति को भूलना बहुत गलत होता है रामसखी की इस बात को सुनकर पहली बार उखड़ के दयानन्द ने कहा आपको अपना काम करना चाहिये। मेरे बीच में आपका दखल देना मुझे अच्छा नहीं लगता है। रामसखी ने दयानंद की बात सुनकर अपने आप पर अफसोस महसूस किया और बोली बेटा लगता है तेरा व्यवहार धीरे-धीरे बदल रहा है। तुझे यह भी पता नहीं कि अपनी माँ के प्रति कैसी बातचीत करना चाहिये तू जर्मींदार का बेटा है और मैं जर्मींदार की पत्नी पूरे सीवन के इलाके में किसी ने भी मुझे इस तरह का जबाब नहीं दिया और जब तुम मेरे से ऐसा व्यवहार करोगे तो गांव वाले मेरी क्या इज्जत करेंगे रामसखी की बात सुनकर मैं दयानंद हूँ ऐसा कहते हुये बाहर निकल गया।

दिन प्रतिदिन रामसखी और दयानंद के बीच तकरार बढ़ती गई एक दिन तैस में आकर दयानंद ने कह दिया माँ जी तुम्हें जहां जाना हो जा सकती हो। ये घर मेरा है। मैं अपने तरीके से घर चलाऊंगा आपकी उमर हो चुकी है अब आप सिर्फ भोजन करें और प्रभु का भजन करें सियारानी को जब दयानंद का व्यवहार पता लगा तो वह सख्ते में आ गई और वह सोचने लगी कि जब कन्हैया अपनी माँ से गलत व्यवहार कर सकता है तो वह मेरे से भी गलत व्यवहार कर सकता है। सियारानी ने प्रभु गोसाईं का असली परिचय पता लगा लिया और उसे पता लगा कि यह कन्हैया नहीं बल्कि प्रभु गोसाईं का बेटा है तब सियारानी ने अपने सभी दामाद और बेटियों को बुलवाया और उनको बताया कि जर्मींदार कामेश्वर के साथ बहुत

बड़ा धोखा हो चुका है जुमई जिले के लखाई गांव का रहने वाला प्रभु गोसाईं का बेटा दयानन्द कन्हैया के रूप में हमारे घर में प्रवेश कर चुका था जिसे सबने कन्हैया माना पर वह कन्हैया नहीं दयानन्द निकला और वह जर्मींदार साहब की अकूत संपत्ती का मालिक बन चुका है।

रामपूजन भी कामेश्वर के एक दामाद थे जो जुमई में बकालात किया करते थे रामपूजन ने कहा माँ आप विश्वास करें और मुझे सच के परीक्षण करने का अवसर दें नकली कन्हैया संपत्ती का जरा सा भी हिस्सा नहीं ले सकता है मैं सभी कानूनों को जानता हूँ आप बेफिकर हो जायें। सियारानी ने कहा हमने इसीलिये तो आप सबको बुलाया है पर मुझे आज रामसखी पर अधिक गर्व महसूस हो रहा है कि उस समय भी रामसखी ने सबके सामने कह दिया था कि ये कन्हैया नहीं है परन्तु रामसखी की आवाज भीड़ के कोलाहल में दब गई थी। सियारानी की बात सुनकर रामपूजन ने दयानंद से मिलने की कोशिश की ओर उसे साफ शब्दों में कहने का प्रयास किया कि अब आपकी भलाई इसमें है कि आप रामसखी और सियारानी के साथ अच्छा व्यवहार करें अन्यथा आपके विरुद्ध अदालती मामला बन सकता है इस आशय का संदेश भी दयानंद के पास रामपूजन ने पहुँचाया दयानंद ने कहा जिसकी जैसी मर्जी हो वह वैसा कर ले मैं भी कोई कमजोर नहीं हूँ।

नोक-झोंक बढ़ती ही चली गई आखिर रामपूजन ने जुमई की अदालत में दयानंद के विरुद्ध धोखाधड़ी व नकली बेटा होने का दावा कर दिया रामपूजन ने यह भी प्रश्न

उठाया कि जब दयानंद कन्हैया नहीं है तो इसे जर्मींदार कामेश्वर की संपत्ती पर किस विधि से अधिकार मिल सकता है क्योंकि पैतृक संपत्ती का संबंध नहीं बनता है और कामेश्वर ने दयानंद को गोद भी नहीं लिया है तथा किसी प्रकार कोई भी वसीयत भी कामेश्वर ने दयानंद के नाम नहीं की है। इस आशय का वादपत्र सियारानी ओर रामसखी को वादी बनाकर रामपूजन ने मामला पंजीकृत कराया।

अदालत में मामला चलता रहा दयानंद ने भी बचाव पक्ष के लिये बहुत प्रयास किये आखिरकार झूठ की पर्त पर पर्त खुलती गयीं और न्यायालय में यह सिद्ध होता गया कि यह कन्हैया नहीं है यह तो प्रभु गोसाईं का पुत्र दयानंद है और इसने नाटक रचकर छलकपट करते हुये कन्हैया का रूप बनाया था तथा कामेश्वर के संपूर्ण परिवार के साथ बहुत बड़ी धोखाधड़ी की है चूंकि मामला दीवानी था इसलिये बहुत वर्ष चला एक युग नहीं कई युग बीत गये तब जाकर 9 अप्रैल 2022 को विद्वान न्यायाधीश ने अपना निर्णय सुनाया कि जालसाज दयानंद अपराधी है और इसने रामसखी एवं सियारानी की भावना के साथ खिलवाड़ की है एवं पूरे प्रकरण में विश्वास घात का प्रकरण सिद्ध होता है अतः दयानंद को 6 वर्ष का सश्रम कारावास दिया जाता है इस संपूर्ण कार्यवाही का व संचालन अभियोजन अधिकारी डॉ. राजेश कुमार पाठक ने कुशलता पूर्वक किया और अंत में दूध का दूध पानी का पानी हो गया और दयानंद की पोल खुल गई और वह सिद्ध हो गया कि वह है नकली बेटा है।

नवपदार्थ और आचार्य त्रय का चिंतन

✽ ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ✽

संसार में जीव और अजीव मूल रूप से दो पदार्थ हैं इन्हीं दो पदार्थों का विस्तार छः द्रव्य के रूप में होता है जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश काल इन छः द्रव्यों को ही जीव और अजीव के रूप में विभाजित किया जाता है चैतन्यधर्मी एक जीव व शेष 5 को अजीव के रूप में विभाजित किया जाता है चैतन्य धर्मी एक जीव द्रव्य होता है और अचेतन धर्मी- पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश, काल अजीव द्रव्य होते हैं। इन्हीं जीव और अजीव के विशेष परिणाम स्वरूप पदार्थ होते हैं। जीव, अजीव, आश्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य, पाप इन पदार्थों का आधार लेकर जो निश्चय नय से निर्णय किया जाता है तो ये पदार्थ सम्यक्त्व रूप हो जाते हैं इसी विषय को स्पष्ट करते हुये आचार्य कुन्दकुन्द देव ने समयसार में एक गाथा प्रस्तुत की है।

भूतत्थेणाभिगदा जीवा जीवा य पुण्यपावं च।

आस्रव संवर णिज्जर बंधो मोक्खो च सम्मतं ॥15॥

इन नौ पदार्थों की श्रद्धा करने से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है। और यही सम्यग्दर्शन मोक्षमहल की प्रथम सीढ़ी है।

आचार्य अमृतचन्द्र सूरि की दृष्टि में नवपदार्थ- आचार्य अमृतचन्द्र देव ने जीवादि नवपदार्थों को दो रूप में प्रस्तुत किया है तीर्थ प्रवृत्ति हेतु जीवादि नवपदार्थ अभूतार्थ नय से कहे जाते हैं इन नव पदार्थों में श्रद्धा करने से सम्यग्दर्शन प्राप्त होता है तथा भूतार्थ नय से एकत्व प्राप्त करके आत्मा की अनुभूति लक्षण रूप आत्म ख्याति प्राप्त होती है इन्हीं तत्त्वों का विश्लेषण आचार्य श्री ने कहा है विकार्य और विकारक दोनों उभय रूप पुण्य पाप हैं आश्रव योग्य और आश्रव और निर्जरा करने वाला मोक्ष योग्य और मोक्ष प्राप्त करने वाले सभी तत्त्वों के दो रूप प्रस्तुत होते हैं इन्हीं को द्रव्य और भाव के रूप में विभाजित किया जा सकता है जीव और पुद्गल की अनादि बन्ध पर्याय के समीप जाकर एक रूप अनुभव करने पर ये नव तत्व भूतार्थ हो जाते हैं और एक जीव द्रव्य के स्वभाव के समीप जाकर यहीं तत्व अभूतार्थ हो जाते हैं अन्तरदृष्टि से ज्ञायक भाव जीव है और जीव के विकार का हेतु अजीव है।

बाह्य दृष्टि से देखा जाये तो जीव और पुद्गल की अनादि बन्ध पर्याय के समीप ये नवपदार्थ भूतार्थ होते हैं एक जीव द्रव्य के स्वभाव के समीप जाने पर ये तत्व अभूतार्थ होते हैं। अर्थात् नवपदार्थ भूतार्थ और अभूतार्थ की दोनों स्थितियों में आचार्य अमृतचन्द्र देव ने स्वीकार किये हैं। मूल में नय दो प्रकार के हैं - द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक ये दोनों नय द्रव्य और पर्याय का पर्याय से अनुभव करने पर दोनों नय भूतार्थ हैं और द्रव्य तथा पर्याय दोनों से अनालिंगित अर्थात् आलिंगन नहीं करने पर शुद्ध वस्तु मात्र जीव के स्वभाव का अनुभव करने पर दोनों नय अभूतार्थ

हैं प्रमाण नय निक्षेपों में भूतार्थ रूप से एक जीव ही प्रकाशमान है।

आचार्य जयसेन की दृष्टि में नवपदार्थ और सम्यग्दर्शन:- कोई भी निकट भव्य जीव हेय और उपदेय तत्व को जानकर विशुद्ध ज्ञान-दर्शन स्वभाव वाले अपने स्वरूप को प्राप्त हो जाता है किन्तु विस्तार रूचि वाला जीव नव अधिकारों से प्रस्तुत किये जाने वाला समयसार को जानकर फिर आत्म भावना करता है आर्त-रौद्र ध्यान का त्यागकर देना ही जिसका लक्षण है ऐसे निर्विकल्प सामायिक समाधि में लीन होने वाला जीव शुद्धात्मा के स्वरूप का दर्शन अनुभव करता है वहीं वीतराग सम्यक्त्व कहा जाता है जो वीतराग सम्यग्दर्शन वीतराग चारित्र के साथ अविनाभाव संबंध रखता है अर्थात् वीतराग चारित्र के बिना वीतराग सम्यग्दर्शन होना संभव नहीं है।

भेद उपचार नय से जीवादि पदार्थ सम्यक्त्व के विषय होने के कारण व्यवहार सम्यक्त्व के निर्मित होते हैं अर्थात् निश्चय नय से अपने शुद्धात्मा का परिणाम ही सम्यक्त्व है इस प्रकार आचार्य जयसेन जी ने सरागवीतराग सम्यक्त्व का लक्षण निश्चित किया है वे मानते हैं कि तीर्थ प्रवृत्ति के लिये नवपदार्थ प्रारंभिक शिष्य की अपेक्षा से भूतार्थ कहे जाते हैं फिर वे ही नवपदार्थ भेद रत्नत्रय की अपेक्षा से निर्विकल्प समाधिकाल में अभूतार्थ सिद्ध होते हैं।

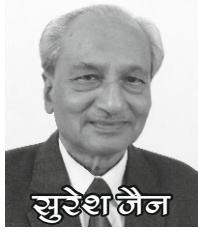
कविता

माँ

✽ प्रेषक: अपूर्वा अमित जैन, झाँसी ✽

माँ तूने मुझे क्यों खुदसे इतना दूर
कर दिया....
जानती थी न तू कि कितनी नादान हूँ मैं,
मुझे तेरे सहारे की जरूरत है।
तुझसा सच्चा न कोई
मैंने देखा,
न तेरे जितना मुझे किसी ने चाहा,
तू मेरी हर बात बिना कहे समझ जाती है,
मेरे जरा से नाराज
होने पर तू इतना घबरा जाती है
तेरी निश्चल बातें
मुझे तेरी बहुत याद दिलाती है
माँ तू मुझको बहुत आती है।
माँ तू मुझको बहुत आती है।





क्रमांक- 17 वरिष्ठ नागरिक

रिटायरमेंट के बाद भी अपने व्यक्तित्व में निखार लायें

जिंदगी में सफलता प्राप्त करने के लिये कई सीढ़ियों को पार करना पड़ता है। सबसे महत्वपूर्ण सीढ़ी होती है पर्सनल ग्रूमिंग की। आपका व्यक्तित्व, जो छाप दूसरों पर छोड़ता है वही कुछ हद तक छाप को सफल, असफल बनाने का कार्य भी करता है। जबभी आप किस से पहली बार मिलते हैं तो सामने वाला आपको बोलने, चलने, ड्रेसअप व आपके व्यवहार से कुछ सेंकड में 70 से 80 प्रतिशत तक आपकी अच्छाइयों, बुराईयों का जायजा लगा लेता है। इसलिये पर्सनल ग्रूमिंग की तरफ विशेष ध्यान देना जरूरी है। व्यक्तित्व की छाप प्रभावशाली है तो आपकी रिटायरमेंट के पश्चात भी उसकी महक बनी रहेगी बल्कि निखरेगी।

आपका व्यक्तित्व- वैसे तो सारी जिन्दगी, विशेष तौर पर रिटायरमेंट के बाद आपके अच्छे व सुंदर विचार ही आपके शिष्टाचार को दर्शाते हैं। आपका चेहरा आप के विचारों व भावों को दर्पण की तरह प्रतिबिंबित करता है। आपका परिचय ही सामने वाले को प्रभावित करता है। इसलिये आपकी प्रेजेंटेशन हमेशा खूबसूरत होनी चाहिये।

मधुर वाणी- इसकी रिटायरमेंट के बाद बड़ी जरूरत होती है। सर्विस अथवा जब तक आप सक्षम थे, आपकी आवाज में एक अजीब रोब होता था, किसी से भी ऊँची आवाज में बात करनी या डॉटना मामूली बात थी परन्तु अब आप की वाणी में मधुरता, बातचीत और व्यवहार में इतनी सभ्यता होनी चाहिये कि सामने वाला प्रभावित हुये बिना न रहे सके और आप आवाज सुनकर कह उठे कि आपके बोलने से फूल झरते हैं। ऐसे में आप मुश्किल से मुश्किल कार्य भी दूसरों से बिना किसी अड़चन से करवा सकते हैं।

व्यवहार में शालीनता- इस आयु में व्यवहार में इतनी शालीनता होनी चाहिये कि सामने वाला प्रभावित हो जाये और प्रशंसा किये बिना न रह सके। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि अचानक या किसी के बुलाने पर कोई आये हुये मेहमान के साथ अच्छा व्यवहार हो। कभी जरूरत से ज्यादा न बोलें, न हसे और न ही किसी का मजाक उड़ायें, बल्कि अच्छे ढंग से बातचीत करें।

शालीन पहनावा- अगर आप किसी पार्टी या किसी कार्यक्षेत्र या किसी के दुःख में शामिल होने जा रहे हैं तो आपका पहनावा उसके अनुरूप होना चाहिये ताकि किसी देखने वाले को अटपटा न लगे। इससे आपके व्यक्तित्व में भी निखार आ जाता है। आप ऐसा परिधान चुनें, जो आपके शरीर के लिये आरामदायक हो। शरीर के गठन को ध्यान में रखकर कपड़ों का सिलेक्शन करना चाहिये। इससे आपको अच्छा लगेगा ही और देखने वालों को भी अटपटा नहीं लगेगा।

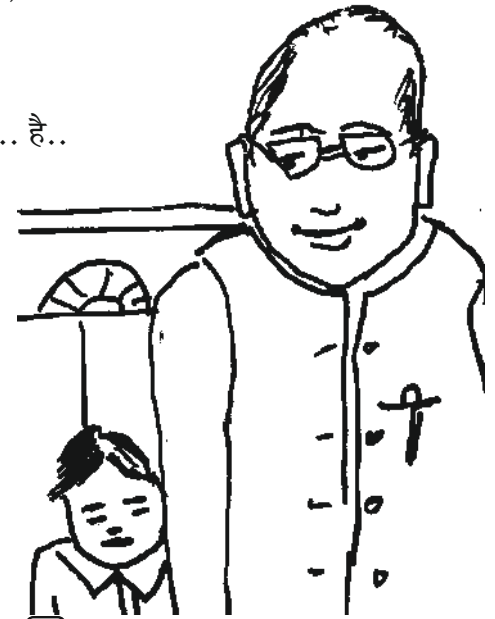
दूसरों के प्रति सहानुभूति- दूसरों के प्रति सहानुभूति रखना भी आपके व्यक्तित्व का एक अंग है। कोई कठिनाई में है तो उसकी सहायता करके उसकी कठिनाई को कम करने की कोशिश करनी चाहिये। ऐसा करने से आपको खुशी मिलेगी ही, साथ ही आप प्रशंसा के पात्र बनेंगे और आपके व्यक्तित्व में निखार भी आयेगा।

कविता

अपनी व्यथा

* श्रीमती सुनीता कठरया, बीना *

तू छोड़ सबकी, पर की सब कथा को,
तू याद रख, मात्र अपनी व्यथा को।
अपने सुख के संबंध में,
कोई अन्य सोचता.. कहता.. करता.. है..
इससे भला तेरा क्या वास्ता है,
तेरा अपना दुःख क्या है ?
और क्या उससे बचने का रास्ता है ?
बस मात्र उसके बारे में,
सोच, कह और कर।
तुझको तेरे सच्चे सुख का वास्ता है
और सच्चा सुख यदि पाना है तो
तू छोड़ पर की सब कथा को
स्मरण रख मात्र अपनी व्यथा को।



हमारे गौरव

अमर शहीद अमरचंद जैन

मंडला नगर के पास ही नर्मदा मैया के दूसरे तट पर बसा है महाराजपुर ग्राम। इसी ग्राम के निवासी थे वीर उदयचंद जैन जिन्होंने मात्र 19 वर्ष की अल्पवय में सीने पर गोली खाकर देश की आजादी का मार्ग प्रशस्त किया था।

उदयचंद जैन का जन्म 10 नवम्बर 1922 को हुआ। आपके पिता का नाम सेठ त्रिलोक चंद जैन एवं माता का नाम श्रीमति खिलौना बाई था। उदयचंद की प्रारंभिक शिक्षा महाराजपुर में हुई। 1936-37 में आगे अध्ययन के लिये वे जगन्नाथ हाई स्कूल (वर्तमान नाम- जगन्नाथ शासकीय) बहुदेशीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक शाला मण्डला में प्रविष्ट हुये।

उदयचंद मेधावी छात्र तो थे ही अपनी नेतृत्व क्षमता के कारण वे छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गये। तब वे हाईस्कूल के छात्र थे। उदयचंद बलिष्ठ और ऊंचे थे, हाकी उनका प्रिय खेल था। विज्ञान और गणित में उनकी अत्यधिक अभिरूचि थी। अपना काम स्वयं करने की प्रवृत्ति बचपन से ही थी। वे अत्यन्त मितव्ययी, ओजस्वी वक्ता और प्रायः मौन रहने वाले थे।

शवयात्रा का जुलूस अस्पताल से प्रातः 10.30 से 11.00 बजे के बीच प्रारंभ हुआ। मंडला और आस-पास के नागरिकों की भीड़ को पुलिस कभी नहीं संभाल पाती, पर जुलूस में पुलिस नहीं थी। तत्कालीन तहसीलदार श्री चौहान शवयात्रा में शामिल हुये थे। मंडला के इतिहास में इतनी बड़ी शवयात्रा कभी नहीं निकली। नगर के सभी जाति वर्ग के लोग शवयात्रा में शामिल थे कहा जाता है कि लगभग नौ हजार लोग शवयात्रा में शामिल थे। उस समय मंडल मात्र 12 हजार की बस्ती थी।

श्रुत पंचमी- श्रुत आराधना पर्व

* सुषमा जैन, भिलाई *

भारतीय संस्कृति में अनेक सामाजिक धार्मिक एवं राष्ट्रीय पर्वों को बड़े उत्साह से मनाने की गौरवशाली परंपरा रही है। श्रुत पंचमी एक अनूठा धार्मिक नैमित्तिक पर्व है जिसमें व्यक्ति विशेष की नहीं ज्ञान की आराधना पूजा की जाती है। अंतिम तीर्थेश महावीर स्वामी के निर्वाण होने के लगभग 600 वर्ष बाद से ही ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को शास्त्र (जिनवाणी) की पूजा कर सामूहिक रूप से हम श्रुत आराधना का यह पर्व मनाते हैं।

यह मानुष पर्याय, सुकुल सुनिवों जिनवाणी।

इस विधि गये न मिले सुमणि, ज्यों उदधि समानी ॥ छहढाला

पंडित प्रवर दौलतराम जी की छहढाला की ये पंक्तियाँ हमारी मनुष्य पर्याय की और यहाँ मिली वर्तमान की अनुकूलताओं की दुर्लभता स्पष्ट कर रही हैं। हम यदि चाहे तो अपनी जीवन पद्धति सम्यक बनाकर अपना भविष्य सुधार सकते हैं। वर्तमान में मिली अनुकूलता अर्थात् देवशास्त्र गुरु की शरण हमें प्राप्त हैं, पूर्वभवों में निश्चित ही हमने सद्कर्म किये होंगे। जिससे हमें चिंतामणि रत्न तुल्य जिनधर्म की शरण मिली। अभी हम अपना जीवन भगवान महावीर के उपदेशानुसार अहिंसात्मक बनायें तो हमारा वर्तमान तो सुखद रहेगा ही साथ ही भविष्य भी अच्छा हो जायेगा अर्थात् मोक्षमार्ग के पथिक बनने की पात्रता हममें आ जायेगी। तीर्थकर भगवंतों के जब चार घातिया कर्मों का नाश हो जाता है तो अनन्त चतुष्टय प्रगट हो जाता है। वे केवली भगवान जब समवशरण में विराजते हैं वहाँ प्राणी मात्र के कल्याण हेतु भगवान का उपदेश होता है अर्थात् दिव्यध्वनि खिरती है जो ओंकार ध्वनि होती है उसे गणधर देव ग्रहण कर शब्दरूप प्रस्तुत करते हैं। तीर्थकर भगवंतों की यही (दिव्य ध्वनि) वाणी ही शास्त्र और जिनवाणी कही गई। भगवान की यही कल्याणकारी वाणी सरस्वती, शारदा, जगत कल्याणी, माँ जिनवाणी शास्त्र, श्रुत कही गई हैं। आज हम देव शास्त्र गुरु तीनों की समान रूप आराधना करते हैं।

आचार्य भगवंतो ने हमें जो क्रम बताया यह भी हमारे आत्मकल्याण में सहायक है इस क्रम में शास्त्र को बीच में रखा है वह मध्य दीपक की तरह उपयोगी है। हमारी वर्तमान स्थिति यह बताती है कि अनादि काल से निरंतर संसार शरीर और भोगों में लिप्त रहकर अपने भव भ्रमण को बढ़ाते ही रहे। वर्तमान में देव शास्त्र गुरु की शरण में सम्यक पुरुषार्थ करके सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक चारित्र का उपाय करें तो प्रथमतः हमें शास्त्र को बीच में रखना होगा क्योंकि इस काल में हम इतना सौभाग्य लेकर नहीं आये कि भगवान कैसे थे कैसे उनका गुणानुवाद करके पाप से विरत होकर ब्रती अपनी-अपनी भूमिका के अनुसार आचरण करके सद्गृहस्थ ब्रती श्रावक एवं साधु बनकर मोक्ष पर चलकर शिवसुख को प्राप्त कर सकते हैं। यही शास्त्र या जिनवाणी हमें

गुरु का स्वरूप भी बताते हैं ताकि हम सद्गुरु की शरण में जाकर जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकें।

ये जिनवाणी तीर्थंकर भगवंतों का दिया हुआ अनुपम उपहार है। जिसमें प्राणी मात्र के कल्याण का उपाय बताया भगवान महावीर के निर्वाण के बाद श्रुत परंपरा से कई वर्षों तक जीवंत रही। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद तीन अनबुद्ध केवली हुये। भगवान के प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम केवली हुये। भगवान के प्रथम गणधर श्री इन्द्रभूति गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ वे चतुर्विध संघ के नायक रहे बारह वर्ष तक संघ गौतम स्वामी के नेतृत्व में रहा। उसके पश्चात् सुधर्माचार्य को केवल ज्ञान हुआ और बारह वर्ष तक उन्होंने चतुर्विध संघ का नेतृत्व में रहा। उसके पश्चात् सुधर्माचार्य को केवल ज्ञान हुआ और बारह वर्ष तक उन्होंने चतुर्विध संघ का नेतृत्व किया उसके बाद जम्बूस्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई और लगभग 39 वर्षों तक जम्बूस्वामी ने संघ का नेतृत्व किया। मथुरा चौरासी से निर्वाण को प्राप्त किया। बाद के सौ वर्षों में पाँच श्रुतकेवली हुये इन्हें पूर्ण श्रुतज्ञान था। श्रुतकेवली श्री विष्णुकुमार जी, श्रीनंदि मित्र जी, श्री अपराजित जी, श्री गोवर्धन जी, ओर अंतिम श्रुतकेवली श्री भद्रबाहु स्वामी हुये। इनके बाद 183 वर्षों तक ग्यारह अंग और दस पूर्व के ज्ञाता होते रहे फिर 200 वर्षों तक मात्र कोई-कोई आचार्य एक अंग के ज्ञाता रहे बाकी खण्डज्ञान के ज्ञाता हुये ऐसी यह श्रुतज्ञान की परंपरा रही।

भगवान महावीर के निर्वाण के लगभग 600 वर्ष के पश्चात् आचार्य श्री माघनंदी जी के शिष्य श्रीधरसेनाचार्य हुये। गिरनार पर्वत की गुफा में रहते हुये उनके मन में श्रुतसंरक्षण का विचार आया। उन्होंने निमित्त ज्ञान से अपनी अल्पायु जानकार महिमा नगरी में होने वाले यतिसम्मेलन में आचार्य अर्हद्बली के पास श्रुतसंरक्षण हेतु योग्य शिष्यों को भेजने के लिये एक पत्र भेजा। पत्र पढ़कर आचार्य अर्हद्बली ने मुनिराज नरवाहन और मुनिराज सुबुद्धि को ज्ञान प्राप्त करने हेतु आचार्य धरसेनाचार्य जी के पास भेजा। गुरु ने दोनों शिष्यों की परीक्षा हेतु दो विद्याएँ सिद्ध करने दीं। भगवान नेमिनाथ की निर्वाण स्थली गिरनार पर्वत पर विद्या सिद्ध करने बैठे दोनों मुनिराजों ने मंत्र शुद्ध कर विद्या सिद्ध कर ली। परीक्षा में उत्तीर्ण शिष्यों को योग्य जानकर आचार्य श्रीधरसेनाचार्य ने विद्या अध्ययन करना प्रारंभ किया। अध्यय पूर्ण होने पर भूतजाति के देवों द्वारा मुनियों की पूजा करने पर नरवाहन मुनि का नाम भूतबलि तथा सुबुद्धि मुनिराज की दंतपंक्ति सुव्यवस्थित होने से उनका नाम पुष्पदंत रखा गया।

श्री धरसेनाचार्य महाराज से शिक्षा प्राप्त कर श्री पुष्पदंत महाराज ने जिनवाणी की लेखन प्रारंभ किया और पांच खण्ड सूत्र रूप में लिखे दूसरे शिष्य श्री भूतबलि महाराज ने छठा खण्ड विस्तार से लिखा यह षट्खण्डागम कहलाया। षट्खण्डागम की रचना ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी के दिन पूर्ण हुई और यह श्रुत षट्खण्डागम को पालकी में विराजमान कर शोभा यात्रा निकाली गई और श्रुत पूजा की गई। तब से यह दिन श्रुत पंचमी कहलाया तब से आज तक यह पवित्र दिन श्रुत आराधना पर्व के रूप में हम मनाते चले आ रहे हैं। श्री धरसेनाचार्य के ही समकालीन श्री गुणधर

महाराज ने कषाय प्राभृत की रचना करी षट्खण्डागम के पुस्तकारूढ़ होने के बाद कई आचार्यों ने उसकी टीकाएँ लिखी। आचार्य कुन्दकुन्द देव आचार्य समन्तभद्र स्वामी और आचार्य बप्पदेव आदि के द्वारा टीकाएँ लिखने का उल्लेख मिलता है। सातवीं-आठवीं शताब्दी ईस्वी में आचार्य श्री वीरसेन महाराज ने षट्खण्डागम में से पांच खण्डों पर (धवला) टीका लिखी जो धवला जी कहलाई। छठे खण्ड पर महाबंध की रचना हुई जो महाधवला जी कहलाई। आचार्य श्री गुणधर महाराज के कषाय प्राभृत पर पांचवी-छठी शताब्दी में श्री यतिवृभाचार्य ने चूर्णि-सूत्र लिखे। आचार्य वीरसेन स्वामी ने (चूर्णि सूत्र) इसकी टीका लिखने का प्रारंभ किया जिसे उनके शिष्य आचार्य श्री जिनसेन महाराज ने पूरा किया जो जयधवला जी कहलाई। आचार्य भगवंतों के अथक श्रमसाध्य प्रयासों का ही फल है कि आज हमें भगवान की वाणी ग्रंथ रूप में उपलब्ध है।

यह हमारा सौभाग्य है कि भगवान की अनमोल वाणी जो आज तक सुरक्षित रूप में जिनवाणी रूप में मिली है श्रुतपंचमी के दिन सरस्वती पूजन कर हम श्रुत आराधना करें। वास्तविक पूजा तो वह होगी जब हम उसे कण्ठ में धारण करें और चिंतन मनन करते हुये उस रूप आचरण करने का सदैव प्रयास करें। शास्त्रों की साज सज्जा और सुरक्षा तो हमारा कर्तव्य है ही साथ ही नई पीढ़ी को ज्ञान देकर उनमें धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण करें।

कविता

गुरुवर विद्यासागर वंदना

* डॉ. अजित चौधरी (बीना म.प्र.) *



ऐसे संत जिनका वंदन
स्वयं संत ही करते हैं,
जिनके स्पर्श मात्र से
माटी चंदन हो जाती है ॥

जिनके दर्शन पाने से
उर के क्रन्दन मिट जाते हैं,
शीतलता मिलती इतनी
तनमन तन्मय हो जाता है ॥

गुरु से गुरु की दीक्षा पा
अंशु से धरती वंदन करते हैं
ऐसे गुरु का वंदन करते करते
महावीर का वंदन हो जाता है ॥

बावची (Psorala Corylifolia)

✱ डॉ. आशा जैन, इंदौर ✱

बावची कुष्ठ रोग एवं चर्म रोगों के लिये उत्तम औषधि है। बावची चूर्ण गोमूत्र में भिगोकर पीसकर कुष्ठ स्थान पर लेपकर रोगी को धूप में बिठाये। चार घंटे बाद लेप ठंडे पानी से धोकर साफ करें। कभी कभी लेप की तीव्रता के कारण छाला हो जाता है। उस स्थान पर जलन होने पर नारियल तेल गाना चाहिये। घबराना नहीं चाहिये। यह बीमारी ठीक होने की निशानी है। यह लेप कुशल वैद्य की सलाह लेकर ही लगाना चाहिये। एवं बावची चूर्ण 5 से 10 ग्राम सुबह शाम ठंडे पानी से सेवन करें। या शहद या चासनी से खाये। आंवला एवं नीम छाल या नीमपत्र का काढ़ा बनाकर पियें। लाभ होने पर यह प्रयोग दो-तीन मास तक चालू रखें। खटाई एवं मिर्च का सेवन न करें।

शुद्ध बावची एवं तिल बराबर मात्रा में लेकर चूर्ण करें 1/2 ग्राम से चूर्ण सुबह शाम 1 वर्ष तक सेवन करें। सभी प्रकार के कुष्ठ रोग नष्ट हो जाते हैं।

बावची बीज तेज 100 ग्राम 400 ग्राम तिल तैल में मिलाकर नित्य सुबह शाम मालिश करें। या बावची बीजों का महीन चूर्ण मक्खन मिलाकर लगायें। बावची में एक प्रकार का विशेष उत्तेजक गुण होने के कारण रंगोत्पाद को अधिक क्रियाशील होकर कुष्ठ रोग में लाभ पहुंचाते हैं।

इसके तेल, क्वाथ एवं कीटाणु को नष्ट कर रक्त के रंजक द्रव्य हिमोग्लोबिन की वृद्धि कर आंतों को शुद्ध करता है। इससे रस एवं रक्त धातुओं के विकार दूर होकर धातुयें शुद्ध एवं बलवान होती हैं। शरीरस्थ विकार मूत्र मार्ग से निकल जाते हैं।

बावची बीज चूर्ण 1/2 ग्राम, आंवला चूर्ण 1 ग्राम, 1 गिलास जल में उबालकर गुड़ या शक्कर मिलाकर सुबह गरम गरम सेवन करें।

बावची के 5 दाने सुबह खाली पेट जल से निगल जायें प्रतिदिन एक एक दाना बढ़ाते जायें। 21 दाने तक बढ़ाये। फिर 1-1 दाना कम करते जायें। पुनः 5 दाने पर आ जायें। फिर पुनः 5 दाने से शुरू कर बढ़ाना प्रारंभ करें। ऐसा 3-4 बार करें। लाभ होगा। एवं उपरोक्त तेल की मालिश करते रहे।

बावची चूर्ण, चित्रक चूर्ण, सफेद मूसली चूर्ण समभाग लेकर नित्य 1-1 ग्राम सुबह शाम शहद या चासनी से लें। इससे सभी प्रकार के चर्म रोग, दाद, खाज, खुजली में आराम होता है।

बावची पौधो की जड़, दंत विकार दूर करती है। इस जड़ का चूर्ण कर थोड़ा-थोड़ा फिटकरी एवं त्रिफलाचूर्ण मिलाकर मंजन करने से सभी प्रकार दंत रोग दूर होते हैं। दांतों की सड़न दूर होती है।

महिलाओं का पी.सी.ओ.डी रोग व नियंत्रण उपाय

✱ संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर ✱

महिलाओं और बच्चियों में 15 से 35 वर्ष की उम्र में वजन ज्यादा बढ़ने से पी.सी.ओ.डी रोग जिसे पॉलीसिस्टिक ओवेरियन डिजीज कहते हैं जो हार्मोन्स के अनियमिता के कारण होने वाला रोग है। इससे करीब 5 से 15 प्रतिशत महिलायें प्रभावित होती हैं, किन्तु जीवनशैली में परिवर्तन से इसका प्रतिशत बढ़ रहा है।

इस रोग का कारण अंडाशय के आकार में बढ़ोत्तरी होना है, अंडाशय में 2 मि.मी से 20-30 मि.मी.की गाँठे (सिस्ट) बन जाती हैं जो सफेद नेकलेस जैसी दिखाई देती है। इनके बनने से ओव्यूलेशन नहीं है या देर से होता है (अंडा नहीं फूटता)। सामान्य रूप से मासिक धर्म के 13-14 दिन में अंडा बनता है और 28 दिन के सामान्य चक्र के तहत 14 दिन में अंडा फूटता है लेकिन इसके न फूटने से मासिक चक्र अनियमित हो जाता है व कभी-कभी मासिक आता ही नहीं है जिसका प्रमुख कारण हार्मोन्स की गड़बड़ी है जिसके रक्त में इस्ट्रोजन, प्रोजेस्ट्रान, एफ एस एच, एल एच हार्मोन्स का संतुलन बिगड़ जाता है जिससे इस्ट्रोजन और टेस्टोस्टेशन बढ़ने लगते हैं व एफ एस एच व एल एच का अनुपात कम हो जाता है। इस रोग के कारण ओवरी का आकार व घनत्व बढ़ जाता है।

लक्षण- 1. मासिक धर्म के दौरान रक्त स्राव में कमी या मासिक अनियमित होना व कभी-कभी मासिक आता नहीं व पेट में बहुत तेज दर्द होता है। जो प्रजनन आयु को प्रभावित करता है। 2. चेहरे पर अनचाहे बालों का आना। 3. वजन का बिना किसी कारण लगातार बढ़ना। 4. स्तनों के आकार में परिवर्तन। 5. निः संतानता एवं बांझपन क्योंकि ओव्यूलेशन की गड़बड़ी से गर्भ नहीं ठहरता है। 6. स्वभाव में चिड़चिड़ापन व कार्य के प्रति अरुचि। 7. चेहरे की चमक में कमी व दाग उभरना व डिप्रेशन बढ़ना।

सावधानियाँ- 1. इस रोग का सीधा संबंध वजन बढ़ने से अतः वजन नियंत्रण पर ध्यान देवें जिससे हार्मोन्स संतुलन सामान्य हो जाता है। 2. मासिक धर्म में समय स्वच्छता व सावधानी रखना। 3. संतुलित भोजन व सुगर का सेवन बंद कर देवें। 4. समय पर नींद लेवे जो हार्मोन्स को संतुलित करने में सहायक है। 5. तनाव का नियंत्रित करें, धूम्रपान नहीं करें।

नियंत्रण उपाय- 1. शारीरिक रूप से ज्यादा सक्रिय रहते हुये प्रतिदिन 30-40 मिनट, टहलना, व्यायाम व योग करना। 2. संतुलित भोजन।

(i). **फाइबर** - प्रतिदिन भोजन में फाइबर 21 से 25 ग्राम लेना चाहिये जिसमें चौकर सहित आटा की रोटी, छिलके सहित रेशेदार फल खाये। जिसमें नाशपत्ती, संतरा, आम, मौसम्बी फल। (ii). **प्रोटीन**- काला चना, दाले सोयाबीन, राजमा, कड़ू के बीज, पत्तेदार सब्जियाँ पालक मैथी, चौलाई, तौरई, लोंकी, भिन्डी आदि। अंकुरित दालें चना, राजमा गुड़। (iii). **एन्टी ऑक्सीटेन्ट्स**- रंग बिरंगे फल व सब्जियों, आंवला, बादाम, मुंगफली। (iv). **कार्बोहाइड्रेट**- ज्वार, बाजरा, रागी का उपयोग करने से हल्की, लोंग कार्बोहाइड्रेट देर से पचने पर खून में शर्करा धीमी गति से रक्त में पहुंचता है जिससे रक्त शर्करा का स्तर अचानक से तेजी से नहीं बढ़ता है। (v). **पानी पीना**- प्रतिदिन 8-10 गिलास पानी बैठकर धीरे-धीरे पीना पानी के साथ नींबू, अदरक, स्वाद अनुसार ले सकते हैं। (vi). **अन्य पोषक तत्व**- कैल्शियम व विटामिन बी12 के लिये दूध से बने उत्पाद, खजूर, खरबूजा आदि।

परहेज- चीनी, शहद, मिठाईया, ज्यूस पैकेट, कोल्ड्रंक, चीज, क्रीम, तला हुआ भोजन, पेकेट वाले नमकीन, चिप्स, पिज्जा, वर्गर, जंक फूड का सेवन नहीं करें ये नुकसान दायक वसा शरीर में इस्ट्रोजन हार्मोन्स के उत्पाद को बढ़ाते हैं। जो रोग नियंत्रण में परेशानी डालते हैं।

स्वयं को डॉक्टर बनने के बजाय अनुभवी सुयोग्य स्त्री रोग विशेषज्ञ की सलाह व चिकित्सा समय पर कराना चाहिये। सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर इलाज से लाभ मिलता है किन्तु पर्याप्त लाभ नहीं मिले तो सर्जिकल या लेजर पद्धति की आवश्यकता होती है। होम्योपैथी पद्धति से इसका इलाज कराना चाहिये इस पद्धति से भविष्य में फिर समस्या होने को भी कम करता व अन्य उपचार पद्धति में दी जाने वाली दवाईयों के नुकसान व सर्जरी से बचाता है। प्रमुख औषधियाँ एपिस, पल्सटिका, सीपिया, लैकेसिस, इग्रेशिया, कोनियम, नेट्रमम्यूर कैलेरिया काव, सल्फर, थायोरीडीनम आदि।

अधिकतर महिलायें अपने सेहत से प्रति उपेक्षित रवैया अपनाती हैं व चिकित्सक से मिलने में हिचकिचाती हैं जो उचित नहीं है। समय पर इलाज, परहेज, पौष्टिक भोजन से पुनः समस्त शरीर स्वस्थ तथा सौन्दर्य से पूर्ण होकर जो केवल महिलाओं को प्रकृति द्वारा प्राप्त होता है। जिसस सुखमय जीवन के साथ परिवार को सुखी-समृद्धि-शाली बनाये रखने में उपयोगी होगा।



हास्य तरंग

1. मायके से आई पत्नी को लेने रेल्वे स्टेशन पहुँचा पति ने गाड़ी रूकते ही समान उठाकर टेक्सी स्टैंड की तरफ तेजी से चलने लगा। गाड़ी से उवरी पत्नी ने उसे आवाज लगाकर रोका और कहा जरा प्यास से हंसकर रिसीव कर लेने तो क्या हो जाता। जरा सामने वाले जोड़े को तो देखो पति कैसे हंसता हुआ बात कर रहा है। पति ने कहा- हां देख रहा हूँ, वह पत्नी को छोड़ने आया हैं, लेने नहीं।
2. निखटू व आलसी पति से परेशा पत्नी घर छोड़कर मायके आ गई दूसरे दिन ही खबर आई कि पति ने फांसी लगा ली थी पर मरे तो नहीं पर अस्पताल में भर्ती है। पत्नी ने वापिस आकर गुस्से में बोली सौ बार कहा है कि जो चीज खरीदो देखकर लो। अब तो पैसे भी गये रस्सी टूटने से, काम नहीं हुआ।
3. जिलाधीश (गुस्से में) फाइल देखते हुये तुमने कभी गंधा देखा है ? कर्मचारी (सिर झुकाकर) नहीं सर। जिलाधीश- तो नीचे क्या देख रहे हो ? मेरी तरफ देखो।
4. नई कमीशनर पुलिस प्रणाली लागू होने के बाद इन्स्पेक्टर अपने इलाके के गांव में गये जहां रात्रि होते ही लगभग सभी शराब पी लेते हैं। इन्स्पेक्टर ने गांव के सरपंच से पूछा- गांव में कितने सरकारी अधिकारी रहते हैं ? सरपंच ने कहा अभी तो एक भी नहीं है। लेकिन थोड़ी देर बाद बहुत मिल जायेंगे।
5. एक व्यक्ति डॉक्टर के पास जाकर कहता है, मुझे चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी कराना है। डॉक्टर- आप तो बहुत सुन्दर हो ? व्यक्ति बोलो में भीख मांगने का काम करता हूँ पर कोई भी फूट कौड़ी भी नहीं देता हैं।

संकलन: जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर इंदौर

संस्कार खेल

शरीर विकास के कुछ खेल

* चुनौती

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- पूर्व खेल की तरह सब मंडल पर बैठेंगे। अ के पास एक रूमाल रहेगा जिसे वह दौड़ते हुये चुपचाप ब के पीछे रख देगा। यदि ब को इसका पता लग गया तो वह अ का पीछा कर उसे मुक्के मारेगा अन्यथा परिक्रमा पूरी कर अ रूमाल उठाकर ब को मुक्के मारेगा। ब बचने हेतु दौड़ेगा तथा एक परिक्रमा कर अपने स्थान बैठेगा।

* जुड़वाँ भाई/ जरासंध वध

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल या खेल

खेल विधि- आगे पीछे दो मंडल बनाकर संख्या की आज्ञा से उन्हें अंक दे दो। सीटी बजने पर दोनों मंडल विपरीत दिशा में दौड़ेंगे। स्तंभ होते ही दोनों दलों के समान अंक वाले खिलाड़ी जोड़ी बनाकर बैठेंगे। जिनकी जोड़ी सबसे देर से बनेगी। वे दोनों बाहर हो जायेंगे।

* कश्मीर लूटो

खिलाड़ियों की संख्या- 15-20

खेल वर्ग- मंडल का खेल

खेल विधि- मंडल में सभी खिलाड़ी खड़े हो जायेंगे। शिक्षक बीच में एक गोल निशान बना देगा। सब खिलाड़ी अपने पैर की ऐड़ी का प्रयोग करेंगे। ऐड़ी के पैर के सहारे उस केन्द्र के खिलाड़ियों को ऐड़ियों का प्रयास करेंगे। शिक्षक के स्तंभ के कहने पर सब खिलाड़ी ज्यों के त्यों खड़े हो जायेंगे। वह केन्द्र पर जिसकी ऐड़ी लगी हुई। वह जीता।

बाल कहानी

हम धर्म नहीं छोड़ेंगे



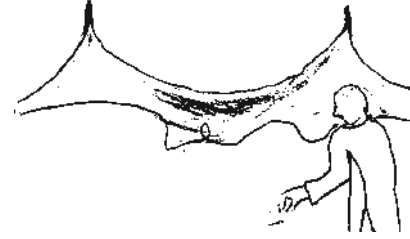
राजस्थान रणथंभौर में घने जंगल हैं यहां पर एक बालाजी का मंदिर भी जंगलों के बीच में हैं पर्यटक प्रायः आते रहते हैं घना जंगल होने से पर्यटकों के बीच जंगली पशु भी विचरण करते रहते हैं। 29 मार्च रविवार के दिन बाबी भार्गव बाइक लेकर अपने साथ तीन पर्यटकों को अपने साथ जंगल में ले गया। गिट्टा रोड़ होने से बाइक 30

किमीमीटर की स्पीड से ज्यादा नहीं चल पा रही थी बाबी भार्गव अपने पर्यटकों को हिंसक पशुओं की कहानी सुना रहा था। घड़ी में बाबी ने देखा तो दो बजने वाले थे बाबी ने गाइड होने के कारण सतर्क रहने को कहा क्योंकि बाबी भार्गव जंगल के पशुओं की गतिविधियां अच्छे से जानता था और उसे लंगूरों की आवाज सुनाई दे रही थी। उसने सबसे कहा भाई सतर्क हो जाओ आस-पास शेर या तेंदुआ अवश्य हैं। बाबी कहने लगा।

भाइयों एक बार सुनलो शेर तेंदुआ दूर से देखने में अच्छा लगता है लेकिन पास में आ जाता है तो अंडरवियर गीला हो जाता है बाबी की यह बात सुनकर सब लोगों ने खूब जोर से ठहाका लगाया। गणेश मंदिर का मोड़ क्रॉस करने के बाद वे यह नहीं देख पाये कि तेंदुआ कहां बैठा हैं जैसे ही बाइक आगे बढ़ी ड्राइवर को तेंदुआ दिखा और तेंदुआ की दूरी दस फिट से ज्यादा नहीं थी ड्राइवर घबरा गया और उसका बैलेंस बिगड़ गया और तेंदुआ बाइक की टंकी से जाकर भिड़ गया बाइक सवार बहुत जोर से चीखें और बाइक तेंदुआ ऊपर गिर गयी अब सबको अपनी मौत सामने दिख रही थी। बाबी भार्गव ने कहा हिम्मत से काम लो घबराओ नहीं अपनी सूझ-बूझ का परिचय देना होगा। देखते ही देखते लचीला फुर्तीला तेंदुआ तेजी से भाग निकला सबके मन में डर था कि तेंदुओं पीछे से बार न करें दे परन्तु गनीमत रही कि सभी सलामत रहे तब बाबी भार्गव ने कहा कि जहाँ हिम्मत होती हैं ईश्वर होता है आज हम किसी पूर्व के पुण्य के कारण से बच पाये हैं तो बस संकल्प ले लें कि हम धर्म कभी नहीं छोड़ेंगे।

संस्कार गीत

तीरथ में कष्ट मिटें



तीरथ का वंदन करने से
पाप सभी कटते हैं
पापों की बुनियाद हिले
अरू मिथ्यामत टलते हैं

1.

सम्मेद शिखर अरू चम्पापुर में
सिद्ध भूमि तीरथ हैं
पावापुर के सरपर में तो
वीर का तीरथ है
गिरनारी का मनहर तीरथ
नेमिप्रभु बसते हैं।

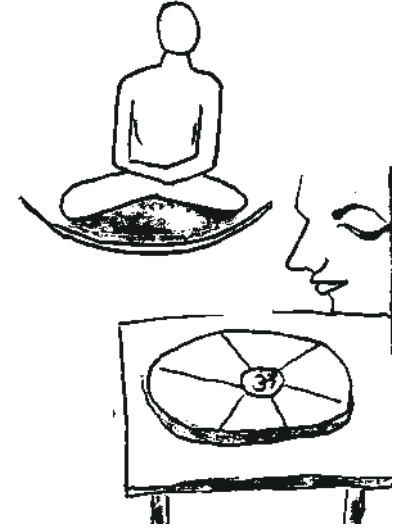
2.

त्याग तपस्या और समाधि
होती है जिस माटी में
श्रमण साधना की गरिमा ही
हो जिसकी परिपाटी में
शैल शिखर अरू उपवन को
तीरथ हम कहते हैं।

3.

हर तीरथ से जुड़ी प्रतिष्ठा
मोक्षमार्ग श्रद्धा है
समता चिंतन चारित्र चेतना
जिनवृष अनुपम धाम हैं
इन तीरथ से कष्ट मिटे सब
कर्म सभी गलते हैं।

बाल कविता

अंतर में
परिवर्तन

आओ बच्चों भक्ति जगायें
सिद्ध चक्र का पाठ रचायें।

सिद्धों की आराधन कर लें
मन के पाप सघन सब हरले

ज्ञान ध्यान की बढ़े साधना
रत्नत्रय की करें थापना

समझे मानव जीवन सार
भवसागर के होवें पार

आठ गुणों का ध्यान बढ़ायें
अंतर में परिवर्तन लायें

समाचार

दीक्षाये सम्पन्न

इंदौर-आचार्य श्री प्रसन्नरूपि महाराज के करकमलों से एलक श्री पूरनचंद जी महाराज को 11 अप्रैल 2022 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर ऋषितीर्थ डकाच्या एम.एस.जे. फार्म हाउस में मुनि दीक्षा दी गई। जिनका नाम मुनि श्री प्रसादचंद्र जी रखा गया।

कुण्डलपुर- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के करकमलों से ज्योत्सना जैन मुंबई को 20 मई 2022 को क्षुल्लिका दीक्षा श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुण्डलपुर जिला दमोह (म.प्र.) में दी गई। जिनका नाम क्षुल्लिका सुकल्याणमति माताजी रखा गया।

समाधिमरण

गलियाकोट (राजस्थान)- आचार्य श्री कनकनंदी महाराज के ससंघ सान्निध्य में आचार्य पुष्पदंत सागर महाराज की शिष्या क्षुल्लिका परागश्री माताजी का समाधिमरण 15 मई 2022 दोप. 2 बजे गलियाकोट राजस्थान में हुआ।

कागदीपुरा धार (म.प्र.)- आचार्य श्री वर्धमान सागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र छोटा महावीर कागदीपुरा में उनके ही शिष्य मुनि श्री महितसागर महाराज का समाधिमरण 17 मई 2022 को रात्रि 8.22 पर हुआ।

सावला (राजस्थान)- आचार्य श्री सुंदरसागर महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री सुदक्षसागर महाराज जी का समाधिमरण 26 मई 2022 को प्रातः 10.55 मिनट पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर सांवला राजस्थान में हुआ।

मध्यप्रदेश सिविल
न्यायमूर्ति के लिये
11 जैन रत्नों को
चयनित होने पर बधाईयाँ

क्र. नाम	रैंक
1. श्री सौरभ जैन	4
2. सुश्री सुरभि जैन सेठी	8
3. सुश्री इतिशा संघवी जैन	19
4. सुश्री पारूल जैन	25
5. श्री अंकित जैन	28
6. सुश्री तृप्ति जैन	35
7. सुश्री ओशी जैन	42
8. सुश्री आयुषी जैन	43
9. श्री उत्कर्ष जैन	55
10. श्रीसुश्री ऐश्वर्या जैन	75
11. सुभांगी जैन	79

आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुये संस्कार सागर परिवार की ओर से हार्दिक बधाईयाँ।

दमोह नगर प्रतिष्ठित शिक्षाविद् एवं समाजसेवी
श्रीमती कमला देवी जैन (सेवानिवृत्त शिक्षिका) का समाधिमरण



दमोह नगर प्रतिष्ठित शिक्षाविद् और समाजसेवी ब्रह्मचारी डॉ. सत्येन्द्र जैन की माँ श्रीमती कमला देवी जैन (सेवानिवृत्त शिक्षिका), दशमप्रतिमाधारी का संल्लेखना पूर्वक समाधि मरण परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की आज्ञा और आशीर्वाद से उनकी शिष्या पूज्य आर्यिका दृढमति माताजी के सान्निध्य में उदासीन आश्रम (ब्राह्मी विद्या आश्रम) धर्म श्री सागर में दिनांक 25 अप्रैल

2022 को रात्रि 7.56 बजे हो गया है। उनका जन्म पटेरा (दमोह) निवासी स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और समाजसेवी स्वर्गीय श्री रूपचंद सेनानी और समाजसेवी स्व. श्री रूपचंद जी सिंघई और स्व. श्रीमति चम्पा बाई जी के आंगन में 10 अक्टूबर 1943 को हुआ। उनका विवाह सागर निवासी श्री बाबूलाल जी जैन के साथ 19 मई 1960 के साथ संपन्न हुआ परंतु अचानक 27 नवंबर 1968 को पति के देवलोक गमन के बाद दमोह में स्थानांतरित होकर यहीं स्थाई निवास बनाया। उन्होंने लगभग 43 वर्ष शिक्षकीय कार्य रानी दुर्गावती माध्यमिक विद्यालय दमोह से सेवानिवृत्त हुई। उन्होंने परमपूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज की प्रेरणा और आशीर्वाद से अपना जीवन धर्म आराधना करने से समर्पित कर दिया और अपने दोनों बच्चों को मोक्षमार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उनकी दोनों संतान उच्च शिक्षित होने के बाद भी पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपनी आत्मा के उत्कर्ष हेतु धर्म मार्ग पर बढ़ रहे हैं। इनकी पुत्री ब्रह्मचारिणी साधना दीदी, जो कि अर्थशास्त्र, संस्कृत से एम.ए. थी और आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के संस्कृत साहित्य में अध्यात्म दृष्टि विषय पर शोध कार्य कर रही थी। उनकी समाधि 20 अप्रैल 2017 को कुंडलपुर में हो चुकी है। तब मां की सेवा के लिये पुत्र डॉ. सत्येन्द्र जैन ने विश्वविद्यालय का शिक्षकीय कार्य छोड़ दिया और पूरी तरह मां के लिये समर्पित होकर उनकी सेवा परिचर्या करते हुये उनकी धर्म साधना बन गये मां की अस्वस्थता बढ़ते देखकर परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद और मार्गदर्शन से सागर में विराजमान आर्यिका दृढमति माताजी के सान्निध्य में 25 अप्रैल 2022 को रात्रि 7.56 बजे संल्लेखना पूर्वक समाधिमरण करके इस नश्वर देह का त्याग करके देवलोक गमन किया। संस्कार सागर परिवार आपको श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

वर्ग पहेली 272

1	2		3	4		5	6	
7				8	9			
10			11				12	
		13				14		
	15				16			
17			18				19	
		20			21			
				22			23	24
25			26				27	

बाये से दाये

1. सुना हुआ विषय, संगीत में सुर का अंग
सरस्वती का एक नाम -2
3. आशीर्वाद उर्दू में, प्रार्थना -2
5. पतित व्यक्ति -3
7. लहर, वेव -3
8. हस्ती, हाथी -4
10. तागा, सूत्र -2
11. बोना नाटा, छोटू -3
13. दो कोश का एक नाम -3
15. श्रेष्ठ, बड़ा -2
16. सप्त -2
17. मूकमाटी के रचयिता -5
19. देव, अमर -2
20. कष्ट, पीड़ा -2
21. तुअर की दाल -3
22. मुकुट -2
23. त्यागने का भाव -2
25. धूल -2
26. रक्तिमा -3
27. वर्ण, रंग -2

ऊपर से नीचे

- | | | |
|-----|--|----|
| 1. | श्रुत को धारण करने वाली श्रुत का प्रवाह | -4 |
| 2. | भारतीय ध्वज का प्रतीक नाम | -3 |
| 4. | आना, आने की क्रिया | -4 |
| 5. | तेज चमकदार धातु जो तरह भी और ठेस भी | -2 |
| 6. | भीड़ उर्दू में | -3 |
| 9. | मनुष्य, मानव | -2 |
| 11. | युद्ध में काम आने वाला पक्षी | -2 |
| 12. | वृक्ष, झाड़ | -1 |
| 13. | आचार्य विद्यासागर जी संघ के
एक निर्यापक श्रमण | -5 |
| 14. | शरीर, देह, काया | -2 |
| 15. | ज्ञान सरस्वती का एक नाम, शिक्षा | -2 |
| 17. | आचार्य विद्यासागर जी का पूर्व नाम | -4 |
| 18. | शोक, दुख | -2 |
| 19. | कल्पवृक्ष | -4 |
| 21. | एक दलहन | -3 |
| 22. | थप्पी, करतल ध्वनि | -2 |
| 24. | सुमनर, जपने का भाव | -2 |

वर्ग पहेली 271 का हल

1 आ	2 चा	रां	3 ग		4 पू	र्व	5 ग	6 त
7 ला	द		8 म	9 द	न		10 य	ज
11 प	र		12 न	म		13 ज		
प		14 सू		15 न	16 य	न		17 ग
द्ध		18 त्र	19 स		म		20 म	ति
ति		21 कु	ती		22 क	23 न	क	
	24 शी	तां	श			25 म	र	26 म
27 प	रा	ग		28 ही	रा		ध्व	जा
द			29 या	न		30 यो	ज	क

सदस्यता क्र.

पता:

मैं फूलों की रानी



नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकात कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समयसार पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं
हाथी स्वरण वथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचंग्री झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बास, एकक चंदोवा, पालसाना, छत्र, चमर, भांगडल, सिंहासन, वननवार, धोती-दुपटा, सभी विधानों के मांडने भादू में एवं फ्लेसमें उपलब्ध है।



विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कतथा, रजत कतथा (ओरिजिनल चाँदी), रत्न कतथा आदि जो ऐकेतिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो कार्ते नहीं पहुँचें एवं तीव्र का सेट होने के बादजुद बिस्वरंगे वहीँ। चातुर्मास कतथा का समय पर आर्डर करके पर बॉक्स के वीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी तिस्वनाया जा सकता हैं। तथा इन्ट्रैर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध हैं। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008



अंग्रेजी माध्यम का भ्रम जाल तोड़ें
हिन्दी माध्यम से समग्र भारत जोड़ें

संपूर्ण राष्ट्र की संपर्क भाषा हिन्दी बनायें
संपूर्ण राष्ट्र की लिपी देवनागरी अपनायें ।

अहिंसा संस्कृति को आगे बढ़ायें
भारत को शक्तिशाली बनायें

*** विनम्र अनुरोध ***
समस्त व्यापारी वर्ग
अपने प्रतिष्ठान का परिचय पट्टिका (बोर्ड)
हिन्दी-देवनागरी लिपी में बदलें ।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008